अभिव्यक्ति

श्रवण नाथ मठ जवाहर लाल नेहरु (पी. जी.) कॉलेज, हरिद्वार
विद्ययाऽमृतमश्नुते

INTERNAL QUALITY ASSURANCE CELL
IQAC
श्रवण नाथ मठ जवाहर लाल नेहरु (पी. जी.) कॉलेज, हरिद्वार
विद्ययाऽमृतमश्नुते

श्रवणनाथ मठ जवाहरलाल नेहरू (पी०जी) कॉलेज, हरिद्वार

संयुक्तांक 2019–2020 एवं 2020–2021

Sanitary pad vending machine for Niranjani Akhara college

आयोजन | हिमालय क्लब का एसएमजेएन कालेज में हुआ कार्यक्रम, गौरैया संरक्षण की अलख जगा रहे अक्षत को किया गया सम्मानित

गौरैया संरक्षण में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण: रविंद्र पुरी

हरिद्वार,संवाददाता। एसएमजेएन पीजी कालेज के बी काम द्वितीय वर्ष के छात्र अक्षत त्रिवेदी ने गौरैया संरक्षण के लिए अलख जगायी है। वह पिछले एक वर्ष से गौरैया के लिए घोंसले बना कर विभिन्न स्थानों पर लगा रहे हैं।

इसी कड़ी में शनिवार को विश्व गौरैया दिवस के पूर्व दिवस पर अखाड़ा परिषद और कालेज प्रबंधन समिति के अध्यक्ष श्रीमहंत रविंद्र पुरी, हिमालय क्लब के अध्यक्ष डॉ सुनील कुमार बत्रा, पर्यावरण विद डॉ विजय शर्मा और विनीत सक्सेना ने अक्षत त्रिवेदी को सम्मानित किया।

शनिवार को हिमालय क्लब की ओर से आयोजित कार्यक्रम में श्री महंत रविंद्र पुरी ने कहा कि गौरैया विलुप्त होने की कगार पर है। शहरीकरण एवं पेड़ों के कटने से घरों के आंगन में फुदकने और चहकने वाली गौरैया अब देखने को नहीं मिल रही है। ऐसी स्थिति में गौरैया-संरक्षण के लिए अक्षत की कोशिश मिसाल कायम करेगी। हिमालय क्लब के अध्यक्ष डॉ सुनील कुमार बत्रा ने कहा कि गौरैया एक पक्षी नहीं यह हमारे साहित्य, कला व संस्कार में रची बसी है। आज इसकी संख्या समाप्त हो रही है। जो समाज और पर्यावरण के लिए घातक है। पर्यावरण विद डॉ विजय शर्मा ने बताया कि गौरैया की विलुप्तता का मुख्य कारण कीट नाशकों का उपयोग, अंधाधुंध शहरीकरण, पक्षियों के प्रति संवेदनहीनता व पेड़ों की कटाई है। अब गौरैया को लेकर जागरूकता में इजाफा हुआ है। शहरों में चिड़िया के लिए घोंसले लगा रहे हैं।

हरिद्वार स्थित एसएमजेएन पीजी कॉलेज में शनिवार को अक्षत त्रिवेदी को सम्मानित करते अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष श्रीमहंत रविंद्र पुरी। • हिन्दुस्तान

एसएमजेएन में किया गया नशा मुक्ति पर कार्यक्रम का आयोजन

छात्राओं के प्रसाधन कक्ष का लोकार्पण

हरिद्वार। एसएमजेएन पीजी कॉलेज परिसर में भेल की ओर से बनाए गए छात्राओं के प्रसाधन कक्ष का लोकार्पण किया गया। इससे पहले मां सरस्वती वंदना व द्वीप प्रज्ज्वलित कर कॉलेज में निर्मित शौर्य दीवार पर वीर सैनिकों को नमन किया गया।

इस मौके पर भेल के कार्यपालक निदेशक संजय गुलाटी ने कहा कि अपनी विभिन्न शैक्षणिक और शिक्षणेत्तर गतिविधियों के कारण महाविद्यालय जनपद की अग्रणी शिक्षण संस्थानों के रूप में निरंतर विकास के मार्ग पर अग्रसर है। इस मौके पर कॉलेज प्रबंध समिति के सचिव श्रीमहंत रविंद्र पुरी ने सामाजिक दायित्व की सराहना करते हुए उन्हें बधाई दी। कार्यक्रम में सत्र 2019-20 में बीए की छात्रा आरती गोस्वामी पुत्री सुरेंद्र गोस्वामी को विश्वविद्यालय में श्रेष्ठ अंक (95.6 प्रतिशत) प्राप्त करने पर पुरस्कृत भी किया गया। इस मौके पर प्राचार्य डा. सुनील कुमार बत्रा, मुख्य अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. संजय कुमार माहेश्वरी, महाप्रबंधक एचआर आरके शर्मा, डीजीएम सीएसआर जीत बहादुर, राकेश माणिक ताला, अजीत अग्रवाल, डॉ. सरस्वती पाठक आदि मौजूद रहे। संवाद

एसएमजेएन कॉलेज में छात्राओं के प्रसाधन कक्ष का लोकार्पण करते भेल के कार्यपालक निदेशक संजय गुलाटी। संवाद

लोग | अमर उजाला | 04

सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते जिलाधिकारी सी रविशंकर। -संवाद

एसएमजेएन पीजी कॉलेज में सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर कमांडेंट ऑफिसर आमोद चौधरी को चेक देते मनसा देवी मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्रीमहंत रविंद्र पुरी महाराज। -संवाद

movingahead

Educaton of the FUTURE

THE LOCKDOWN, IMPOSED TO CONTAIN THE SPREAD OF THE CORONAVIRUS PANDEMIC, BROUGHT ABOUT FAR-REACHING CHANGES IN THE EDUCATIONAL PATTERN, MAKING A PARADIGM SHIFT FROM OFFLINE TO ONLINE EDUCATION. THIS SHIFT HAS USHERED IN QUALITATIVE CHANGES IN THE TEXTURE OF EDUCATION

Since the world is gradually becoming digitalised, online teaching and learning has given an opportunity for us to equip ourselves with the new mode of e-learning and creating adequate infrastructure for the same. It is going to be the education of the future, as it brings out the best in students. It also caters to fulfilment of the objective of the new educational policy. One main feature of virtual teaching is that it develops curiosity in students and enhances their creative skills by promoting an innovative approach through direct interaction between students and their guides.

Online teaching has enhanced excellence in education. With the new mode of education, this year our students showed better results than they did in the offline education mode in the pre-COVID-19 era. We, along with our students have fully adjusted to the new normal of e-classes. We prepared a database of smart phones among our students and provided training to the guides and teachers who were not fully conversant with the new mode of education.

-Danish Khan, managing director of an online learning platform

Initially, we faced some difficulties, as some students did not have access to digital platforms. Our managing committee provided smart phones to poor students and now we are fully geared up to the new medium of instruction. We provided links to the students so that they can get learning material from digital platforms and through audios and videos sent by the guides. Students interact with teachers, ask questions and get online answers to their queries.

वीरों के पराक्रम के सम्मान में करें दान

बहादुर सिपाहियों के सम्मान में मनाया गया सशस्त्र सेना झंडा दिवस

माई सिटी रिपोर्टर

हरिद्वार। देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले भारतीय सेना के बहादुर सिपाहियों के सम्मान में सोमवार को सशस्त्र सेना झंडा दिवस मनाया गया। जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी कमांडर एके चौधरी ने जिलाधिकारी सी रविशंकर को प्रतीक झंडी लगाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

जिलाधिकारी ने कहा कि उत्तराखंड वीरों की भूमि है, जिसे चार धाम के अतिरिक्त सैनिक धाम भी कहा जाता है। उन्होंने कहा कि लोगों को सशस्त्र सेना झंडा दिवस कोष में दान देकर भारतीय सेनाओं के वीर सिपाहियों के शौर्य एवं पराक्रम का सम्मान करना चाहिए। जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी कमांडर एके चौधरी ने कहा कि सशस्त्र सेना झंडा दिवस कोष में एकत्र धनराशि का प्रयोग शहीद सैनिकों के आश्रितों, युद्ध में विकलांग हुए सैनिकों और पूर्व सैनिकों के कल्याण के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के लिए किया जाता है। उन्होंने कहा कि जो लोग सशस्त्र सेना झंडा दिवस कोष के लिए दान एकत्र करना चाहते हैं वह जिला सैनिक कल्याण कार्यालय से रसीद बुक प्राप्त कर अपने क्षेत्र से दान राशि एकत्र कर जमा करा सकते हैं। एनईएफटी एवं आरटीजीएस एवं चेक के माध्यम से दान राशि सशस्त्र सेना झंडा दिवस फंड एकाउंट (संख्या 1333000100025392, आईएफएससी कोड पीयूएनबी 0106400 पंजाब नेशनल बैंक आर्य वानप्रस्थ आश्रम ब्रांच ज्वालापुर में भी दान कर सकते हैं। सेना झंडा दिवस कोष में दानकर्ता आयकर से छूट प्राप्त कर सकते हैं।

भारत के वीर सैनिकों पर हमें गर्व : रविंद्र पुरी

हरिद्वार। एसएमजेएन पीजी कॉलेज में सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मनसा देवी मंदिर ट्रस्ट और सचिव कालेज प्रबंधन समिति श्रीमहंत रविंद्र पुरी महाराज ने कहा कि अदम्य साहस, पराक्रम एवं देश की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने वाले वीर सैनिकों पर हमें गर्व है। उन्होंने सैनिक कल्याण कोष के लिए 51 हजार की धनराशि प्रदान की। एसएमजेएन पीजी कॉलेज में सोमवार को सशस्त्र सेना झंडा दिवस मनाया गया। मुख्य अतिथि कमांडेंट ऑफिसर आमोद चौधरी ने कहा कि यह दिन हमें सैन्य शहीदों और भारतीय सेनाओं में कार्यरत सैन्यकर्मियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का अवसर प्रदान करता है।

श्रीमहंत रविंद्र पुरी ने सैनिक कल्याण कोष को दिए 51 हजार रुपये

कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा ने बताया कि सशस्त्र सेना झंडा दिवस भारतीय सशस्त्र बलों के कर्मियों के कल्याण के लिए भारत की जनता से धन-संग्रह के प्रति समर्पित एक दिन है। कार्यक्रम में मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ. सरस्वती पाठक, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ. संजय माहेश्वरी, सुषमा नयाल, डॉ. नलिनी जैन, विनय थपलियाल, डॉ. मनमोहन गुप्ता, दिव्यांश शर्मा, अंकित अग्रवाल, वैभव बत्रा आदि उपस्थित रहे। संवाद

हिंदू शौर्य दिवस पर अंबर तालाब स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर में हनुमान चालीसा का पाठ करते विहिप के पदाधिकारी और कार्यकर्ता। -संवाद

विहिप ने किया हनुमान चालीसा का पाठ

रुड़की। शौर्य दिवस पर सोमवार को अंबर तालाब स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर में बजरंग दल ने हनुमान चालीसा का पाठ किया गया। जिला मंत्री शिव प्रसाद त्यागी ने कहा कि अयोध्या में भव्य राममंदिर का निर्माण हो सके, इसके लिए हिंदू समाज ने 500 वर्षों तक संघर्ष किया है। लाखों की संख्या में हिंदुओं ने अपने प्राणों की आहुति इस आंदोलन में दी, तब जाकर अयोध्या में मंदिर का निर्माण शुरू हुआ है। इस मौके पर जिलाध्यक्ष संदीप खटाना, सह जिला संयोजक विवेक त्यागी, नितिन शर्मा, सह जिला संयोजक सुनील कश्यप, विकास सैनी, कुशाग्र गर्ग, नवीन सैनी आदि मौजूद रहे। संवाद

रक्तदान करने के लिए उमड़े महादानी

एसएमजेन कॉलेज में लगे शिविर में 143 लोगों ने किया रक्तदान

संवाद न्यूज एजेंसी

हरिद्वार। एसएमजेएन पीजी कॉलेज में युवा चेतना पखवाड़े के तहत रक्तदान शिविर में महादानियों की भीड़ उमड़ पड़ी। शिविर में 143 लोगों ने रक्तदान किया। शिविर की शुरूआत कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक और कॉलेज प्रबंधन समिति के अध्यक्ष श्रीमहंत लखन लाल गिरि ने की। कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक ने कहा कि रक्तदान महादान है। रक्तदान करने से मनुष्य के शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है। उन्होंने कहा कि जो लोग रक्तदान के प्रति भ्रांतियां फैलाते हैं, उनसे सचेत रहें।

एसएमजेएन पीजी कॉलेज में मंगलवार को एम्स ऋषिकेश और मां गंगे ब्लड सेंटर के सहयोग से रक्तदान शिविर लगाया गया। रक्तदान शिविर के प्रदेश नोडल अधिकारी डॉ. एसएस उनियाल ने बताया कि उन्होंने स्वयं लगभग 112 बार रक्तदान किया है। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा ने कहा कि हम रक्तदान करके दूसरों की जान बचाते हैं। एम्स ऋषिकेश की चिकित्सा अधिकारी डॉ. कौर ने सभी रक्त दाताओं को जानकारी देते हुए बताया कि रक्तदान से हार्ट अटैक की आशंका कम हो जाती है। इससे वजन कम करने में भी सहायता मिलती है। स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में शिविर प्रभारी, डॉ. सुषमा नयाल, डॉ. मन मोहन गुप्ता, डॉ. जेसी आर्य, राजकुमार, डॉ. सरोज शर्मा, डॉ. आशा शर्मा, डॉ. पूर्णिमा सुंदरियाल, डॉ. शिव कुमार चौहान, डॉ. मनोज कुमार सोही, विवेक मित्तल आदि मौजूद रहे।

शिविर में रक्तदाताओं के साथ में रक्तदान करने के लिए जागरूक करते शिक्षक। संवाद

टिहरी डोब नगर में आयोजित शिविर में आंखों की जांच करते डॉक्टर। संवाद

शिविर में 333 लोगों के आंखों की हुई जांच

पडगी। टिहरी डोब नगर पंचायत घर में शिविर में 333 लोगों के आंखों की जांच की गई। ओएनजीसी एवं अनुग्रह दृष्टी दान स्वयं सेवी संस्था दिल्ली और आई अस्पताल निर्मल आश्रम ऋषिकेश के सहयोग से शिविर लगाया गया था। शिविर का उद्घाटन ग्राम प्रधान प्रतिनिधि बलवंत सिंह पंवार ने किया। शिविर में 333 आंखों के मरीजों ने अपनी आंखों की जांच कराई। जांच में 42 मरीजों के आंख में मोतियाबिंद पाया गया। शिविर में डॉ. राजेश कुमार, डॉ. उमेश कुमार, डॉ. कविता ने लोगों के आंखों की जांच की है। बालम सिंह नेगी, रवि गुसाईं, धीरज बिष्ट, दीपक रावत, उत्तम रावत, रतन सिंह नेगी आदि ने सहयोग किया। संवाद

देहरादून/हरिद्वार, 7 अप्रैल, 2021 दैनिक जागरण 5

स्वतंत्रता सेनानियों के गुणों को आत्मसात करें युवा

एसएमजेएन कॉलेज में आजादी का अमृत महोत्सव का समापन

जागरण संवाददाता, हरिद्वार : एसएमजेएन पीजी कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में संतों ने छात्र-छात्राओं और युवाओं से स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के गुणों को आत्मसात करने का आह्वान किया। इस अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के स्वजनों का अभिनंदन भी किया गया।

कॉलेज में चल रहे आजादी की 75वीं वर्षगांठ को समर्पित आजादी का अमृत महोत्सव का मंगलवार को समापन हो गया। कॉलेज स्थित शौर्य दीवार पर देश के वीर शहीदों को नमन करते हुए प्रतीकात्मक रूप में नमक उठाकर नमक तोड़ो आंदोलन को जीवंत किया। कॉलेज के छात्र गौरव बंसल ने महात्मा गांधी का रूप धारण किया। इस अवसर पर कॉलेज प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्रीमहंत लखन गिरि व प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. डोलीराम, स्व. मास्टर करतार सिंह, स्व. वैध दिनेश चंद्र, स्व. गोपाल बिष्ट के पुत्र क्रमशः बालकृष्ण, मुकेश त्यागी, राजेश शर्मा व सतेंद्र सिंह बिष्ट को अंगवस्त्र और पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया।

प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा ने कहा कि हमने देश का नमक खाया है। नमक श्रमिकों के पसीने, ईमानदारी व समानता का द्योतक है। नमक को भारत की आत्मनिर्भरता का एक प्रतीक माना जाता था। अंग्रेजों ने ... महात्मा गांधी ने देश के इस दर्द को महसूस किया और नमक सत्याग्रह के रूप में नागरिकों की नब्ज को समझा।

कार्यक्रम का सफल संचालन राजनीतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष विनय थपलियाल ने किया। इस मौके पर डॉ. मनमोहन गुप्ता, डॉ. सरस्वती पाठक, डॉ. तेजवीर सिंह तोमर, डॉ. नलिनी जैन, डॉ. जगदीश आर्य, डॉ. सुषमा नयाल, डॉ. ... कुमार सोही, डॉ. शिवकुमार ... रिंकल गोयल, डॉ. रिचा मिनोचा ... विजय शर्मा, डॉ. पद्मावती ... डॉ. पूर्णिमा सुंदरियाल, डॉ. ... दिव्यांश शर्मा आदि उपस्थित ...

दांडी मार्च निकालती राजकीय कन्या महाविद्यालय दल्लावाला की छात्राएं • जागरण

दांडी मार्च से सेनानियों के त्याग व बलिदान की दी जानकारी

संवाद सूत्र, लक्सर : मंगलवार को राजकीय कन्या महाविद्यालय दल्लावाला, खानपुर में चल रहे आजादी के अमृत महोत्सव के समापन पर छात्राओं ने दल्लावाला से नाईवाला तक दांडी मार्च निकाला। इस मौके पर कॉलेज के प्राचार्य डॉ. कुलदीप सिंह नेगी ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। समापन समारोह में महोत्सव के दौरान आयोजित की गई निबंध, पोस्टर, रंगोली, भाषण प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. धनंजय शर्मा, डॉ. निवेदिता प्रियदर्शनी, डॉ. संतोष कुमार, डॉ. नीतू सिंह ने भी छात्राओं को संबोधित किया। डॉ. कुसुमलता, राजीव सिंह, दीपक सिंह, मूलू सिंह, भोलू कुमार, मनमोहन सिंह आदि मौजूद रहे।

एसएमजेएन पीजी कॉलेज में एंटी ड्रग्स क्लब गठित

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

अभिव्यक्ति

संयुक्तांक

सत्र 2019 - 2021

प्रकाशक : प्राचार्य

श्रवणनाथ मठ जवाहरलाल नेहरू (पी०जी०) कॉलेज, हरिद्वार

अभिव्यक्ति
संयुक्तांक

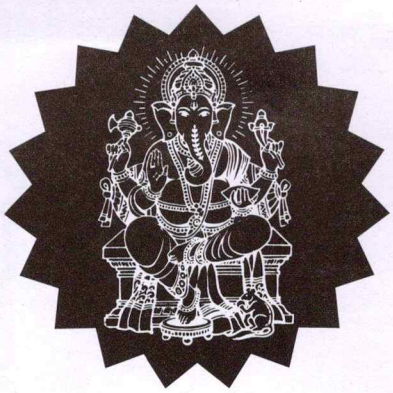

प्रकाशक
डॉ. सुनील कुमार बत्रा
प्राचार्य

प्रधान संपादक
डॉ. नलिनी जैन
संपादन, सांस्कृतिक अनुभाग क्रियाकलाप
डॉ. सरस्वती पाठक
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
संपादन, अंग्रेजी अनुभाग
डॉ. सरोज शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
छात्र–संपादन सहयोग
निक्की शर्मा, किरण रावत, मीनाक्षी, नेहा नेगी,
नीति, अविनाश सिंह, शिवानी,
रोहित कुमार, पूनम, अमित, दीक्षा, गौरव बंसल

सामग्री–संकलन सहयोग
डॉ. मनमोहन गुप्ता, डॉ. तेजवीर सिंह तोमर,
डॉ. सरस्वती पाठक, डॉ. एस.के. माहेश्वरी,
डॉ. जे.सी. आर्य, विनय थपलियाल,
डॉ. सुषमा नयाल, डॉ. आशा शर्मा, वैभव बत्रा एवं
डॉ. विजय शर्मा

छायाकंन सहयोग
संजीत कुमार, मोनू राम

मुद्रक
भार्गव प्रिन्टर्स
रेलवे रोड, हरिद्वार

सरस्वती–वन्दना

हमको ऐसा वर दो हे माँ वीणा वादिनी,
हम रहें करम में निरत, शक्ति में मस्त;
कार्य सिद्धहस्त, गाएँ जीवन की रागिनी,
हमको ऐसा वर दो हे माँ वीणा वादिनी।

तू सरला, सुफला हे माँ, मधुर मधु तेरी वाणी,
विद्या का धन हमको भी दो, हे माँ विद्या दायिनी
हमको ऐसा वर दो हे माँ वीणा वादिनी।

हे शारदे, हँसासीन, वागीश वीणा वादिनी,
तुम ज्ञान की भंडार हो, हे विश्व की सँचालिनी
हमको ऐसा वर दो हे माँ वीणा वादिनी।

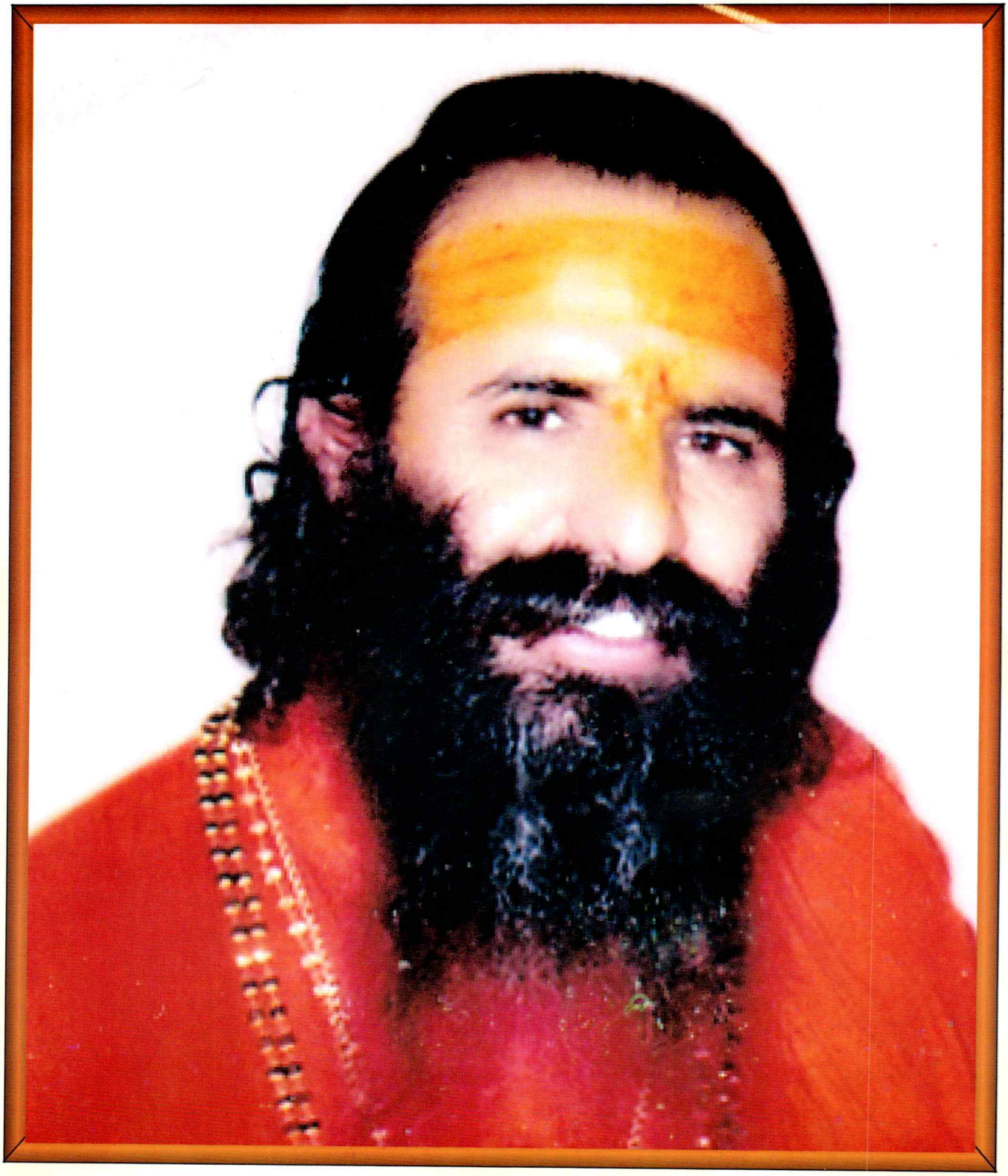

श्रीमहन्त रविन्द्र पुरी जी

अध्यक्ष, कॉलेज प्रबन्ध समिति
अध्यक्ष, श्री मनसा देवी मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार
अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद्

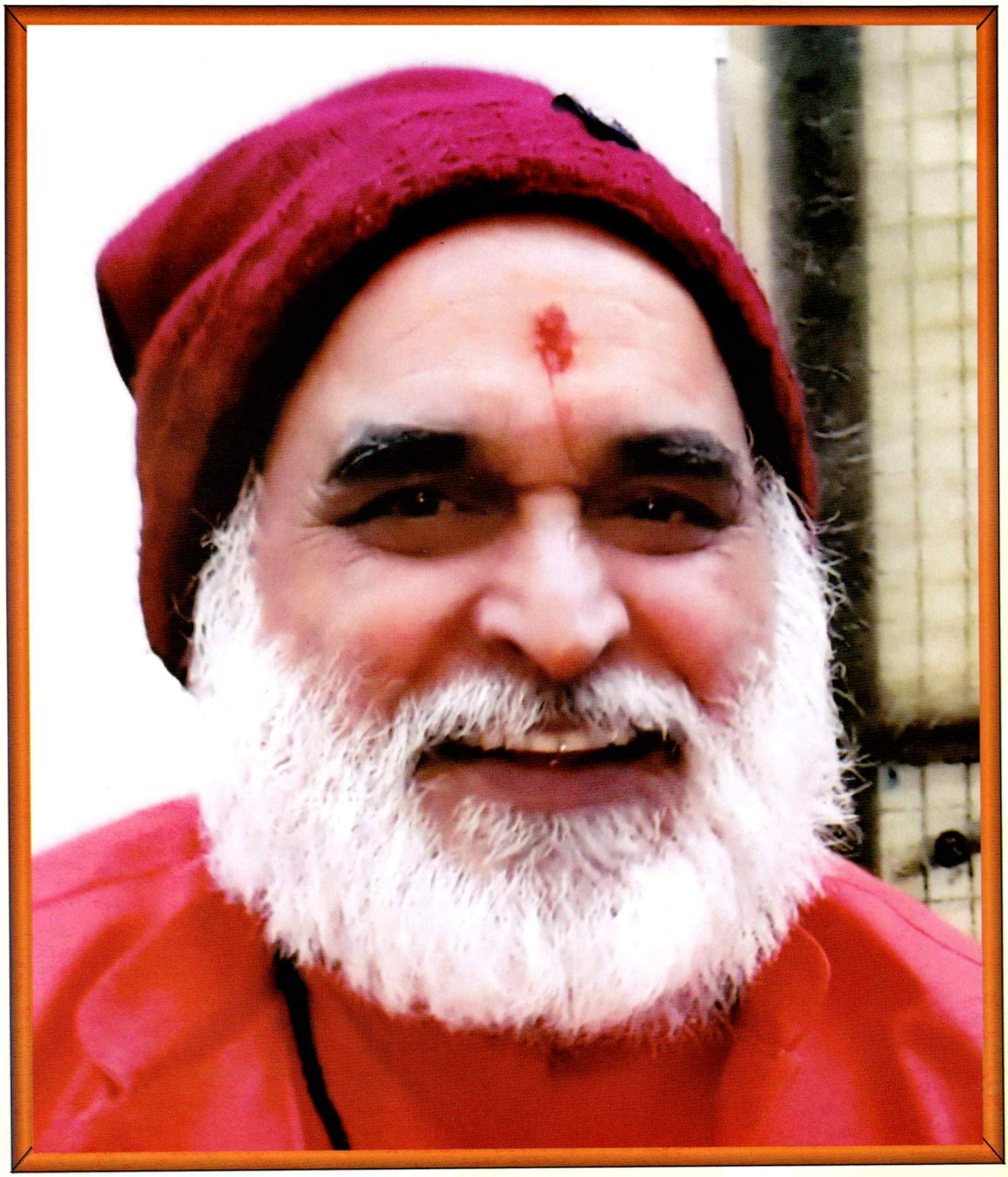

श्री महंत रामरतन गिरी जी

सचिव, कॉलेज प्रबन्ध समिति
सचिव, पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी

डॉ० सुनील कुमार बत्रा

प्राचार्य

श्रद्धासुमन

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

इस कोविड काल में एस.एम.जे.एन. (पी.जी.) कॉलेज परिवार को भी अपूर्णनीय क्षति हुई, जिसकी रिक्तता हमेशा-हमेशा रहेगी। हमारी कॉलेज प्रबन्ध समिति के समुन्नायक अध्यक्ष श्री महन्त लखन गिरि जी का इस कोविड काल में असामायिक स्वर्गवास हो गया, वहीं कॉलेज प्रबन्ध समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री महन्त नरेन्द्र पुरी भी इस नश्वर संसार से विदा लेकर बैकुण्ठ धाम को सिधार गये। कॉलेज प्रबन्ध समिति के वरिष्ठ सदस्य श्रीमहन्त डोंगर गिरि जी महाराज भी इस नश्वर शरीर को त्याग कर गौलोक धाम सिधार गये। प्रबन्ध समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री महन्त मनीष भारती भी इस कोविड काल में असमय हमारा साथ छोड़कर बैकुण्ठधाम को चले गये। कॉलेज परिवार के लिये ये अपूर्णनीय एवं अकल्पनीय क्षति है। कॉलेज परिवार परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवंगत पवित्र आत्माओं को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें। कॉलेज परिवार नम आँखों से आप सभी को भावपूर्ण श्रद्धाजंलि अर्पित करता है।

Toppers - Our Pride 2020 - 2021

Alka
B.Com.

Anshita Sharma
M.Com

Aarti Goswami
B.A. University
Gold Medalist

Yukti Dhiman
B.Sc. (PCM)

Shivangi Chaubey
B.Sc. (CBZ)

Anjali Sharma
B.Sc. (C.S.)

Neha Kumari
MA (Sociology)

Amita Pandey
MA (Pol. Science)

Poonam Rani
M.A. (Eco)

Himani Rani
M.A. (English)

Placement

Ms. Tanuja
CRP-RRB Officer Scale-I

Devansh Tandon
P.O. (Indian Bank)

Ms. Jyogi
CRP-RRB Officer Scale-I

Mayank Kumar Sindhiya
(Uttarakhand Gramin Bank Officer Scale-1)

Nitish Kumar
(Ph.D. in Maths)

Himanshi Kohli
(Trainee Officer SBI)

चित्रों के झरोखे से

भारत की आजादी का
अमृत
महोत्सव

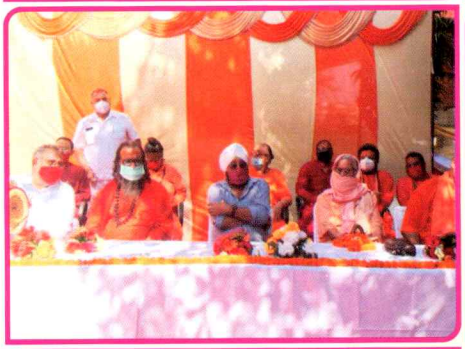

शौर्य दीवार
एस.एस.जे.एस.पी.जी. कॉलेज, हरिद्वार

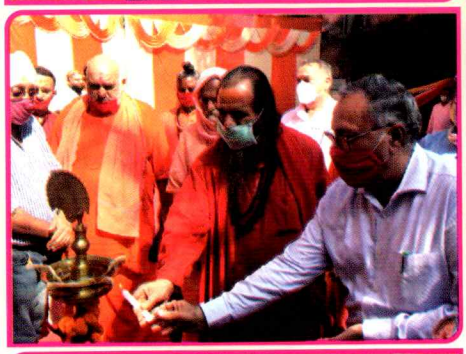

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

(पी. जी.) कॉलेज
हरिद्वार

चित्रों के झरोखे से

PAY श्री राम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र
RUPEES इक्कीस लाख रुपये मात्र
अदा करें ₹ 21.000000/-

परमवीर चक्र

हरिद्वार

परमवीर चक्र

चित्रों के झरोखे से

परमवीर चक्र

परमवीर चक्र

शौर्य दीवार
एस.एम.जे.एन.पी.जी. कॉलेज, हरिद्वार
परमवीर चक्र

परमवीर चक्र

राष्ट्रीय सेवा योजना
छाता ईकाई
Haridwar

परमवीर चक्र

रक्तदान शिविर

राष्ट्रीय सेवा योजना
छाता ईकाई
National Service Scheme

एस. एस. जे. एन. (पी. जी.) कालेज
हरिद्वार

इस अंक में

हिन्दी विभाग

सचिव सन्देश 4
प्राचार्य की कलम से 5
सन्देश मुख्य सम्पादक 6
हिन्दी साहित्य में स्त्री चिन्तन ✤ डॉ. आशा शर्मा 7
पिता ✤ आशना 8
सच्ची दोस्ती ✤ सपना 9
जीत हासिल करनी है ✤ अपूर्वा शर्मा 9
बचपन ✤ महिमा 9
दहेज के विरुद्ध लड़की का जवाब ✤ सपना 9
5G तकनीक, फायदे और चुनौतियाँ ✤ विनीत सक्सेना 10
रैगिंग : एक भयावह मजाक ✤ ईशा केसरी 11
नारी ✤ अक्षत निखिल त्रिवेदी 11
बचपन ✤ राधिका मोहन 12
आराधना ✤ प्राची ठाकुर 12
बुढ़ापे का दर्द ✤ नियती विज 12
कुंभ महापर्व ✤ करन बहुगुणा 13
पर्यावरण संरक्षणम् ✤ स्कन्द पालीवाल 13
कुम्भ नगरी, आस्था की डुबकी ✤ जूली तिवारी 14
मुसाफिर ✤ श्रेष्ठ शर्मा 14
अपनी राह तो मैं खुद बना लूँ ✤ पूजा पाण्डेय 14
एक पैगाम क्रांतिकारियों के नाम ✤ तुलसी सावंत 15
एक दीदार ✤ तुलसी सावंत 15
कितने खुश है हम? ✤ डॉ. सुगन्धा वर्मा 16
हिन्दी दिवस ✤ कृष्णा सिंह 18
आज का महत्व ✤ साक्षी 18
प्राचीन भारत की क्रीड़ाएँ ✤ स्कन्द पालीवाल 19
मेरे सपनों का भारत : स्वच्छ भारत ✤ डॉ. पदमा तनेजा 20
प्रकृति ✤ 20
हिन्दी साहित्यकारों की नजर में हिंदी ✤ सूर्यकांत त्रिपाठी 21
उम्मीदों से भरी कुछ बातें ✤ प्रियंका बहल 21
आज तिरंगा ऊँचा लहरा रहा है ✤ कीर्ति शर्मा 21
सपनों का भारत ✤ आशी कश्यप 22
मैं गंगा हूँ ✤ रिया शर्मा 22
माँ ✤ मोनिका 22
अगर कुछ बनने की आशा है ✤ किरण 22
प्रेरक प्रसंग ✤ 23
जिंदगी ✤ अंजलि सिंह 23
मैं लाख कह दूँ ✤ अंकित अग्रवाल 23
वक्त पर वक्त नहीं ✤ कीर्ति शर्मा 24
जिन्दगी में सपने ✤ शालिनी सिंह 24
सात बाते ✤ किरण 24
भारतीय मीडिया भारतीय..✤ जीवन जोशी 25
कोरोना काल में पढ़ाई ✤ सृष्टि कुशवाहा 25
कुम्भ मेला ✤ उत्कर्ष 26
जन–जन की भाषा है हिंदी ✤ अर्चना 26
वक्त ✤ कार्तिक शर्मा 27
कोशिश कर ✤ आरती रावत 27
सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा ✤ सुरभि मिश्रा 27
अपनी मातृभाषा ✤ राधिका गर्ग 27
बेटी ✤ सुरुचि मिश्रा 28
सतय की आवाज ✤ साक्षी चौहान 28
मेरी माँ ✤ आँचल 28
ऐसा क्यों हमें बताइए ✤ किरण 28
शिक्षकों को समर्पित ✤ स्वाति गिरी 29
बचपन ✤ रचना 29
सफलता ✤ रिंकल गोयल 29
अभिव्यक्ति ✤ रुपाली 30
तुम चलो तो सही ✤ युक्ता अरोडा 30
कुम्भ मेला और पर्यावरण ✤ डॉ. लता शर्मा 31
नारी सशक्तिकरण के चार स्तंभ ✤ डॉ. लता शर्मा 32
गाँधी विचारधारा का हिन्दी काव्य पर प्रभाव ✤ डॉ. रेनु सिंह 33
साहित्य और समाज ✤ डॉ. मोना शर्मा 33
नारी शुरुआत से अंत तक ✤ गौरव वर्मा 35
राह न अपनी छोड़ो तुम ✤ कोमल 35
प्रकृति का प्रदर्शन ✤ मोहिनी राठौर 36
शिक्षा है एक शक्ति ✤ नितिन 36
महिला घरेलू कामगारों पर कोविड–19.. ✤ रंजना के. लाल 37
कॉलेज वार्षिक रिपोर्ट 2019–2021 43

ENGLISH SECTION

Lichens : The Bio-Indicators of Himalayan Ecosystem ✤ Dr. Pyagya Joshi 51
The Easier Way May Actually.. ✤ Prakhar Dixit 52
Dr. Naresh Kumar Garg ✤ Dr. Amita Srivastava 53
Discipline ✤ Pooja Rajpoot 53
Indian is a developed Country ✤ Mansi Arora 54
Life of soldier ✤ Prachi Thakur 54
Save Girl Child ✤ Pooja Rajp00t 54
History of Kumbh Mela ✤ Juli Tiwari 55
Life V/s Exam ✤ Kashisk Dhiman 55
To Chal? ✤ Prajjwal Sharma 56
Mother Nature : In Danger✤ Ganesh Gaur 56
Don't Quit ✤ Ritpriya Chauhan 57
Why Not Girl? ✤ Kashis Dhiman 57
Cyber Crime ✤ Isha Keshri 58
Greatness of Mother✤ Kartik Sharma 58
Poem on Teacher ✤ Pooja Rajpoot 58
College Life ✤ Yukta Arora 59
Value Yourself ✤ Antim Tyagi 59
Mother ✤ Kiran 59
Remember Woman ✤ Aarti Rawat 60
War ✤ Kirti Sharma 60
Are the Old a Burden on... ✤ Kartik Sharma 61
Dowry System ✤ Khushi 61
Utilization of Temple..✤ Pankaj Yadav 62
I am Sweet and Cute ✤ Shruti Dubey 62
Cashless Payments ✤ Shikha 63
Inner Beauty and Outer..✤ Prachi Rajput 64
Nature and Human Life ✤ Mahima Rana 65
Face your fear with Courage ✤ shivani Kashyap 65
time management ✤ Ashtha 66
Motivational Thought ✤ Simran Sharma 66
Change your mind ✤ Ritpriya Chauhan 67
Kumbh Mela ✤ Karishma Sharma 67
God for strength ✤ Garima 67
Char Dham Yatra ✤ Shakshi Uniyal 68
Mathematics--✤ Dr. Padmavati Taneja 70
Digital Jewellry ✤ Neha Gupta 71
Chemistry Department ✤ Dr. Purnima Sundriyal 71
Purpose of out life? ✤ Harshita Pokhariyal 72
Believe In YOurself ✤ Antim Tyagi 73
Be a Nursed ✤ Anshika gotra 73
Role of customer relationship... ✤ Neetika Agarwal 74

सन्देश

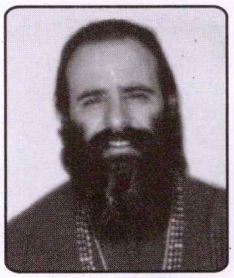

एस.एम.जे.एन.(पी.जी.)कॉलेज, हरिद्वार की वार्षिक पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का यह संयुक्तांक (सत्र 2019-21) महाविद्यालय परिवार के सदस्यों एवं सुधी पाठकों को सौंपते हुए मुझे प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष के रूप में अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह एक सह-शिक्षण संस्थान होने के कारण स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। वास्तव में यह महाविद्यालय पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी तथा श्री श्रवणनाथ मठ के सन्तों की साधना का प्रसाद है।

महाविद्यालय के लिए विगत दो शैक्षणिक सत्र बहुत ही महत्वपूर्ण वर्ष रहे। इस अवधि में महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने शैक्षणिक तथा शिक्षणेत्तर गतिविधियों में अनेक कीर्तिमान स्थापित किये। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा के कुशल नेतृत्व में तथा प्रबन्ध-तंत्र के संरक्षण में महाविद्यालय में उत्तम शैक्षणिक वातावरण की स्थापना की गयी और तथा छात्र-छात्राओं हेतु नवीन भवन में क्लासेज को भी प्रारम्भ किया गया। नवनिर्मित भवन एच ब्लाक का लोकार्पण उत्तराखण्ड राज्य के तत्कालीन यशस्वी मुख्यमंत्री श्री तीरथ सिंह रावत जी के द्वारा किया गया।

वैश्विक महामारी कोविड-19 के तहत इन सत्रों में ऑफलाइन कक्षाओं को स्थगित करके ऑनलाईन कक्षाओं को चलाना पड़ा। महामारी के मध्य में ही विश्व विख्यात कुम्भ मेले का आयोजन भी सीमितता के साथ किया गया। इन सभी परिस्थितियों के बावजूद कॉलेज प्रशासन ने सभी शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों का निर्वाह पूर्ण निष्ठा के साथ बखूबी किया है। इसके लिए जहाँ छात्र-छात्रायें, अभिभावकगण, प्राचार्य, समस्त प्राध्यापक मण्डल एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी बधाई के पात्र है, जिन्होंने इस महामारी काल में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

आज शिक्षा ही नहीं अपितु खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों सहित अनेक क्षेत्रों में हमारे विद्यार्थी नित नई ऊँचाईयों की ओर बढ़ रहे हैं। मैं उन सभी के उज्जवल भविष्य के प्रति आश्वस्त हूँ और सभी को प्रबन्ध-तंत्र की ओर से आशीर्वाद प्रदान करते हुए पत्रिका के सम्पादक मण्डल को साधुवाद देता हूँ।

मैं छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

श्री महन्त रविन्द्र पुरी
अध्यक्ष
कॉलेज प्रबन्ध समिति,
अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद
व माँ मंशा देवी मन्दिर ट्रस्ट

प्राचार्य की कलम से.....

सम्पादक मण्डल के अथक परिश्रम के बाद महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का यह संयुक्तांक (सत्र 2019-21) आपके हाथों में है।

पतित पावनी माँ गंगा एवं निरंजनी अखाड़ा श्री पंचायती के पूज्य संतों एवं श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज, अध्यक्ष-अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद, माँ मंशा देवी मन्दिर ट्रस्ट व कॉलेज प्रबन्ध समिति, श्री महन्त राम रतन गिरी महाराज, सचिव, कॉलेज प्रबन्ध समिति एवं सचिव, पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी के संरक्षण आशीर्वाद से जनपद के सबसे अग्रणी महाविद्यालय के रुप में एस.एम.जे.एन.(पी.जी.) कॉलेज, हरिद्वार विद्यार्थियों की संख्या की दृष्टि से तथा अन्य गुणात्मक दृष्टिकोण से सतत विकासोन्मुख है। वर्ष 1961 से स्थापित हमारा महाविद्यालय जनपद हरिद्वार की मुख्य धारा की उच्च शिक्षा का दशकों से केन्द्र रहा है।

महामारी बाधित इन सत्रों में कॉलेज ने अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की जिनमें कॉलेज के छात्र-छात्राओं में अनुशासन, नये विज्ञान भवन एच-ब्लॉक का उत्तराखण्ड राज्य के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री तीरथ सिंह रावत द्वारा लोकार्पण, कॉलेज के खेलकूद मैदान का भराव एवं समतलीकरण, पुरातन छात्र-छात्राओं के सहयोग से शीतल पेयजल की सुविधा, आधुनिक सुविधाओं से युक्त एक छात्र प्रसाधन कक्ष का निर्माण भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड के सी.एस.आर. निधि के सहयोग से निर्मित करवाकर उसमें दो सैनेट्री वैडिंग मशीनों से भी आच्छादित किया गया है। इसके अतिरिक्त कॉलेज के खेलकूद मैदान में बरसाती व सीवर के पानी से मुक्ति दिलाना एवं कॉलेज की बाउण्ड्री वाल का कार्य प्राथमिकता के आधार पर सम्पन्न कराया जा रहा है।

वैश्विक महामारी कोविड-19 के कारण यह सत्र पूर्णतया प्रभावित रहे। ऑफलाईन कक्षाओं के स्थान पर ऑनलाईन कक्षाओं को सम्पादित किया गया। जहाँ इस वैश्विक महामारी ने समस्त मानवजाति को अपने-अपने घरों में सीमित कर दिया था, वहीं देश की अर्थव्यवस्था पर प्रहार करने के साथ-साथ काम करने की व्यवस्था में भी आमूलचूल परिवर्तन किया। कोरोना महामारी काल में कॉलेज परिवार को भी असहनीय क्षति का सामना करना पड़ा। कॉलेज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री महन्त लखन गिरि जी महाराज इस काल में बैकुण्ठवासी हुए, वहीं इस अवधि में प्रबन्ध समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री महन्त मनीष भारती एवं श्री महन्त नरेन्द्र पुरी, वरिष्ठ सदस्य प्रबन्ध समिति भी बैकुण्ठवास को प्राप्त हुए। यह कॉलेज परिवार की असहनीय क्षति है।

इस सत्र में कॉलेज की सम्बद्धता उत्तराखण्ड राज्य के श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाहीथॉल, टिहरी गढ़वाल से हो गयी है। हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर के बी.ए. षष्टम् सेमेस्टर के परीक्षाफल में कॉलेज की छात्रा कु. आरती गोस्वामी पुत्री श्री सुरेन्द्र गोस्वामी ने विश्वविद्यालय में श्रेष्ठ अंक (95.6 प्रतिशत) प्राप्त कर कॉलेज व जनपद हरिद्वार का नाम गौरवान्वित किया। कॉलेज की छात्रा कु. साक्षी शर्मा की जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी के पद पर नियुक्ति हुई तथा कॉलेज की बी. ए. पंचम सेमेस्टर की छात्रा कु. शुभी कुर्ल पुत्री श्री भानू प्रताप कुर्ल को राष्ट्रीय कैडेट कोर को विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित होकर उत्कृष्ट कार्य हेतु 31. यू.के. बी.एन. एन.सी.सी. हरिद्वार के कमान अधिकारी कर्नल श्री यू.एस. त्रिवेदी द्वारा सम्मानित किया गया।

इस सत्र में निश्चित ही कॉलेज परिवार महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करने में सफल रहा है। कॉलेज परिवार के सभी शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी भी बधाई के पात्र हैं जिनके सहयोग से कॉलेज ने यह उपलब्धियाँ हासिल की हैं। मैं आशा करता हूँ कि आगे आने वाले दिनों में कॉलेज निरन्तर नई ऊँचाईयों की ओर अग्रसर होगा। प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी रुचि के विषयों में वांछित व उच्चस्तरीय शिक्षा मिले, यही कॉलेज का संकल्प है।

डॉ. सुनील कुमार बत्रा
प्राचार्य

सम्पादकीय....

महाविद्यालय की पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का यह संयुक्त अंक आपके हाथों में है, मुझे पूर्ण विश्वास है कि सुधी पाठक कॉलेज की सक्षम, सबल एवं सृजनशील युवा पीढ़ी द्वारा रचित विभिन्न आलेखों और रचनाओं को पूरे मनोयोग से पढ़ेंगे और हमारे प्रिय विद्यार्थियों को विशेष प्रोत्साहन एवं प्रेरणा भी प्रदान करेंगे जिससे भविष्य में ये नन्हें कलाकार और बेहतर, सुन्दर और सार्थक साहित्य-सृजन कर सकें। हमारे महाविद्यालय में विभिन्न संकायों में अध्ययनरत सभी विद्यार्थी निःसन्देह बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं जिन्होंने शिक्षा ही नहीं वरन् जीवन के विभिन्न आयामों में अपनी प्रतिभा और योग्यता का भरपूर प्रदर्शन कर महाविद्यालय के स्वर्णिम इतिहास में, नव-पृष्ठ रचे हैं, नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। इस सन्दर्भ में महाविद्यालय की मातृ संस्था पंचायती श्री निरंजनी अखाड़ा के श्रद्धेय सन्तों का परम आशीष, सतत् सहयोग एवं मार्गदर्शन संस्था को निरन्तर ही मिलता रहता है। पूज्य सन्तों के आशीर्वाद एवं कॉलेज के समुन्नायक प्राचार्य डा. सुनील कुमार बत्रा जी के सतत् सहयोग/प्रयासों एवं निर्देशन के फलस्वरुप महाविद्यालय गत वर्षों में निरन्तर विभिन्न सामाजिक, सृजनात्मक, सामयिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु बना रहा। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों ने पूरी लगन, रुचि एवं उत्साह के साथ प्रतिभागिता की एवं शानदार प्रदर्शन किया। पत्रिका के चित्र-पृष्ठ एवं विभिन्न संकायों की वार्षिक आख्या इसका ज्वलन्त प्रमाण हैं

मेरे प्रिय विद्यार्थियों! जीवन ईश्वर का अनमोल उपहार है। इसका हर पल बेशकीमती है इसे सहज, सरल भाव से जीयें। इसे व्यर्थ ही उलझायें मत! संघर्ष से घबरायें नहीं! कल-कल बहती शांत सरिता की तरह निरन्तर जीवन-पथ पर आगे बढ़े एवं अपने सपनों को साकार करें। बहुत-बहुत शुभकामनाएँ एवं शुभाशीष।

सच हम नहीं, सच तुम नहीं, सच है सतत् संघर्ष ही,
संघर्ष से हटकर जिये तो क्या जिये हम या कि तुम,
जो नत हुआ वह मृत हुआ, ज्यों वृन्त से झर कर कुसुम,
हर हार से सीखें सबक, संदेश जीवन का यही,
अपने हृदय का सत्य अपने आप हमको खोजना,
अपने नयन का नीर अपने आप हमको पोछंना,
कांटे चुभें, कलिया खिले
हर एक राही को भटक कर ही दिशा मिलती सही।

डॉ. नलिनी जैन
(मुख्य सम्पादक)

हिन्दी साहित्य में स्त्री चिन्तन

सर्जना की मूल शक्ति एवं समाज की गति का आधार स्त्री है। स्त्री के बिना सृष्टि का विकास असम्भव है, उसका व्यक्तित्व बहुआयामी है। वह माँ है तो बेटी भी है, बहिन है तो पुरुष की सहचरी भी है, लेकिन पुरुष प्रधान समाज में उसकी स्थिति दयनीय बनी हुयी है उसका स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है, वह श्रृंखला में आबद्ध अबला है जिसकी स्थिति चिन्तनीय है। अपने चरित्र की उदान्तता से वह समाज का पोषण करती आयी है, अथ से इति तक करुणा, प्रेम, सेवा, दया, त्याग, क्षमा, सहनशीलता, ममता आदि गुणों से युक्त होने के कारण वह पुरुष की पथ प्रदर्शिका भी है, लेकिन फिर भी वह उपेक्षित, तिरस्कृत, उत्पीड़ित है। पुरुष की अर्धांगिनी होकर भी वह पुरुष के समान अधिकारों से वंचित है उसका कार्यक्षेत्र घर–परिवार तक ही सीमित है। आज बुद्धिवाद के प्रभाव के कारण स्त्रियों की इस स्थिति में परिवर्तन अवश्य आया है उनमें सामाजिक चेतना का विकास हुआ है और वह पारिवारिक सीमा को लांघकर सम्पूर्ण समाज की समस्याओं को देखने–परखने लगी हैं उसका कार्यक्षेत्र व्यापक हो गया है। अब वह विश्वव्यापी समस्याओं को भी देखने–परखने लगी है और उनके समाधान के लिए पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चलने लगी है, अबला की मानसिकता सबला में परिवर्तित होने लगी है।

हिन्दी साहित्य में प्रसाद जी जैसे कवियों ने 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' कहकर उसे आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते हुए अपने हृदय की सम्पूर्ण श्रद्धा नारी को अर्पित की और स्पष्ट किया कि नारी सदैव पूजनीया रही है। वह स्वभावतः इतनी कोमल रही है कि उसका जीवन समस्त पृथ्वी पर एक अमृत स्त्रोत के समान रहा है–

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में'

इससे भी आगे बढ़कर हिन्दी साहित्य में नारी की स्थिति में शंखनाद करने वाले राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने मर्मभेदी उक्ति 'अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी' के माध्यम से नारी जीवन की सम्पूर्ण व्याख्या की है और 'आँचल में है दूध और आँखों में पानी' की व्यञ्जना द्वारा जो चित्र अंकित किया है उसमें स्त्री जाति की विवशता है। एक वेदना को स्पष्ट करने का इससे अच्छा शब्द शायद किसी शब्दकोश में नहीं है। नारी जीवन की इस विवशता और व्यथा को इतनी सीमित शब्दावली में किसी अन्य कवि न और कहीं व्यक्त नहीं किया।

नारी क्या नहीं कर सकती? किस क्षेत्र में वह पीछे रही है। युद्ध, राजनीति, खेलकूद, शिक्षा सभी क्षेत्रों में नारी ने अपना परचम लहराया है। एक समय वह भी था जब नारी युद्ध भूमि में पति का साथ देती थीं, युद्ध से विमुख होने पर वह उसके लिए प्रेरणास्त्रोत बनकर खड़ी हो जाती थी; इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण हैं। ऐतिहासिक एवं पौराणिक चरित्रों के माध्यम से नारी की भव्यता एवं विशालता, उदात्तता का परिचय इस रुप में मिलता है–

क्या नहीं कर सकती भला?
यदि शिक्षित हो नारियाँ
रण रंग राज्य सुधर्म रक्षा
कर चुकीं सुकुमारियाँ
लक्ष्मी, अहिल्या, भवानी, पदमिनी
ऐसी अनेकों देवियाँ, है आज जा सकती गिनी
सोचो नरों, से नारियाँ किस बात हैं कम हुयी?

वास्तव में नारियाँ आज किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रही जितना त्याग और बलिदान नारी करती है उसका शतांश भी पुरुष नहीं कर पाता क्योंकि–

नर क्या करेगा त्याग, करती है नारी ही।

वास्तव में नारी इस लोक में कुछ भी लेने नहीं आती, बस वह कुछ देने के लिए ही जन्म लेती हैं और उस देने में भी विनय के साथ–साथ गर्व की अनुभूति करती हैं तथा कभी भी प्रतिदान की अपेक्षा नहीं रखती क्योंकि 'नारी लेने नहीं, लोक में देने ही आती हैं। यही नारी का आदर्श है। नारी पुरुष की समकंक्षिणी एवं उसका पूरक अंश है, पुरुष में प्रेरणा भरने वाली शक्ति है लेकिन विवशताओं से घिरी नारी, पुरुषों की उपेक्षा और शास्त्रों के अत्याचार से पीड़ित नारी की ओर से मैथिलीशरण गुप्त जी ने सहानुभूति की भीख पुरुषों से मांगी है और सम्पूर्ण नारी जाति के प्रति अपनी निश्चल सहानुभूति प्रकट करके पुरुषों के भीतर यह प्रेरणा जाग्रत की कि उन्हें स्वेच्छा से नारियों को उनके अधिकार समर्पित कर देने चाहिए। इसीलिए उनकी

रचनाओं में चित्रित नारियाँ करुणा की सजीव प्रमिभायें हैं। हिन्दी साहित्य में नारी के विषय में पर्याप्त लिखा गया नारी की विपन्न दशा के प्रति आधुनिक कवियों ने अपनी लेखनी चलायी है। नारी की उदान्तता जगत विख्यात है। श्रद्धा और प्रेम की मूर्ति होने के कारण वह सम्मानीय है, आदरणीय है इसीलिए कहा भी गया है–

'एक नहीं दो–दो मात्रायें नर से भारी नारी।'

नारी के प्रति इतने उदान्त भाव गुप्त जी के मानस में थे कि 'हिडिम्बा' जैसी असुर नारी में भी आदर्श गुणों को प्रतिष्ठा उन्होंने की। वह अभिमाननी है पर अपने पुत्र को यह कहकर पांडवों को सौंपती है कि संकट में यह तुम्हारे काम आयेगा।

इस प्रकार नारी की स्थिति के विषय में जितना कहा जाये उसमें शोषण के ही दर्शन होते हैं। आज स्त्री की मानसिकता में परिवर्तन आया है वह स्वयं आत्मनिर्भर हो गयी है। अर्थोपार्जन कर रही है और शिक्षित होने के कारण उनमें यह चेतना जाग्रत हो रही है कि अब वह इन पुरानी परम्पराओं की जकड़न से मुक्त होना चाहती है अब उन्हें समझ में आने लगा है कि उनके साथ जो हो रहा है वह उचित नहीं है और वह उसके खिलाफ आवाज उठाने लगती है, जो पुरुषों को जरा भी मान्य नहीं है कि स्त्रियाँ उनके सामने तर्क–वितर्क करें उनके पुरुषत्व को चैलेंज करें। अब समय आ गया है नारी मुक्ति का जैसा कि कविवर पन्त ने भी कहा है–

मुक्त करो नारी को मानव
चिर वन्दनीय नारी को
युग–युग की निर्मम कारा से
जननी सखी प्यारी को।

लेकिन पुरुष का उद्देश्य उसे अपने अनुकूल बनाना है ताकि स्त्री कोई असुविधा पैदा न कर दे। हिन्दी साहित्य में स्त्री चिन्तन के विविध पक्ष प्रस्तुत हुए हैं। आज की नारी पुरुषाश्रित नहीं है उसका स्वतन्त्र अस्तित्व भी है वह पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर रोटी कमाने के साथ–साथ रसोई भी सम्भालती है। जीवन की विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु स्वतन्त्र निर्णय लेने में भी समर्थ है क्योंकि वह अपने अधिकारों के प्रति सजग है अपनी समस्याओं के समाधान स्वयं करके अपनी स्थिति को उच्च बनाने के लिए प्रयत्नशील है। यद्यपि युगों से नारी का कार्यक्षेत्र घर तक सीमित रहा, लेकिन आज की सुशिक्षित नारी को समाज में अपना स्थान बनाने के लिए अपनी दशा व दिशा दोनों ही बदलनी होगी।

–डॉ. आशा शर्मा
हिन्दी विभाग

पिता

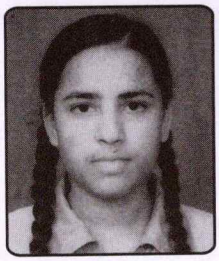

मेरी जान है मेरी शान है पिता
मेरी एक पहचान है पिता
मेरी हिम्मत मेरा सम्मान है पिता
मेरा अभिमान है पिता,
मेरा सपना मेरा सब कुछ है पिता
जितना आपके लिए लिखूँ उतना ही कम है पिता
मेरा सुख, मेरा दुख, सब आप है पिता
मेरा सुकून मेरी रात की नींद सब आप है पिता
मेरी जान मेरी शान है पिता
मेरी एक पहचान है पिता
मेरा आज मेरा कल सब आप हो पिता
मेरा दिन का चमकता सूरज आप हो पिता
मेरा रात को रोशन करने वाला चाँद आप हो पिता
मेरी दुनिया आप हो पिता
मेरी जान मेरी शान है पिता
मेरी एक पहचान है पिता
मेरी इज्जत मेरी शोहरत है पिता
मेरा रूतबा मेरा मान है पिता
मेरी ताकत मेरी पूँजी है पिता
हमारे घर की शान है पिता
हमारे घर की जान है पिता
मेरी जान मेरी शान है पिता
मेरी एक पहचान है पिता
मेरा हौसला मेरी ताकत है पिता
मेरी इज्जत मेरी शौहरत मेरा मान है पिता
मेरा साहस मेरा सम्मान है पिता
मेरे दिल की धड़कन है पिता
मेरी जान मेरी शान है पिता
मेरी एक पहचान है पिता
मेरी एक पहचान है पिता।

–आशना
बी.ए., प्रथम सेमेस्टर

सच्ची दोस्ती का अर्थ

दोस्त शब्द का अर्थ
भी क्या खूब है
जो हमारे दोषों का अस्त कर दे
वही दोस्त होता है।

दोस्तों लोगों अक्सर कहते हैं कि दोस्त ही वह इंसान होता हे जो दोस्तों में बुरी बातें डालते हैं। अधिकतर किसी से भी पूछ ले, अगर कोई गाली देता हो तो कह देंगे कि मेरे दोस्त ने मुझे सीखा दी। अगर किसी को शराब या सिगरेट की बुरी आदत लगी हो, तो वह भी कह देंगे कि 'यार' क्या करें मेरे दोस्त है ही ऐसे, उन्होंने मुझे यह आदत डाल दी।

'नहीं दोस्तों, दोस्त वह नहीं जो बुराई सिखाएँ, दोस्त तो वह होता है जो आपको सिर्फ और सिर्फ अच्छाई सिखाएँ।

सुदामा ने श्रीकृष्ण से पूछा कि
दोस्ती का असली मतलब क्या है?
कृष्ण ने हंसकर कहा 'जहां मतलब होता है वहां
दोस्ती कहाँ होती है।'

–सपना
बी.ए. षष्ठम् सेमेस्टर

बचपन

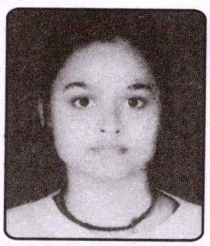

बचपन का जमाना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था।
चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दीवाना था।
खबर ना थी कुछ सुबह की,
और ना शाम का ठिकाना था।
थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जरुर जाना था।
माँ की कहानी थी, और
परियों का फसाना था।
बारिश में कागज की नाम थी,
और हर मौसाम सुहाना था।
रोने की कुछ वजह ना थी,
ना हंसने का कोई बहाना था।
बचपन का जमाना था,
वो बचपन का जमाना था।

–महिमा
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

जीत हासिल करनी है

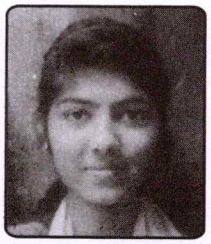

जीत हासिल करनी है
तो काबिलियत बढ़ाओ
कागज कलम के सहारे
अपनी किस्मत लिखते जाओ।
जिस दिन लगे हारने मन
शुरुआत क्यों की थी सोच लेना
देखना खुद की मंजिल को सामने
ना मिले तो खोज लेना।
बढ़ते ही चलना रुका
ना कभी यहाँ
जीत हासिल करनी है
तो काबिलियत बढ़ाओ
कागज कलम के सहारे
अपनी किस्मत लिखते जाओ।
भीड़ से खुद को अलग कर
खुद ही खुद को बनाओगे
दुनियां की सोचोगे तो
हार कर बैठ जाओगे।
अक्सर जीत देखकर
बदल जाते हैं लहजे यहाँ
जीत हासिल करनी है
तो काबिलियत बढ़ाओ
कागज कलम के सहारे
अपनी किस्मत लिखते जाओ।

–अपूर्वा शर्मा
बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर

दहेज के विरुद्ध लड़की का जवाब

'एक लड़का लड़की देखने गया,
लड़की पसंद आने पर लड़के ने
लड़की से कहा'
कि तुम तो मुझे पसंद हो
क्या तेरे बाप की हैसियत मुझे
कार देने की है?
इस पर लड़की ने
सॉलिड जवाब दिया
मेरे बाप की हैसियत तो तुम्हें
एरोप्लेन देने की है,
लेकिन क्या तुम्हारे बाप की हैसियत
एयरपोर्ट बनवाने की है क्या?

–सपना
बी.ए. षष्ठम् सेमेस्टर

5G तकनीक, फायदे और चुनौतियाँ

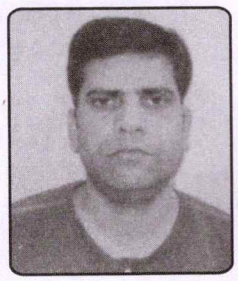

5G तकनीक क्या है–5G तकनीक के बारे में पिछले करीब 2 सालों से चर्चा हो रही है और अब कई देशों में इसका इस्तेमाल शुरु हो चुका है, 5G की चर्चा होते ही हम स्वचालित गाड़ियों, इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी चीजों पर बात करने लगते हैं। लेकिन 5G तकनीक आखिर है क्या और यह मौजूदा तकनीक के बीच किस तरह जगह बनाएगा।

5G मोबाइल नेटवर्क का पांचवां जेनरेशन है। 5G को इस तरह से सोचिए कि 4G नेटवर्क की स्पीड का 100 गुना, 4G की तरह ही, 5G भी उसी मोबाइल नेटवर्किंग के सिद्धान्त पर आधारित है।

पांचवीं पीढ़ी को वायरलेस तकनीक अल्ट्रा लो लेटेन्सी (आपके फोन और टावर के बीस सिग्नल की स्पीड) और मल्टी GbPs डेटा स्पीड पहुँचाने में सक्षम है। यह एक सॉफ्टवेयर आधारित नेटवर्क है, जिसे वायरलेस नेटवर्क की स्पीड और कार्यक्षमता को बढ़ाने हेतु डेवलप किया गया है। यह तकनीक डेटा क्वांटिटी को भी बढ़ाती है, जो वायरेस नेटवर्क को ट्रांसमिट किया जा सकता है।

5G तकनीक के पांच आधार

5G तकनीक "सब–6 बैण्ड" में काम करने में सक्षम है, जिसकी फ्रीक्वेंसी आमतौर पर 3 3GHz-6GHz के बीच होती है। अधिकतर मौजूदा डिवाइस जैसे मोबाइल, टैबलेट और लैपटॉप भी इसी फ्रीक्वेंसी में काम करते हैं।

मिलीमीटर वेव 5G :

मिलीमीटर वेव 5G बहुत सारा डेटा एक्वायर करता है, जो 1GB/sec की स्पीड से डेटा ट्रांसफर को संभव बनाता है। ऐसी तकनीक फिलहाल अमेरिका में वेरीजॉन और AT &T जैसी टेलीकॉम आपरेटर इस्तेमाल कर रहे है।

स्पीड सेल्स :

किलोमीटर–वेव में रेंज के साथ समस्या है जिसकी भरपाई स्पीड सेल्स करता है। चूंकि mm वेव रूकावटों में काम नहीं कर सकता है। इसलिए मेन सेल टावर से सिग्नल रिले करने के लिये पूरे क्षेत्र में बड़ी संख्या में मिनी सेल टावर्स लगाए जाते हैं जिससे यूजर्स को बिना किसी रूकावट 5G सिग्नल मिल सके।

मैक्सिमम MIMO

मैक्सिमम MIMO, यानी मल्टीपल–संपुट और मल्टीपल आउटपुट तकनीक, इसका इस्तेमान रेगुलर सेल टावर जिससे 4G नेटवर्क मिलता है, वो 12 एंटीना के साथ आता है जो उस क्षेत्र में सेल्युलर ट्रैफिक को हैंडल करता है। MIMO 100 एंटीना के साथ आता है जो उस क्षेत्र में सेल्युलर ट्रैफिक को हैंडल करता है। MIMO 100 एंटीना के साथ आता है जो उस क्षेत्र में सेल्युलर ट्रैफिक को हैंडल करता है। MIMO 100 एंटीना को एक साथ स्पोर्ट कर सकता है।

बीम फार्मिंग

बीम फार्मिंग एक ऐसी तकनीक है जो लगातार फ्रीक्वेंसी की कई सारे सोर्सेज को मॉनिटर कर सकती है और एक मिनरल के ब्लॉक रहने पर, दूसरे मजबूत और अधिक स्पीड वाले टावर पर स्विच करती है।

फुल डुप्लेक्स :

फुल डुप्लेक्स एक ऐसी तकनीक है, जो एक समय फ्रीक्वेंसी बैण्ड में एक साथ डेटा को ट्रांसमिट और रिसीव करने में मदद करता है। यह टू–वे स्ट्रीट की तरह है, जो दोनों तरफ से समान ट्रैफिक भेजता है।

5G तकनीक के फायदे–

5G ट्रैफिक कैपेसिटी और नेटवर्क एसिसिएंसी में 20 जीवी प्रति सेकण्ड की स्पीड देने में सक्षम है। इसके अलावा mm वेव के साथ 1 MS की लेटेंसी पा सकते हैं। जो तुरंत कनैक्शन इस्टैब्लिशी करने और नेटवर्क ट्रैफिक को कम करने में मदद करता है। यह तकनीक वर्चुअल रियलिटी, ऑटोमैटिक ड्राइविंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स के लिए आधार बनने जा रहा है।

5G की चुनौतियाँ :

5G तकनीक को लाना काफी महंगा होने वाला है। नेटवर्क ऑपरेटर को मौजूदा सिस्टम हटाना पड़ेगा। इसको ठोस तरीके से लागू करने के लिये अधिक हार्डवेयर लगाने की जरूरत होगी। इसके अलावा 5G टेक्नोलॉजी के साथ सिक्योरिटी और प्राइवेसी का मुद्दा भी है, जो अधिक इस्तेमाल होने के बाद ही पता चल पाएगा।

–विनीत सक्सेना
भौतिक विज्ञान विभाग,
एस.एम.जे.एन. (पीजी) कॉलेज, हरिद्वार

रैगिंग : एक भयानक मज़ाक़

रैगिंग यह शब्द पढ़ने में सामान्य लगता है। इसके पीछे छिपी भयावहता को वे ही छात्र समझ सकते हैं जो इसके शिकार हुए हैं। आधुनिकता के साथ रैगिंग के तरीके भी बदलते जा रहे हैं। रैगिंग आमतौर पर सीनियर विद्यार्थी द्वारा कॉलेज में आए नए विद्यार्थी से परिचय लेने की प्रक्रिया होती है। लेकिन अगर किसी छात्र को रैगिंग के नाम पर अपनी जान गंवाना पड़े तो उसे क्या कहेंगे?

रैगिंग के नाम समय–समय पर अमानवीयता का चेहरा भी सामने आया है। गलत व्यवहार, अपमानजनक छेड़छाड़, मारपीट ऐसे कितने वीभत्स रुप रैगिंग में सामने आए हैं। सीनियर छात्रों के लिए रैगिंग भले ही मौज मस्त हो सकती है, लेकिन रैगिंग से गुजरे छात्र के मस्तिष्क से रैगिंग की भयावहता मिटती नहीं है। स्कूल के अनुशासित जीवन के बाद जब एक छात्र उमंग, उत्साह के साथ कॉलेज में प्रवेश करता है तब उसे रैगिंग की सच्चाई का पता नहीं होता। जब सीनियर्स रैगिंग लेकर उसे प्रताड़ित करते हैं तो समझ पाता है कि रैगिंग क्या होती है?

हंसी मजाक थोड़े से मनोरंजन, सीनियर छात्रों के प्रति सम्मानजनक व्यवहार से प्रारम्भ हुई रैगिंग अपशब्द बोलना, नशा कराना, यौन उत्पीड़न, कपड़े उतरवाना जैसे घृणित स्तर पर पहुँच चुकी है। सीनियर्स द्वारा की जाने वाली रैगिंग का दर्द उन परिवारों से पूछा जाना चाहिए जिनके होनहार बच्चे इस रैगिंग के कारण डिप्रेशन में चले गए या उनका जीवन समाप्त हो गया।

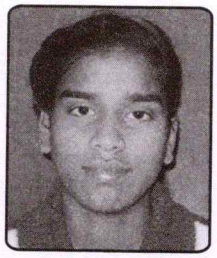

मार्च 2009 में हिमाचल प्रदेश के एक मेडिकल कॉलेज के छात्र अमन काचरु को रैगिंग के कारण अपनी जान गँवानी पड़ी थी। एक मेडिकल कॉलेज में एक छात्रा के साथ, सीनियर्स ने रैगिंग में ऐसी हरकत की जिसे सदमें से वह कई दिनों तक उबर नहीं पाई। ऐसा नहीं है कि इस अभिशाप के विरुद्ध न्याय प्रणाली ने कोई कार्य नहीं किया। सुप्रीम कोर्ट ने रैगिंग के सम्बन्ध में समय–समय पर महत्वपूर्ण कानून बना कर सख्त फैसले लिए। 11 फरवरी 2009 को सुप्रीम कोर्ट की बैंच ने स्पष्ट कहा है कि रैगिंग में संलिप्त पाए गए छात्र के विरुद्ध क्रिमिनल केस दर्ज होना चाहिए। रैगिंग मानवाधिकार को गाली है। 1997 में तमिलनाडू में विधानसभा में एंटी रैगिंग कानून पास किया गया।

–ईशा केसरी
बी.कॉम प्रथम सेमेस्टर

नारी

नारी की समाज में बराबर की भागीदारी है
आखिर हमारी माँ–बेटी–बहन भी तो एक नारी है।
तो क्यों समाज नारी को इतना तड़पाता है
क्यों दहेज न मिलने पर औरत को
जिन्दा जला दिया जाता है–
क्यों शराब का नशा नारी शोषण कर उतारा जाता है
क्यों उस नन्हीं सी जान से उसके,
जीने का अधिकार कोख में ही छीन लिया जाता है।
आखिर किस गलती की सजा नारी को दी जाती है।
क्यों हर बार सूली पर एक बेटी चढ़ जाती है।
आखिर क्यों लड़कियाँ स्कूल जा नहीं पाती,
क्यों वो अंधेरी गली से है घबराती है।
अरे अब तो आँखें खोलों समाज,
अगर कल बदलना है भारत को तो आज कुछ बोलो समाज।

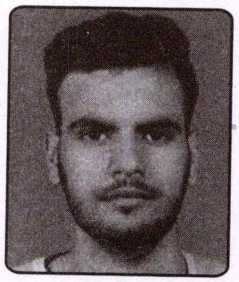

–अक्षत निखिल त्रिवेदी
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

बचपन

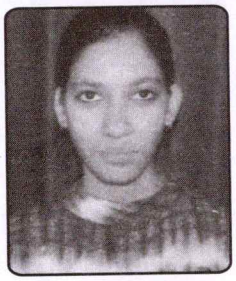

ख्वाबों का मेला था,
उमंगों का घेरा था,
बचपन था ऐसा मानों
सबकुछ मेरा था।
माँ–बाप का दुलार,
दादा–दादी का पुचकार,
बचकर निकल जाते थे,
करके गलतियाँ हजार।
पल में कट्टी, पल में दोस्ती
लंबी दुश्मनी किसी से न होती।
जरा–जरा सी बात पर रोना, फिर बात मनवाकर हँसना
और दादी से रात में घण्टों परियों की कहानी सुनना।
खेल में मस्ती, पढ़ाई में झपकी,
स्कूल न जाने के बहाने एक से एक थी
छुट्टियों में नानी घर जाने का शोर,
और एक दिन भी न पढ़ने का होश।
चाचा चौधरी की कॉमिक्स का चस्का
वीडियो गेम की धुनकी
इन सबके आगे भूख प्यास भी न लगती।
त्योहारों के दिन टूटकर गोलगप्पे
और आईसक्रीम खाया करते थे
जितने पैसे पॉकेट में होती थी,
सब खर्च कर दिया करते थे।
बिना दावत किसी के घर चले जाया करते थे
खा–पीकर वहाँ से निकल लिया करते थे।
और आज का वक्त है जो फिक्र से ही भरा है
खुशियों से पार है,
इतनी जिन्दगी व्यस्त हो गई है कि
अपनों से मिलने का वक्त नहीं है।

–राधिका गोयल
बी.कॉम पंचम सेमेस्टर

आराधना

सर्व रक्षा ईश्वर का हम ध्यान करते सर्वदा,
प्राण रुप है तू ही जगत दु:ख नाशक है सदा,
हर जगह में व्याप्त है भाग्य में भगवान है।
पूर्ण जो आनन्दमय है दिव्य जिसकी शान है,
श्रेष्ठ उनके तेज का चिन्तन करे दिन रात हम
बुद्धियों से हम सभी की शुद्ध करते हैं करम
प्रेरणा उनकी मिले तो हमारे कर्म भी शुद्ध हों
दिव्य जीवन पाकर हम सभी उद्‌बुद्ध हो।

–प्राची ठाकुर
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

बुढ़ापे का दर्द

मंदिरों में जाकर दुआ मांगते हैं हम,
मंदिरों जाकर दुआ मांगते हैं हम
तब जाके होता कहीं बच्चे का जन्म,
जन्म के समय की पीड़ा को सहा,
ममता की कहानी को किससे कहें।
सारे गम ऊंच–नीच सह जाते हैं,
सारे गम ऊंच–नीच सह जाते हैं,
बंधनों में बंध कर रह जाते हैं
पर क्यों यह बंधनों को तोड़ देते हैं।
आश्रमों में लाके हमें छोड़ देते हैं,
आश्रमों में लाके हमें छोड़ देते हैं।
पाल पोस कर इन्हें बड़ा करें हम,
पाल पोस कर इन्हें बड़ा करें हम
बड़ा कर पैरों पर खड़ा करें हम,
कभी कोई एहसास होने नहीं दें,
खुद रोए पर इन्हें रोने नहीं दें,
इनके लिए तो करें जान कुर्बान,
इनके लिए तो करें जान कुर्बान,
खुशियों को जिदंगी से जोड़ देते हैं।
फिर क्यों यह आश्रमों में छोड़ देते हैं
फिर क्यों यह आश्रमों में छोड़ देते हैं।
छोटे होते हैं तो मीठा बोलते हैं यह,
छोटे होते हैं तो मीठा बोलते हैं यह,
मम्मी कहकर जुबान खोलते हैं यह,
धीरे–धीरे जैसे–जैसे होते हैं जवान,
चेहरे से जाने लगती है मुस्कान
क्रूरता के भाव मुख पर आने लगते,
क्रूरता के भाव मुख पर आने लगते,
अपना यह असर दिखाने लगते
रथ के पथ को मोड़ देते हैं,
आश्रमों में लाके हमें छोड़ देते हैं,
आश्रमों में लाके हमें छोड़ देते हैं।
जिस दिन देख ले शादी की भव्यता
जिस दिन देख ले शादी की भव्यता
मर मिट जाती बची खुची सभ्यता
पत्नी को मानते है परमात्मा
और भूल जाते हैं यह माँ की आत्मा
सोचते नहीं हैं, नहीं करते विचार
सोचते नहीं हैं, नहीं करते विचार
माता और पिता इन्हें लगते हैं भार
जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ लेते हैं।
आश्रमों में लाके हमें छोड़ देते हैं
आश्रमों में लाके हमें छोड़ देते हैं।

–नियती विज, बी.कॉम प्रथम सेमेस्टर

कुंभ महापर्व

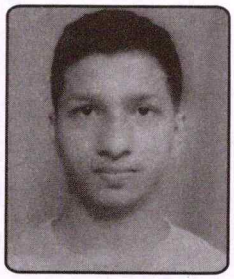

कुंभ मेला लोगों की आस्था का विशाल केन्द्र हैं जिसमें हिन्दू एक पवित्र नदी में स्नान करने के लिए इकट्ठा होते हैं।

हर तीसरे वर्ष में 4 स्थानों में से एक पर आयोजित किया जाता है। यह चार स्थान हरिद्वार, इलाहाबाद (प्रयाग), नासिक व उज्जैन है। इन चार स्थानों पर नदियाँ हैं। हरिद्वार (गंगा), प्रयाग (गंगा व यमुना का संगम), नासिक में (गोदावरी) और उज्जैन में (शिप्रा) हैं।

ना केवल भारत के हिन्दू बल्कि यहाँ आने वाले विदेशी पर्यटक भी इस तीर्थ स्थान के कुम्भ मेले में शामिल होते हैं और साधु संत इस मेले में देखने को मिलते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि महर्षि दुर्वासा के श्राप के कारण जब इन्द्र और देवता कमजोर पड़ गए तब राक्षस ने देवताओं पर आक्रमण करके उन्हें परास्त कर दिया था, ऐसे में सब देवता मिलकर विष्णु भगवान के पास गए और सारा वृतान्त सुनाया। तब भगवान ने देवताओं को दैत्यों के साथ मिलकर समुद्र यानि क्षीरसागर में मंथन करके अमृत निकालने को कहा। सारे देवता भगवान विष्णु जी के कहने पर दैत्यों से संधि करके अमृत निकालने के प्रयास में लग गये। जैसे ही समुद्र मंथन से अमृत निकला, अमृतकलश पर अधिकार जमाने के लिए देव और राक्षसों में भयानक युद्ध चला ऐसा कहा जाता है कि इस युद्ध के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों पर अमृत कलश की कुछ बूंदें गिरी थी, इसीलिए इन्हीं चार जगहों पर कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है।

इस बार कुंभ मेला हरिद्वार में हो रहा है, इस मेले में सभी अखाड़ों के साधु–संत और सभी श्रद्धालु गंगा में स्नान करते हैं। हरिद्वार कुंभ 2021 का पहला शाही स्नान गुरुवार, 11 मार्च को होगा इस दिन महाशिव रात्रि रहेगी।

कुंभ मेले का मुख्य आकर्षण शाही स्नान होता है। शाही स्नान जिसे राजयोग स्नान भी कहते हैं। इसकी शुरुआत 14वीं से 16वीं शताब्दी में हुई। अर्थात् शाही स्नान वैदिक नहीं बल्कि एक परम्परा है। विभिन्न अखाड़ों से ताल्लुक रखने वाले साधु–संत सोने चाँदी की पालकी, हाथी–घोड़े के साथ पवित्र नदी में नियत तिथि पर स्नान करते हैं।

नागा सन्यासी और देश विदेश के साधु संत इस पावन मेले में आते हैं। शैव, वैष्णव एवं उदासीन पंथ के मान्यता प्राप्त कुल 13 अखाड़े हैं। कुंभ मेले के दौरान अखाड़ों की पेशवाई मेले के मुख्य आर्कषण का केन्द्र होती हैं जिसमें हजारों की तादाद में नागा सन्यासी पतित पावनी माँ गंगा में स्नान कर पुण्य लाभ अर्जित करते हैं। सम्पूर्ण विश्व में कोई भी ऐसा देश नहीं है जहाँ इस तरह का धार्मिक आयोजन होता है। इसमें सभी जाति, संप्रदाय के लोग आपस में मिलजुल कर माँ गंगा में स्नान कर अपने जीवन को सफल बनाते हैं। नागा संन्यासियों की अलौकिक क्षमता और तेज देखकर देश ही नहीं बल्कि विदेशी भी आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

–करन बहुगुणा
बी.कॉम प्रथम सेमेस्टर

पर्यावरण संरक्षणम्

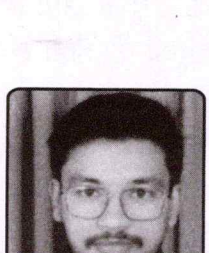

पर्यावरणनाशेन, नश्यन्ति सर्वजन्तवः। पवनः दुष्टतांयाति, प्रकृतिविर्कृततायते।।

अर्थ–पर्यावरण के प्रदूषित होने से सभी प्राणी नष्ट हो जाते हैं। हवा दृष्टता को प्राप्त हो जाती है और यह प्रकृति विकृत हो जाती है।

संरक्षेत् दूषितो न स्याल्लोकः मानवजीवनम्। न कोऽपि कस्यचिदं नाशं, कुर्यादर्धस्य सिद्धते।।

अर्थ–संसार प्रदूषित न हो। मानव जीवन सुरक्षित रहे। धन की सिद्धि के लिए कोई भी किसी का नुकसान न करे।

भुक्त्वा यान्ति च पञ्चत्वं, दुष्टतास्तकर्मजैविकम्। पश्वोऽनुर्वरा भूमिर्जायते ज्वालिते विषम्।।

अर्थ–पशु इस अजैविक प्लास्टिक को खाकर मर जाते हैं। यह धरती इससे बंजर हो जाती है और इसे जलाने पर विष ही उत्पन्न होता है।

–स्कन्द पालीवाल, बी.कॉम पंचम सेमेस्टर

कुम्भ नगरी

सुगम करने पुण्य नगरी,
आ रहे सब धर्म प्रहरी,
खिल उठी है प्रयाग भूमि,
सज रहीं है कुम्भ नगरी।
अधर्म की हो राह सकरी,
कर न अपनी सोच गहरी,
दृढ़ प्रतिज्ञ बन ठान अब तू,
बनना है पुण्यात्म शहरी।
सज रही है कुम्भ नगरी.....
हरिद्वार पावन धरा सुनहरी,
यज्ञों की यह अतुल्य नगरी,
है यही उत्कृष्ट सुअवसर,
सत्कर्म की तू बाँध गठरी।
सज रही है कुम्भ नगरी.....
है जटिल यह मोह झंझरी,
चल तू अब सुकर्म पटरी,
ढरकेगी अमृत की गगरी,
सज रही है कुम्भ नगरी.....
फिर संगम के घाट पे, भई भक्तन की भारी भीड़,
सन्यासी डुबकी भरै, कुंभ लगे नदियां के तीर।

आस्था की डुबकी

ठंड के जोर का सबसे विकट महीना गंगा किनारे
फिर....उतर रहा है माघ का महीना
आस्था की डुबकी लगाएगा संगम
अहा! दृश्य होगा कितना विहंगम
तंबूओं की होगी लंबी–लंबी कतारें
नागाओं किन्नर महंतों के अखाड़े
नर–नार, साधु–संत और पंडों का रेला
कुम्भ में लगेगा....खिचड़ी का मेला
अमृत के स्नान का, हो रहा है आगाज़
कुंभ के रंग में, रंगा जा रहा है हरिद्वार
गंगा की सौंधी खुशबू....होगी आत्मसात
आओ विचरण करें हरिद्वार की एक प्रभात।

–जूली तिवारी
बी.कॉम पंचम सेमेस्टर

मुसाफिर

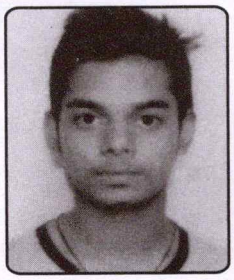

मुसाफिर हो तुम भी
मुसाफिर हैं हम भी
रास्ते अलग हैं सबके
मगर मज़िल एक है।
कोई दु:ख में भी सुखी है
कोई सुख में दु:खी है
कोई रोशनी का पाला है
तो कोई अंधेरों का मारा है।
हर कदम एक नया सफर है
क्या दौलत है? क्या है रईसी
सब इच्छाओं का मायाजाल है
सब एक छलावा और प्रेतछाया है
खुशी केवल एक मृगतृष्णा है।
मुसाफिर हो तुम भी
मुसाफिर हैं हम भी
रास्ते अलग हैं सबके
मगर मंजिल एक है।
दर्द का परिवेश हर जगह है
सुकून का दरिया जाने कहाँ है
राख ही हो जाओगे एक दिन
एक दिन खत्म हो जाना ये सफर है
ये दुनिया भ्रमों का नगर है।
मुसाफिर हो तुम भी
मुसाफिर हैं हम भी
रास्ते अलग हैं सबके
मगर मंजिल एक है।

–श्रेष्ठ शर्मा, बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

अपनी राह तो मैं खुद बना लूँ

खुद को मैं अपना खुदा बना दूँ
मंजिलो से अपनी खुद को मिला दूँ
किसी और की राह पर न चलना
मुझको आता
अपनी राह तो मैं खुद बना लूँ।
ए पंक्षी न कैद हो उस पिंजरे में
खुले आसमां को तू अपना घर बना ले
तोड़ दे तू उस जंजीरों को
जो रोके तू दुनियाँ से
कि वो तुझे आजाद करेगी
वो तो बड़े ही लाचार है
और स्वयं खुद की ही वो गुलाम है।

–पूजा पाण्डेय, एम.कॉम. 4 सेमेस्टर

एक पैगाम क्रांतिकारियों के नाम....

वो क्रांति का दौर भी कितना गजब का था, जब देश का बच्चा–बच्चा अपनी मिट्टी पर वारा जाता था। कितना शानदार होता था वो मंजर, जब क्रांतिकारियों की रक्त की एक–एक बूंद फिरंगियों के सीने पर साँप की तरह लौटती थी।

कितना जोश भरा होता था वो एक नारा जिसके गूँजते ही अंग्रेजों के कान फट जाते थे। कितना उम्मीद भरा होता था वो क्रांति का एक गीत जिसको गुनगुनाते ही शरीर में स्वतंत्रता की लहर दौड़ती थी। कितनी असरकारी होती थी वो मिट्टी जो क्रांतिकारियों के घाव पर औषधि का कार्य करती थी और कितना दर्द भरी होती थी वो एक फाँसी जिसके लगते ही वीर क्रांतिकारी स्वयं तो बुझ जाते परन्तु अपने सीने की लौह दूसरों के सीने में सुलगा जाते थे। न जाने कितनी लाशें बिछी कितनी माताओं ने पुत्र रत्नों को खो दिया कितनी स्त्रियों ने अपना शृंगार खोया और न जाने कितनी बहनों ने अपनी राखियाँ खो दी, रक्तपात की इस भीड़ में कितनी लाशें बिछ गयी। तब जाकर कहीं 200 साल बाद हमारा प्यारा वतन आजाद हुआ।

आजादी की इस राह पे चलते–चलते अनगिनत बलि चढ़ गई। परन्तु बिडंवना बड़ी गहरी है कि सच्चे अर्थों में पूर्णतः देश आजाद नहीं। क्या फायदा

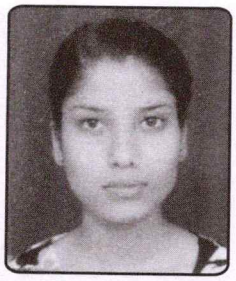

हुआ ऐसी आजादी से, जिसमें अभी भी विदेशी सभ्यता की मिलावट है। बेचारे क्रांतिकारी भी सोचते होंगे हमने भी किन पत्थर दिल भारतीय लोगों के लिएअपनी जान दे दी जब इन्हें एक दिन विदेशी सभ्यता को ही संवारना था, तो क्यों हम फाँसी पर चढ़ गए इन लालची लोगों के लिए जो अपनी देश के लिए कम विदेश के लिए ज्यादा मरते हैं।

शब्द कड़वे हैं किन्तु मिथ्या नहीं। मेरी मनसा किसी के मन को ठेस पहुँचाने की नहीं है और जहाँ तक देखा जाए तो आज की युवा पीढ़ी भारत में जन्म लेने के पश्चात् भी विदेश में जाकर उसे उन्नत बनाने की चाह रखती है और बड़ी ही निर्ममता से कुचल जाते हैं उस भूमि को जो कभी उनकी सब सुविधा का ध्यान रखा करती थी। शायद यही कारण है कि आज हमारा देश हर रुप में सक्षम होते हुए भी सिर्फ विकासशील पथ पर अग्रसर है पूर्णतः विकसित नहीं।

–तुलसी सावंत
बी.कॉम प्रथम सेमेस्टर

एक दीदार....

आसमान पर छाते ही चाँद सितारों का पहरा
मन में एक ख्याल रोज है आता असलियत में
न सही सपनों में मनमीत का दीदार हो जाता।
दिनभर ऐसे तपते हैं उस मोहन की याद में जैसे
पूरे दिन सूरज तपता। दिनभर विरह की अग्नि
में तपते इस शरीर को रात की ठण्डी पवन जब
शीतल है करती तो मन में आशा के फूल है
खिल उठते और मन में ख्याल है आता असलियत
में न सही सपनों में मनमीत का दीदार हो जाता।
दिन की अशांति जब मन को व्यथित है करती, तब
रात की शांति हाथ पकड़कर अपने साथ है ले जाती,
और कहती व्यथीत न हो सखी, उसके इस दिलासे
से, मन में ख्याल है आता असलियत में न सही
सपनों में मनमीत का दीदार हो जाता।
दिन को उजाले में मतलब से भरी इस दुनिया को
देखकर जब रो उठती है ये आँखें तब दबे पांव
आकर, रात का अंधेरा है कहता व्यर्थ न कर अपने
इन आंसुओं को इस मतलबी दुनिया के खातिर,
आँसुओं से भरी अपनी इन आँखों को बंद करके
देख एक सुन्दर दुनिया तेरा इंतजार है करती, उसकी
इन बातों को सुनकर मन में उमंग है जागती और
फिर से मन में ख्याल है आता, असलियत में
न सही सपनों में मनमीत का दीदार हो जाता।

–तुलसी सावंत
बी.कॉम प्रथम सेमेस्टर

कितने खुश है हम ?

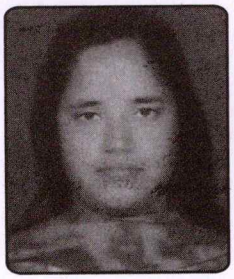

आनंद, उत्साह, उमंग, उल्लास या खुशी के बिना मानव जीवन का कोई अर्थ नहीं होता है। ये सभी शब्द वह भाव हैं जिनसे मन प्रफुल्लित हो जाता है, बुझे हुए चेहरों पर रौनक आ जाती है और सुख की अनुभूति होती है। खुश रहने के लिए किसी साधन अथवा वस्तु की आवश्यकता नहीं है। केवल निःस्वार्थ स्नेह तथा लगाव ही आवश्यक होते हैं। खुशी अनमोल होती है जिसे धन के पैमाने पर मापना मूर्खता का परिचायक है। हमारी सोच तथा मानसिकता जैसी होती है, वैसी ही चीजें हमें प्रकृति से प्राप्त होती हैं। लालच, ईर्ष्या, स्वार्थ, भय ये सब मन में तनाव पैदा करते हैं, जबकि किसी के लिए कुछ करना, अपने मन को स्वतंत्र रखना और छल–कपट–कुटिलता से दूर रहना ही जीवन को सुखी बनाता है। यही कारण है कि आज खुशी की प्रासंगिकता तथा खुशी का आंकलन वैश्विक स्तर पर प्रमुख मुद्दा बन चुका है।

सम्पूर्ण विश्व में 20 मार्च का दिन **"खुशी का अंतर्राष्ट्रीय दिवस"** के रुप में मनाया जाता है। वर्ष 2012 से संयुक्त राष्ट्र की पहल पर इस विशेष दिवस का आयोजन प्रारंभ हुआ। जन–कल्याण तथा खुशी के महत्व को पहचानते हुए जुलाई 2011 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रस्ताव पारित कर 20 मार्च को खुशी का अंतर्राष्ट्रीय दिवस घोषित किया गया। परंतु यह प्रस्ताव सर्वप्रथम भूटान के द्वारा लाया गया था। भूटान वह देश है जिसने राष्ट्रीय आय की तुलना में राष्ट्रीय खुशी को अधिक मूल्यवान समझा और इसी क्रम में सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product) की अपेक्षा सकल राष्ट्रीय खुशी (Gross National Happiness) का महान लक्ष्य धारित किया। **'खुशी'** का इतिहास यहीं से प्रारंभ नहीं होता, बल्कि यह तो 2,500 वर्षों से भी अधिक समय से चला आ रहा है। गौतम बुद्ध, सुकरात, अरस्तु तथा कन्फ्यूशियस जैसे महान चिंतकों और दार्शनिकों ने अपना जीवन इसी विषय को समर्पित किया। मानव जीवन की श्रेष्ठता–निर्धारण का आधार 'खुशी' पर निर्भर करता है।

इसी संदर्भ में Sustainable Development Solutions Network (SDSN) के द्वारा प्रत्येक वर्ष 20 मार्च को World Happiness Report जारी की जाती है, जिसका उद्देश्य है कि 'सामाजिक तथा आर्थिक विकास की प्राप्ति तथा मापन के लिए खुशी और कल्याण को अधिक महत्व देना'। सर्वप्रथम 01 अप्रैल, 2012 को इस रिपोर्ट को Center for Economic Performance (जो London School of Economics में स्थित है) तथा Canadian Institute for Advanced Research की सहायता से Columbia University के Earth Institute में तैयार किया गया था। तब से लेकर आज तक इसमें मुख्य आर्थिक सहायता Ernesto Illy Foundation तथा Illycaffe के द्वारा दी जाती रही है। यद्यपि, इन रिपोर्टों में विस्तृत Data को आधार बनाया जाता है, परंतु सबसे प्रमुख स्त्रोत होता है Gallup World Poll/ इसी क्रम में वर्ष 2020 में 20 मार्च को आठवीं रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। जिसके कुछ प्रमुख अंश, निष्कर्ष तथा तथ्य यहाँ प्रस्तुत हैं।

वर्ष 2020 की रिपोर्ट में कुल 153 देशों की खुशी के स्तर की स्थिति व रैंकिंग प्रदर्शित की गई है। जिसके लिए 2017–2019 इन देशों की रैंकिंग का आधार हैं। यह छः मानक हैं–

1. प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (GDP per capita)
2. सामाजिक समर्थन अथवा सहारा (Social Support)
3. स्वस्थ जीवन प्रत्याशा (Healthy life expectancy)
4. स्वतन्त्रता (Freedom)
5. उदारता (Generosity)
6. भ्रष्टाचार की अनुपस्थिति (Absence of Corruption) यहाँ पर उपरोक्त मानकों का स्पष्टीकरण भी आवश्यक है। GDP per Capita को Purchasing Power Parity (PPP) अर्थात् क्रय–शक्ति समता के रुप में व्यक्त किया गया है। स्वस्थ जीवन प्रत्याशा के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के आँकड़े आधार बनाए गए हैं। शेष मानकों का मापन Gallup World Poll में सम्मिलित संबंधित आधार प्रश्नों के द्वारा किया गया है, जो इस प्रकार है–

मानक	आधार प्रश्न	मूल्यांकन
• सामाजिक समर्थन	यदि आप मुसीबत या संकट में हैं तो क्या आपके परिवार–जन रिश्तेदार या दोस्त ऐसे हैं जिनपर आप भरोसा करते हैं कि जब भी आपको आवश्यकता होगी वे मदद करेंगे?	हाँ या नहीं
• स्वतंत्रता	अपने जीवन के साथ आपको क्या करना है, इसकी सम्पूर्ण स्वतंत्रता आपके पास है?	हाँ या नहीं
• उदारता	क्या आपने पिछले महीने किसी चैरिटी को धन दान किया है?	हाँ या नहीं
• भ्रष्टाचार	क्या भ्रष्टाचार सम्पूर्ण सरकार में व्याप्त है? (जहाँ सरकारी भ्रष्टाचार के आँकड़ें नहीं हैं; वहाँ व्यवसाय में व्याप्त भ्रष्टाचार के दृष्टिकोण को आधार बनाया गया है) तथा क्या व्यवसायों/व्यापारों में भ्रष्टाचार व्याप्त है?	हाँ या नहीं

इतना ही नहीं Gallup World Poll की प्रश्नावली में ये 14 कोर क्षेत्र भी सम्मिलित होते हैं–
1. व्यापार तथा आर्थिक तंत्र, 2. नागरिक संलिप्तता, 3. संचार/संपर्क तथा तकनीक, 4. विविधता (सामाजिक मुद्दे), 5. शिक्षा तथा परिवार, 6. भावनाएँ (कल्याण), 7. पर्यावरण तथा ऊर्जा, 8. आहार तथा आश्रय, 9. सरकार तथा राजनीति, 10. कानून व्यवस्था (सुरक्षा) 11. स्वास्थ्य, 12. धर्म तथा नैतिक आचरण, 13. परिवहन, 14. कार्य/रोजगार/आजीविका

उक्त रिपोर्ट के अनुसार सर्वोत्तम खुशी वाले शीर्ष देश हैं–1. फिनलैण्ड, 2. डेनमार्क, 3. स्विटजरलैंड, 4. आईसलैंड, 5. नॉर्वे, 6. नीदरलैंड, 7. स्वीडन, 8. न्यूजीलैंड, 9. ऑस्ट्रिया, 10. लक्जमबर्ग, 11. कनाडा, 12. ऑस्ट्रेलिया, 13. यूनाइटेड किंगडम (UK), 14. इस्त्राइल, 15. कोस्टा रीका, 16. आयरलैंड, 17. जर्मनी, 18. संयुक्त राज्य (US), 19. चेक रिपब्लिक, 20. बेल्जियम

वहीं निचले 20 देशों का क्रम इस प्रकार है–

रैंक	देश	रैंक	देश
153	अफगानिस्तान	143	लिसोथो
152	दक्षिण सूडान	142	हैती
151	जिम्बाब्वे	141	जाम्बिया
150	रवाण्डा	140	बुरुण्डी
149	सेंट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक	139	सियेरा लियोन
148	तंजानिया	138	मिस्त्र
147	बोट्स्वाना	137	मेडागास्कर
146	यमन	136	इथियोपिया
145	मलावी	135	टोगो
144	भारत	134	कोमोरोस

नोट–153 रैंक पर अफगानिस्तान सबसे निचले स्थान/खराब स्थिति पर हैं।

भारत और इसके पड़ोसी देशों की तुलनात्मक स्थिति अग्रलिखित है–

रैंक	देश	रैंक	देश
144	भारत	94	चीन
133	म्यांमार	92	नेपाल
130	श्रीलंका	66	पाकिस्तान
107	बांग्लादेश		

वर्ष 2019 की रिपोर्ट के अनुसार, भूटान 95वीं रैंक पर था, किंतु वर्ष 2020 के लिए भूटान के आंकड़े उपलब्ध नहीं हो सके थे।

विशेष रुप से 2020 की World Happiness Report में पहली बार 186 महानगरों की रैंकिंग भी प्रस्तुत की गई है। कुछ मुख्य महानगरों की रैंकिंग इस प्रकार हैं–

रैंक	महानगर (देश)	रैंक	महानगर (देश)
1	हेलसिंकी (फिनलैंण्ड)	48	मैड्रिड (स्पेन)
2	आरहस (डेनमार्क)	55	बार्सिलोना (स्पेन)
3	वेलिंगटन (न्यूजीलैंड)	56	मेट्रो बैंकाक (थाईलैंड)
4	ज्यूरिक (स्विटजरलैंड)	79	टोक्यो (जापान)
5	बर्जन (नॉर्वे)	84	शंघाई (चीन)
10	ब्रिसबेन (ऑस्ट्रेलिया)	105	काठमाण्डू (नेपाल)
18	वांशिंगटन (USA)	117	कराची (पाकिस्तान)
20	सिडनी (आस्ट्रेलिया)	122	लाहौर (पाकिस्तान)
25	शिकागो (USA)	134	बीजिंग (चीन)
30	न्यूयॉर्क (USA)	170	कोलम्बो (श्रीलंका)
35	आबूधाबी (UAE)	177	काहिरा (मिस्त्र)
36	लंदन (UK)	180	दिल्ली (भारत)
43	पेरिस (फ्रांस)	186	काबुल (अफगानिस्तान)

इसके साथ–साथ यदि पूर्व की रिपोर्टों को देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि फिनलैंड लगातार तीन बार से प्रथम स्थान पर बना हुआ है अर्थात् वह विश्व में सर्वाधिक खुश नागरिकों वाला देश है। वहीं यदि भारत

की स्थिति को देखें तो पता चलता है कि भारत की रैंक लगातार गिरती चली जा रही है। पूर्ववर्ती रिपोर्टों में भारत की रैंकिंग इस प्रकार है–

वर्ष	भारत की रैंक
2015	117
2016	118
2017	122
2018	133
2019	140
2020	144

अपने पड़ोसी देशों की तुलना में भारतीयों की ही सबसे खराब स्थिति दिखाई देती है।

मेरे विचार में खुशी के पैमाने पर लगातार खराब होती भारत की स्थिति के लिए कुछ निम्न प्रमुख कारक जिम्मेदार हैं–

गिरता मानव–मूल्य, राजनीतिक निजी स्वार्थ और जनता के प्रति उदासीनता व असंवेदनशीलता, प्रशासनिक व राजनयिक भ्रष्टाचार, समाज में बढ़ती हुई धन लोलुपता व आर्थिक असमानता, सामाजिक एकता तथा सौहार्द्र का अभाव, निरंतर बढ़ता हुआ धार्मिक उन्माद तथा कट्टरपंथी विचारधारा, वर्गभेद, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का ह्रास, देशभक्ति व देशद्रोह की कई परिभाषाएँ, नागरिकों के संवैधानिक व लोकतांत्रिक अधिकारों पर कुठाराघात, घटती हुई आजीविका तथा इसके स्रोत इत्यादि। उपरोक्त कारकों के साथ कोरोना (COVID-19) की उपस्थिति ने भी परिस्थितियों को और अधिकर विषम तथा जटिल बना दिया है।

इसके साथ ही आशा है कि आने वाली 2021 की World Happiness Report में भारत और विश्व की स्थिति में सुधार हो। यह दुःखद है कि अभी तो हमारे देश में राजनेता जनता की खुशी के बारे में कुछ करना तो दूर, सोच भी नहीं रहें हैं। ऐसे में हम नागरिकों के लिए आवश्यक हो जाता है कि सतर्क रहें, जागरुक बनें और सामाजिक समरसता में अपना योगदान दें। तभी एक खुशहाल व्यक्ति, खुशहाल समाज और खुशहाल देश की कल्पना साकार हो पाएगी। इसलिए खुश रहने से आपका स्वास्थ्य ही नहीं, अपितु आपकी मानसिकता और समाज भी लाभान्वित होते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है कि आप वही दूसरों को देते हैं जो आपके पास होता है, आपके अंदर होता है–तो सोचिए–दूसरों को देने के लिए आपके पास क्या है, खुशियाँ या दुःख?

–डा० सुगन्धा वर्मा
वाणिज्य विभाग

हिन्दी दिवस

हिन्दी हूँ मैं
क्योंकि ये हिंदुस्तान मेरा है,
खुशकिस्मत हूँ मैं क्योंकि
ये जहान मेरा है।
गर्व हो जिस देश का
देशवासी होने पर,
ऐसा देश ये
हिंदुस्तान मेरा है।
त्यौहारों की शान है, एकता की जान है,
हिंदी भाषा ही तो एक अपने हिंदुस्तान की पहचान है।
हमारी मान है हिंदी, हमारी शान है हिंदी,
आ जाए आसानी से समझ ऐसी जुबान है हिंदी।
अंग्रेजी, जर्मन व फ्रैन्च के शब्द भाषा में ऐसे घुल से गये हैं,
मानो जैसे अपनी भाषा हिन्दी की कीमत ही भूल से गये हैं।
जिस देश का गौरव व अपनी ही एक अभिलाषा है,
हिन्दी ही तो हिंदुस्तान की अपनी एक मातृभाषा है।
जहाँ नारियों का शृंगार हैं सिंदूर व बिन्दी,
उसी देश की सरल व शोभनीय भाषा है हिन्दी।

–कृष्णा सिंह
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

आज का महत्व

कल न कभी आया है
कल न कभी आएगा,
जो इस पर निर्भर रहेगा
जीवन भर पछताएगा।
कल की छोड़ो आज को देखो
आज बहुत कुछ दिखलाएगा
कभी न इसको छोटा समझो
यह तुमको मंजिल तक
पहुँचाएगा।
कोई काम न समझो ऐसा
जिसको तुम न कर पाओगे,
आज करो, उसे अभी करो
देखो फिर मंजिल तुम पाओगे।
थोड़ी सी हिम्मत करके
थोड़ी से मेहनत करके
देखना तुम कितना ऊपर उठ जाओगे
आज का महत्व तभी तुम जान पाओगे।

–साक्षी
बी.कॉम प्रथम सेमेस्टर

प्राचीन भारत की क्रीड़ाएँ

वर्तमान पीढ़ी के बच्चे क्रिकेट, फुटबॉल, टेबल टेनिस इत्यादि खेलों से ही विशेषतया परिचित हैं और अपने जीवनकाल में प्रायः उन्हीं खेलों से मनोरंजन करते हैं। आधुनिक खेलों के इस बादल ने हमारे प्राचीन काल के अनेक सुन्दर स्वास्थ्यवर्द्धक खेलों को पूर्णरुपेण ढ़क दिया है। बहुत सम्भव है कि आगे आने वाली हमारी पीढ़ी को पुराने खेलों के नाम भी याद न रहे। इस खेल में अति संक्षेप में प्राचीनकाल के कुछ प्रचलित अथवा प्रमुख खेलों पर प्रकाश डाला है।

नेत्र बन्ध क्रीड़ा–एक प्राचीन प्रचलित मनोरंजक खेल है। इसमें विशेष सीमा के अन्तर्गत आँखों पर पट्टी या कपड़ा बाँधकर कोई भी एक खिलाड़ी दूसरे खिलाड़ी को छूने का प्रयास करता है। इस खेल का एक रुप यह भी था कि एक खिलाड़ी पहले कुछ समय तक आँखें बन्द करता था। इस बीच सभी खिलाड़ी छुप जाते थे तत्पश्चात् उस खिलाड़ी को सभी को खोजना पड़ता था। इसी बीच यदि छुपे हुए बच्चे में से कोई भी उस दाम देने वाले बच्चे को छू लेता था। तब उसे पुनः उसी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था। खेल की भाषा में इसे दाम देना कहा जाता है।

चोर कोतवाल क्रीड़ा–चोर कोतवाल क्रीड़ा में कुछ खिलाड़ी चोर और कुछ कोतवाल बनते थे। कोतवाल बने हुए खिलाड़ियों को चोर बने हुए खिलाड़ियों को ढूँढ़ना होता था। इसी क्रीड़ा के रुप का वर्णन श्रीमद्भागवत् गीता में है जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने वस्त्रहरण में खेला था।

वीरा क्रीड़ा–गिल्ली–डण्डे का खेल है। इसका वर्णन महाभारत में हैं।

बिल्व प्रक्षेपण क्रीड़ा–इसके अन्तर्गत बिल्व के फल को गेंद की भाँति उपयोग करते हुए उछाल–उछाल कर दूसरे खिलाड़ी की ओर फेंका जाता था जिसे वह झेलता था। इस खेल से हाथ–पैर के साथ–साथ नेत्रों के त्राटक की भी प्रेक्टिस होती थी।

दोलिका क्रीड़ा–इसमें पेड़ों पर थोड़ी–थोड़ी दूर पर रस्सियाँ लटकाते थे तथा खिलाड़ियों को एक–एक रस्सी से झूलते हुए विभिन्न रस्सियों को पार करना पड़ता था।

जल क्रीड़ा–इसमें खिलाड़ी नदी के किनारों पर स्थित वृक्ष पर चढ़कर उन पर से जल में कूदते थे तथा जल में एक दूसरे पर जल उछालते थे तथा स्त्री पुरुष दोनों में यह खेल प्रचलित था। इन्हीं क्रीड़ाओं में तैराकी, जल पर श्वांस रोककर पड़े रहना, जल में गेंद खेलना शामिल था।

नृत्य क्रीड़ा–इसके अन्तर्गत बच्चे ताली बजा कर नाचते कूदते थे और छालिक्य क्रीड़ा में मस्त होकर होली के दिनों की भाँति गाते बजाते थे।

गदा क्रीड़ा–इसमें नकली गदाओं के द्वारा युद्ध किया जाता था। इसके विपरीत नकली युद्ध क्रीड़ा में कुश्ती लड़ी जाती थी अथवा घूंसे से नकली युद्ध किया जाता था।

बाधिकंदुक क्रीड़ा–इसमें घोड़े की पीठ पर आसीन होकर गेंद को एक निश्चित विपरीत नियुद्ध क्रीड़ा में सीमा तक धकेलना पड़ता था। इस क्रीड़ा का वर्णन गीतावली में है जबकि गजकन्दुक क्रीड़ा हाथी की पीठ पर बैठकर खेली जाती थी। आजकल का 'पॉलो खेल' इसी का रुप है।

वृक्षारोहण–इसमें वृक्षों पर चढ़ने की होड़ होती थी तो श्रृंग–रोहण में किसी पहाड़ पर चढ़कर और उतरकर प्रारम्भ बिन्दु पर प्रथम पहुँचने का खेल होता था। इन सभी खेलों में मस्तिष्क एवं माँस पेशियों की उत्तम कसरत होती थी।

लक्ष्य बाण क्रीड़ा–इसमें बाण की सहायता से किसी लक्ष्य पर बेधन करना पड़ता था। इसी से मिली जुली क्रीड़ा में एक विशाल भाले को अधिकाधिक दूर फेंका जाता था। ये क्रीड़ाएं आज भी प्रचलित हैं।

आमलक मुष्टयादि क्रीड़ा–इसमें मुटठी में किसी वस्तु को बन्द करके एक खिलाड़ी दूसरे को कुछ संकेत करता था। संकेतों के आधार पर दूसरे के द्वारा न बताये जाने पर उसे एक मुक्का प्रथम खिलाड़ी द्वारा मारा जाता था।

मण्डुक क्रीड़ा–इसमें मेंढ़कों की भाँति उचक उचक कर किसी लक्ष्य तक पहुँचने का खेल खेला जाता था। एकल पाद क्रीड़ा में एक पाँव से कूदकर खिलाड़ियों को छूना पड़ता है।

–स्कन्द पालीवाल
बी.कॉम तृतीय वर्ष

मेरे सपनों का भारत : स्वच्छ भारत

भारत प्राचीन काल से ही एक स्वच्छता प्रिय देश रहा है। किन्तु जनसंख्या, अज्ञानता और शहरीकरण की अनंत वृद्धि के कारण भारत स्वच्छता के क्षेत्र में पिछड़ता चला गया और इसकी एक अस्वच्छ देश की भ्रांत छवि बन गई, किन्तु अब एक नये भारत का शुभारम्भ हो चुका है। हम सभी को भारत की प्राचीन छवि को पुर्नजीवित करने के लिए प्रयासरत होना होगा। सरकार द्वारा चलाये गये 'स्वच्छ भारत अभियान' की संदेहास्पद सफलता यही प्रमाणित करती है कि इस अभियान में आम जनता का सहयोग न के बराबर ही रहा है।

हम एक बहुत बड़ी जनसंख्या वाले लोकतांत्रिक देश का हिस्सा हैं और हमें यह स्वीकार करना होगा कि इतनी बड़ी जनसंख्या वाले देश में सिर्फ सरकार द्वारा चलाये गये स्वच्छता अभियान ही पर्याप्त नहीं हैं। यह हमारा देश है और इसकी स्वच्छता का दायित्व हमारा भी है। हमारे प्रधानमंत्री महोदय के अनुसार–**देश की सफाई, एकमात्र सफाई कर्मियों की जिम्मेदारी नहीं है क्या इसमें नागरिकों की कोई भूमिका नहीं है? हमें इस मानसिकता को बदलना होगा।....नरेन्द्र मोदी**

स्वच्छता अभियान नागरिकों के व्यक्तिगत विकास एवम् देश के समग्र विकास को बढ़ावा देने की सर्वोत्तम पहल है। अस्वच्छ वातावरण में बीमारियों के फैलने की आशंका भी कई गुना बढ़ जाती है। अस्वच्छता के कारण ही हमारे देश को हर वर्ष कई घातक बीमारियों जैसे डेंगू, मलेरिया, हैजा और डायरिया आदि का प्रकोप सहना पड़ता है। यदि हम अपने आस–पास के वातावरण को साफ रखेंगे तो इन बीमारियों से बचा जा सकता है। कोरोना–19 जैसी महामारी से निपटने के लिए भी स्वच्छता अति महत्वपूर्ण है।

सम्पूर्ण देश में गंदगी के सबसे बड़े कारणों में से एक पॉलीथीन और डिस्पोजेबल पदार्थों का अत्यधिक प्रयोग है। पॉलीथीन एक ऐसा पदार्थ है जिसका क्षय होना लगभग असंभव है। पॉलीथीन के प्रयोग के दुष्परिणाम से सभी लोग भली–भाँति अवगत हैं–जैसे पॉलीथीन को नष्ट करने के लिए जलाने पर अत्यधिक हानिकारक गैस निकलती है एवं पॉलीथीन यदि मिट्टी में दबाई जाए तो यह उस मिट्टी को बंजर बना देती है। कई बार गाय, भैस आदि कूड़े के ढ़ेर में से खाने के पदार्थ के साथ पॉलीथीन का सेवन कर लेते हैं जो उनकी मृत्यु का कारण बनता है। अतः हमें यह विशेष ध्यान रखना चाहिये कि हम अपने दैनिक कार्यों के लिए पॉलीथीन का प्रयोग न के बराबर करें जैसे बाजार जाते समय थैला लेकर जायें, डिस्पोजेबल बर्तनों के स्थान पर मिट्टी के कुल्हड़ या केले के पत्तों की प्लेटों का प्रयोग करें। यदि हर व्यक्ति अपने स्तर पर यथासंभव स्वच्छ वातावरण बनाने की चेष्टा करे तो हमारा देश भी जल्द ही स्वच्छ देशों की सूची में शुमार हो जाएगा। अंत में मैं यही कहना चाहूँगी कि स्वच्छता में ही लक्ष्मी का वास होता है जो कि किसी देश की वास्तविक समृद्धि का परिचायक होती है। इसीलिए हमें अपने भारत देश को स्वच्छ रखने का प्रयास करना चाहिए।

–डॉ० पदमावती तनेजा
शिक्षिका विज्ञान संकाय गणित विभाग

प्रकृति

हरी–हरी खेतों में,
बरस रही हैं बूंदे
खुशी–खुशी से आया सावन
भर गया मेरा आँगन
ऐसा लग रहा है जैसे
मन की कलियाँ खिल गयी वैसे।
ऐसा कि आया वसंत
लेके फूलों का जश्न।
धूप से प्यासी मेरे तन को,
बूंदों ने दी ऐसी अँगड़ाई
कूद पड़ा मेरा तन–मन
लगता है मैं हूँ एक दामन।
यह संसार है कितना सुंदर
लेकिन लोग नहीं उतने अकलमंद
यही है एक निवेदन
न करो प्रकृति का शोषण।

–✤–

हिन्दी साहित्यकारों की नजर में हिंदी

हिन्दी साहित्यकारों का भाषा के प्रति लगाव स्वभाविक है, क्योंकि हिन्दी विश्वविख्यात भाषा है। हिन्दी के विख्यात साहित्यकार हिन्दी के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार प्रकट करते हैं–

1. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है।
–महावीर प्रसाद द्विवेदी
2. हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है। **–सुमित्रानन्दन पंत**
3. हिन्दी तोड़ने वाली नहीं जोड़ने वाली है।
–रामधारी सिंह दिनकर
4. हिन्दी का उद्देश्य यही है, भारत एक रहे अभाज्य।
–मैथिली शरण गुप्त
5. हिन्दी हमारी मातृभाषा ही नहीं, अपितु यह देश की आत्मा की आवाज है।
–डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'
6. हिन्दी से किसी भी राष्ट्र को डर नहीं यह सबकी सहोदर है। **–महादेवी वर्मा**
7. राष्ट्रभाषा हिन्दी देश की जागरुकता तथा उद्बोधन की प्रतीक है।
–सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

उम्मीदों से भरी कुछ बातें

अपना व्यवहार ऐसा बनाओ,
कि कोई बुराई भी करे, तो विश्वास न हो।
चिंता केवल इतनी करो कि, काम हो जाए,
इतनी नहीं कि जिंदगी तबाह हो जाए।
पत्थर की मूर्तियों से भी सीख लो जीने का तरीका
भगवान बनने से पहले पत्थर बनना ही पड़ता है।
नादान इंसान ही जिन्दगी का आनंद लेता है;
होशियार तो बस उलझा लेता है।
तुम यह मत देखो कि कोई शख्स गुनहगार है कितना
बस इतना देखो तुम्हारे साथ वफादार है कितना।
ऐसी बुलंदियाँ भी किस काम आती है
जहाँ इंसान चढ़ता है और इंसानियत उतर जाती है।
सामने हो मंजिल, तो रास्ते मत मोड़ना,
जो भी मन में हो वो सपने मत तोड़ना।
कदम–कदम पर मिलेगी मंजिल आपको,
बस सितारे छूने के लिए, जमीं मत छोड़ना।

–प्रियंका बहल
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

आज तिरंगा ऊँचा लहरा रहा है

आज तिरंगा ऊँचा लहरा रहा है,
दुनिया भर में भारत जाना जा रहा है,
विज्ञान, खेल, फिल्म जगत में,
अपना नाम बना रहा है।
स्मरण करो उन देशभक्तों का,
हो नेहरु, सिंह या महात्मा,
कुर्बानी के लिए सदैव तैयार,
इन्हीं से बना भारत महान।
आज फिर आजादी का जश्न मना रहा है,
आज तिरंगा ऊँचा लहरा रहा है।
देश की रक्षा करते–करते
हैं रोज अनेकों सैनिक मरते
चोटिल होते, लहु बहाते, फिर भी
कदम न उनके थमते।
दुश्मन का दिल काँप रहा है,
आज तिरंगा ऊँचा लहरा रहा है।
भेद–भाव न मिलता यहाँ हैं
सब आपस में भाई,
प्रेम भाव से निवास करता
चाहे हिन्दू, मुस्लिम या ईसाई।
सभी धर्मों का आपसी प्रेम बढ़ रहा है,
आज तिरंगा ऊँचा लहरा रहा है।
खेल के महारथी हैं ये भारत के शेर
भारत को गौरवान्वित करते इस धरती की देन।
आज भारत सबको धूल चटा रहा है
आज तिरंगा ऊँचा लहरा रहा है।
न फूलों से, न चंदन से,
न किसी दीया और बाती से
तिलक होता है हम सबका
धरती की पावन माटी से।
आज हर भारतीय सर ऊँचा कर चल रहा है
आज तिरंगा ऊँचा लहरा रहा है।

–कीर्ति शर्मा
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

सपनों का भारत

आजादी के साल हुए कई
पर क्या हमने पाया है
सोचा था क्या होगा लेकिन
सामने पर क्या आया है।
रामराज्य सा देश हो अपना
बापू का था सपना
चाचा बोले आगे बढ़कर
कर लो सबको अपना।
आजादी फिर छिने ना अपनी
दिया शास्त्री ने नारा
जय–जयकार किसान की
अपनी जय–जवान हमारा।
सोचो इन सपनों को हम
कैसे साकार करेंगे
भ्रष्टाचार हटा देंगे हम
आगे तभी बढ़ेंगे।
मुश्किल नहीं पूरा करना
इन सपनों का भारत
अपने अंदर की शक्ति को
करो अगर तुम जागृत।
आओ मिलकर कसम ये खाए
ऐसा सभी करेंगे।

–आशी कश्यप
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

मैं गंगा हूँ

मैं गंगा हूँ,
निर्मल अविरल मेरी धारा
मुझमें डुबकी लगाता
ये जग सारा
सदियों से मैंने पापियों के
पाप को तारा
मुझे प्रदूषित ना कर
मानव ये ही मेरा नारा
जल है ये अमृत,
नहीं है ये खारा
मैं गंगा हूँ,
निर्मल अविरल मेरी धारा।

–रिया शर्मा
बी.कॉम पंचम सेमेस्टर

माँ

लिखना बहुत चाहा पर लिख नहीं पायी
शब्द ही नहीं।
दु:खों से पालती माँ
आँखों में कभी आसूँ नहीं देखती माँ।
बचपन में हाथ पकड़कर चलना सिखाती माँ।
लोरी गाकर सुलाती माँ
हर दु:ख में मेरी शक्ति बन जाती माँ
कोई ऐसा जिसका अहसान कोई नहीं चुका सकता।
आखिर हैं; वो हम सबकी माँ
हर दु:ख में मेरी शक्ति बन जाती माँ।
जिसके आसुँओं का मोल कोई नहीं चुका सकता
यही है, सच्ची ममता।
हमारे हर सपने को करती पूरा
आखिर है; वो हम सबकी माँ।

जिसकी ममता का किसी से
मोल नहीं किया जा सकता
गलती करने पर डाँटती माँ
पर सच्ची राह दिखाती माँ
हर दु:ख में मेरी शक्ति बन जाती माँ
हर दु:ख में मेरा साथ देती माँ
कठिनाइयों से लड़ना सिखाती माँ।
सच्ची सीख हमें देती माँ
हर दु:ख में मेरी शक्ति बन जाती माँ
मेरे मन से डर को दूर भगाती माँ
हार के भी मुझे जीतना सिखाती माँ
हर दु:ख में मेरी शक्ति बन जाती माँ।

–मोनिका
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

अगर कुछ बनने की आशा है

कुछ बनने की आशा के लिए कर्म करते रहना
याद रहे विश्राम न टूटें, कुछ बनने की आशा न टूटे
मंजिल की तलाश के लिए हर सीढ़ी चढ़ते रहना
आँधी आएँ, तूफान आएँ, कदम तुम्हारे न डगमगाएँ
बस यही उम्मीद के लिए, उन्नति के स्वप्न सजाएँ रहना,
कोई तुम्हें कितना टोके रास्ता तुम्हारा लाख रोकें
तमन्नाओं को साथ लिए, राह अपनी देखते रहना।

–किरण
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

प्रेरक प्रसंग

खुद को इतना महफूज मत रखा कर।
वक्त आने महफिल में उतर जाया कर॥

खुद से इतने बहाने मत बनाया कर.....
कुछ करने का जज्बा हो तो कर जाया कर.....

खुद पर इतना शक मत किया कर।
जब आंधी आए तो लड़ जाया कर॥

ये प्रकृति का खेल ही कुछ ऐसा है।
कि सूरज और चांद का वक्त ही ऐसा है॥
.....अरे आखिर जरा सोच के तो देख.....

उस सूर्य की प्रकाश में इतना तेज होता है,
कि वो मेघ भी अपना रुख मोड़ जाता है।
पर वक्त आने पर वो मेघ भी अपना रुप दिखा जाता है।
इतना मत सोचा कर वक्त आए तो कुछ कर जाया कर॥

इस वक्त की बहती नाव में, खुद को मत रोका कर,
जब आंधी आए तो मेघ को हटा जाया कर॥

अपनी सफलता को अकेला मत समझा कर,
जब वक्त अपना हो तो उस चांद को भी अपना लिया कर.....
.....अरे.....

खुद का इतना तिरस्कार मत किया कर.....
कभी वक्त हो तो खुद को पुरस्कार भी तो दिया कर.....

–✤–

जिंदगी

क्या पता? ये छोटी सी जिंदगी क्या चाहती है?
चाह कर भी इतना अकेला क्यों रखतीहै.....
अकेला रख कर भी महफूज नहीं रख पाती है।
.....आखिर.....

हर चीज पा कर भी क्या खोया है मैंने?
.....और.....

हर चीज पा कर भी क्या खोया है मैंने?
क्या पता? ये छोटी सी जिंदगी क्या चाहती है?

चाहत की इस दुनिया में.....
चाह तो है मगर चाहत नहीं.....
दर्द तो है मगर हमदर्द नहीं.....
जिंदगी तो है मगर जिंदा नहीं.....

क्या पता ये छोटी सी जिन्दगी क्या चाहती है।
उम्मीद तो बहुत रखती हूँ मैं इस जिंदगी से.....
पर क्या कुछ बच पाया है इस जिन्दगी में .....अरे..
आखिर जानती ही क्या है ये कमबख्त जिन्दगी
जानकर भी अंजान रहती है ये जिन्दगी.....

–अंजलि सिंह
बी.कॉम प्रथम सेमेस्टर

मैं लाख कह दूँ

मैं लाख कह दूँ कि आकाश हूँ जमी हूँ मैं,
मगर उसे तो खबर है कि कुछ नहीं हूँ मैं
अजीब लोग हैं मेरी तलाश में, मुझको
वहाँ पे ढूँढ़ रहे हैं जहाँ नहीं हूँ मैं।
मैं आईनयों से तो मायूस लौट आया था
मगर किसी ने बताया बहुत हंसी हूँ मैं।
वो जर्रे–जर्रे में मौजूद है मगर मैं भी
कहीं–कहीं हूँ कहाँ हूँ कहीं नहीं हूँ मैं।
वो इक किताब जो मंसूब तेरे नाम से है
उसी किताब के अन्दर कहीं–कहीं हूँ मैं।
सितारों आओ मेरी शह में बिखर जाओ
ये मेरा हुक्म है हालांकि कुछ नहीं हूँ मैं।
यही हुसैन भी गुजरे यही यजीद भी था
हजार रंग में डूबी हुई जमीं हूँ मैं।
ये बूढ़ी कब्रें तुम्हें कुछ नहीं बताएँगी
मुझे तलाश करो दोस्तों यही हूँ मैं।

–अंकित अग्रवाल
सहायक प्रोफेसर (कॉमर्स विभाग)

वक्त पर वक्त नहीं

हर खुशी है लोगों के दामन में,
पर एक हंसी के लिए वक्त नहीं।
दिन–रात दौड़ती दुनिया में,
जिन्दगी के लिए वक्त नहीं।
सारे रिश्तों को हम मार चुके,
अब उन्हें दफनाने का भी वक्त नहीं
सारे नाम मोबाइल में हैं,
पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं।
गैरों की क्या बात करें,
जब अपनों के लिए वक्त नहीं।
आँखों में है नींद भरी,
पर सोने का वक्त नहीं।
दिल में गमों से भरा हुआ,
पर सोने का भी वक्त नहीं।
पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े,
कि थकने का भी वक्त नहीं।
तू ही बता ऐ जिन्दगी,
इस जिन्दगी का क्या होगा?
कि हर पल मरने वालों को,
जीने के लिए वक्त नहीं।

–कीर्ति शर्मा
बी.कॉम चतुर्थ सेमेस्टर

जिन्दगी में सपने

जन्नत है जिन्दगी
महसूस करके तो देखो,
कुछ सपने अपनी आँखों में
सजा कर तो देखो।
कभी कुछ उलझनों से
लड़ कर तो देखो,
जिन्दगी में थोड़ा
आगे बढ़कर तो देखो।
कभी हार कर तो कभी जीत कर तो देखो,
कुछ सपने अपनी आँखों में सजा कर तो देखो।
कुछ सपने होंगे तो कुछ लगन होगी,
कहीं आशा तो कहीं निराशा होगी।
उगता सूरज सुबह है,
तो डूबता सूरज शाम है,
हमें तो आगे बढ़ना है,
क्योंकि जिन्दगी इसी का नाम है।
कभी जिन्दगी में आगे बढ़ कर तो देखो,
कुछ सपने अपनी आँखों में सजा कर तो देखो।
आँखों में नींद और सपने दोनों होते हैं,
हम सपनों में नींद तो नींद में सपने खोते है।
जगती आँखों से सपने देख नींद नहीं आती है,
सोती आँखों से सपने देख नींद नहीं जाती।
कभी उस नींद को भुलाकर तो देखो,
कुछ सपने अपनी आँखों में सजाकर तो देखो।

–शालिनी सिंह
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

सात बातें

1. जीवन में ऐसा कोई काम मत करना, जिसे दूसरों से छिपाने की इच्छा तुम्हारे मन में उठे, किसी बात को छिपाने की इच्छा तभी होती है जब तुम कोई गलत काम करते हो।
2. जीवन में यदि कोई भूल हो जाए तो उसे तुरन्त स्वीकार कर लेना ।
3. जीवन में सभी फैसले दिल और दिमाग के तालमेल से करना।
4. माता–पिता (विशेषकर माँ) का दिल कभी मत दुखाना, क्योंकि उनकी प्रार्थना में तुम हमेशा रहते हो।
5. बिना किसी भेदभाव के सबके साथ समान व्यवहार करना।
6. अपनी सोच को सही रखना, अच्छा सोचोगे, तो अच्छा निश्चित ही होगा।
7. चेहरे पर सदा सच्ची व सही मुस्कान रखना।

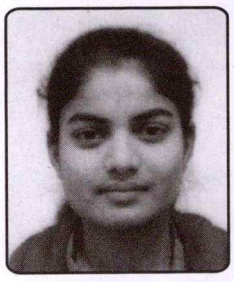

–किरण
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

भारतीय मीडिया भारतीय लोकतंत्र के लिए घातक क्यों?

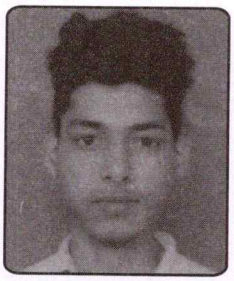

भारतीय लोकतंत्र की आधारभूत संरचना में विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका के साथ–साथ चौथा महत्वपूर्ण स्तंभ है–'मीडिया'। परन्तु 'मीडिया' जो कि पूर्णतः स्वतंत्र है, किसी भी पक्ष–विपक्ष, व्यक्ति विशेष से प्रश्न करने हेतु, परन्तु आज का मीडिया अपने आदर्शों से भटक सा गया है तथा अपने मूल अस्तित्व को खोने की कगार पर है। जिसका मुख्य कारण 'पेड न्यूज', 'पीत–पत्रकारिता' है। 'पेड न्यूज' के अन्तर्गत मीडिया को न्यूज का प्रसारण निष्पक्षता, यथास्थित न होकर व्यक्ति विशेष के पक्ष में होता है, अर्थात् पैसों के बल पर समाचार को मनोवांछित रुप दिया जाता है। 'पेड न्यूज' ने वर्तमान समय में मीडिया की निष्पक्षता पर संदेह की स्थिति को बनाया है उदाहरण–किसान आन्दोलन की कवरेज के लिए गये भारत के प्राथमिक मीडिया चैनल को किसानों ने साक्षात्कार देने से मना कर दिया था।

'पीत–पत्रकारिता'–पीत पत्रकारिता वह पत्रकारिता है जो मीडिया के निचले स्तर को दर्शाता है। इसके अन्तर्गत खबरों को बढ़ा–चढ़ा कर दिखाना एवं विज्ञापन आदि पर अधिक जोर दिया जाता है। साधारण शब्दों में 'पीत पत्रकारिता' जनता की मानसिकता को रुप देने में भूमिका निभाती है जो कि प्रायः चुनावों के समय आम बात सी हो गयी है। अतः लोकतंत्र का मुख्य स्तंभ ही आज लोकतांत्रिक चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित कर रहा है।

वर्तमान समय में भारतीय मीडिया विश्व रेंकिंग में 142 नम्बर में आता है जो कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के लिए बहुत ही चिंता का विषय है, क्योंकि मीडिया ही वह माध्यम है, जो लोगों की समस्याओं को सरकार के कानों में पहुँचाती है। परन्तु आज मीडिया पर समय–समय पर ईमानदारी से रिपोर्ट न करने एवं मीडिया को जरुरी मुद्दों के बजाय गैर जरुरी मुद्दों पर बात करना उन्हें उठाना आदि आरोप लगाए जा रहे हैं।

अतः आज का मीडिया पूंजीपतियों के अनुरुप कार्य कर केवल एक मनोरंजन का एवं पैसे कमाने का माध्यम बन गया है।

अतः हमारी भी भूमिका बनती है, कि ऐसे मीडिया का त्याग करें, जो लोकतंत्र को अपनी शक्तियों के द्वारा प्रभावित कर रही है।

–जीवन जोशी
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

कोरोना काल में पढ़ाई

था टीचर का ब्लैकबोर्ड, कभी ज्ञान का खजाना,
हुआ ये किस्सा पुराना, अब है मोबाइल का जमाना।
मिल जाते हैं मोबाइल पर ही गुरुजी,
कहते वहीं से तुम, पढ़ाई करो गुरुजी।
अब मोबाइल में टीचर, टीचर के पास मोबाइल,
देखते–देखते सारे स्टूडेन्ट करने लगे स्माइल।
बच्चे अब कर लेते हैं, वहीं से आज्ञा का पालन,
पढ़ाई के नाम पर होता, गेम का संचालन।
ऑनलाइन पढ़ाई से मम्मी पापा भी खुश,
नहीं पता वहीं से लूडो खेल रहा है उनका दुष्ट।
अब टीचर की डांट से भी बच्चे होते बड़े प्रसन्न,
क्योंकि टीचर को चुप करने का उनके पास है बटन।
टीचर मोबाइल से थोड़ा–थोड़ा ही पढ़ाएंगे,
नहीं तो बच्चे मोबाइल बंद करके भाग जाएंगे।
अब सारे टीचर मोबाइल पर ही पढ़ाएंगे,
मम्मी पापा भी खुश कि बच्चे घर बैठे ही कुछ कर दिखाएंगे।

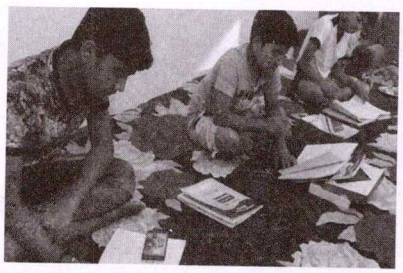

–सृष्टि कुशवाहा
बी. कॉम प्रथम सेमेस्टर

कुम्भ मेला

कुम्भ मेले में कुम्भ का शाब्दिक अर्थ 'घड़ा, सुराही, बर्तन' है। यह वैदिक ग्रंथों में पाया जाता है, इस अर्थ में अक्सर पानी के संदर्भ में या पौराणिक कथाओं में अमरता के अमृत के बारे में। कुम्भ या इसके व्युत्पन्न शब्द ऋग्वेद (1500–1200) ईसा पूर्व में पाए जाते हैं।

हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार, कुम्भ मेला एक महत्वपूर्ण और धार्मिक त्यौहार है जो 12 वर्षों के दौरान चार बार मनाया जाता है। त्यौहार का स्थान पवित्र नदियों के किनारे स्थित चार तीर्थ स्थलों के बीच घूमता रहता है। ये स्थान हैं–उत्तराखण्ड में गंगा पर हरिद्वार, मध्य प्रदेश में शिप्रा नदी पर उज्जैन, महाराष्ट्र में गोदावरी नदी पर नासिक और उत्तर प्रदेश में गंगा, यमुना और सरस्वती तीन नदियों के संगम पर प्रयागराज। कुम्भ मेला हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है जिसमें करोड़ों श्रद्धालु कुम्भ पर्व स्थल–हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में स्नान करते हैं। इनमें से प्रत्येक स्थान पर प्रति बारहवें वर्ष में इस पर्व का आयोजन होता है। मेला प्रत्येक तीन वर्षों के बाद नासिक, इलाहाबाद, उज्जैन और हरिद्वार में बारी–बारी से मनाया जाता है। इलाहाबाद में संगम के तट पर होने वाला आयोजन सबसे भव्य और पवित्र माना जाता है।

इस अवसर पर नदियों के किनारे भव्य मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें बड़ी संख्या में तीर्थ यात्री आते हैं। अतीत के कुम्भ मेले, विभिन्न क्षेत्रीय नामों के साथ, बड़ी उपस्थिति को आकर्षित करते हैं और ऐतिहासिक रुप से कुम्भ मेले भी प्रमुख व्यावसायिक कार्यक्रम में, अखाड़ों में नई भर्तियों की शुरुआत, प्रार्थना और सामुदायिक गायन। जो लोग प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के पवित्र जल में डुबकी लगाते हैं, वे सभी पापों से छुटकारा पा लेते हैं और मोक्ष प्राप्त करते हैं। यह त्योहार दुनिया के सबसे बड़े सार्वजनिक समारोहों में से एक है क्योंकि यह नदियों के पवित्र संगम–गंगा, यमुना और सरस्वती में स्नान करने के लिए 48 दिनों के दौरान करोड़ों तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है।

पूर्ण कुम्भ मेला–हर 12 साल में किसी दिए गए स्थान पर होता है।

अर्ध कुम्भ मेला–इलाहाबाद और हरिद्वार दो पूर्ण कुम्भ मेले के बीच लगभग 6 वर्षों में आता है।

–उत्कर्ष
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

जन–जन की भाषा है हिंदी

जन–जन की भाषा है हिंदी
भारत की आशा है हिंदी
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है
वो मजबूत धागा है हिंदी...
हिन्दुस्तान की गौरवगाथा है हिंदी...
एकता की अनुपम परम्परा है हिंदी...
जन–जन की भाषा है हिंदी...
भारत की आशा है हिंदी...
जिसके बिना हिन्द थम जाए
ऐसी जीवन रेखा है हिंदी...

जिसने काल को जीत लिया है
ऐसी कालजयी भाषा है हिंदी...
जन–जन की भाषा है हिंदी...
भारत की आशा है हिंदी...
सरल शब्दों में कहा जाए तो
जीवन की परिभाषा है हिंदी...
जन–जन की भाषा है हिंदी...
भारत की आशा है हिंदी...

–अर्चना
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

वक़्त

हर खुशी है लोगों के दामन में,
पर एक हंसी के लिए वक्त नहीं।
दिन–रात दौड़ती दुनिया में,
जिन्दगी के लिए वक्त नहीं।
माँ लोरी का अहसास तो है,
पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं।
सारे रिश्तों को तो हम मार चुके,
अब उन्हें दफनाने का भी वक्त नहीं।
सारे नाम मोबाईल में हैं,
पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं।
गैरों की क्या बात करें,
जब अपनों के लिए वक्त नहीं।
आँखों में है नींद बड़ी,
पर सोने का वक्त नहीं।
दिल है गमों से भरा हुआ,
पर रोने का भी वक्त नहीं।
पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े,
कि थकने का भी वक्त नहीं।
पराये अहसान की क्या कद्र करें,
जब अपने आपके लिए ही वक्त नहीं।
तू ही बता ऐ जिन्दगी,
इस जिन्दगी का क्या होगा।
कि हर पल मरने वालों को,
जीने के लिए भी वक्त नहीं।

–कार्तिक शर्मा
एम..कॉम प्रथम सेमेस्टर

कोशिश कर

कोशिश कर हल निकलेगा,
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा संधान,
मरुस्थल से भी जल निकलेगा।
मेहनत कर पौधों को पानी दे,
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा।
जिन्दा रख दिल में उम्मीदों को,
गरल के समन्दर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की,
जो है आज थमा–थमा सा चल निकलेगा।

–आरती रावत
बी.कॉम प्रथम सेमेस्टर

सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा

हम सुरक्षित हैं तो ये संसार है,
वरना ये सारा जहाँ बेकार है।
पूछिये उनसे जो अपंग लाचार हैं,
उनका जीवन खुद उन्हीं पर भार है।
सड़क पर सादर नियंत्रित ही रहें,
गति कभी अनियंत्रित देखो न रहे।
रुकेगी जीवन की सारी गति प्रगति,
याद सबको बात ये हरदम रहे।
बिना हेलमेट सड़क पर है जो चला,
तुम बताओ कहाँ तक उसका भला।
जख्म वो दे जाएगा परिवार को,
सड़क पर मदमस्त होकर जो चला।
हो गई दुर्घटना किसी का जन गया,
तो तुम्हारे ऊपर है, संकट नया।
खुद ही तुम याकि वो लाचार होगा,
अच्छा भला जीवन, अब क्या होगा।
सोच कैसी भाग कैसे हैं तुम्हारे,
अपने परिवार में कितने हो प्यारे।
जल्दीबाजी किसलिए तुम कर रहे,
क्यों मुसीबत व्यर्थ ही तुम ले रहे।

–सुरभि मिश्रा
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

अपनी मातृभाषा

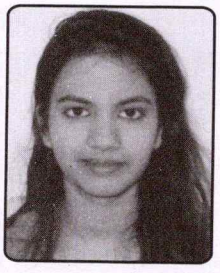

हम सबको पता है कि हमारी मातृभाषा हिन्दी है। जो हमारे लिए एक गर्व की बात होनी चाहिए लेकिन जब से अंग्रेजी हमारे देश में आई है हम अपनी मातृभाषा को भूल सा गए हैं।

पिछले कुछ सालों से अंग्रेजी को खूब सराहना मिल रही है। हर जगह बस अंग्रेजी बोलने वालों को ही मान–सम्मान मिलने लगा है और नौकरी प्राप्त करने के लिए भी एक नियम सा बन गया अंग्रेजी बोलना।

अगर ऐसा ही चलता रहा तो आने वाले समय में हम अपनी मातृभाषा को खो देंगे। अनेक भाषाओं का ज्ञान होना अच्छी बात है लेकिन उसके लिए अपनी मातृभाषा के लिए प्रेम और सम्मान नहीं खत्म होना चाहिए।

–राधिका गर्ग
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

बेटी

मुझे न मार मैया मैं तो तेरी बेटी हूँ,
देख तेरे पेट में माँ प्यार से मैं लेटी हूँ।
बाहर आऊँगी तुम मुझको प्यार देना,
मैं तुमको देख लूँगी तुम मुझको देख लेना
देख तेरे साथ थोड़े दिन ही रहूँगी माँ,
भैया के साथ मैं मिलकर रहूँगी माँ।
पापा की हर बात प्यार से सुनूँगी माँ,
भैया के साथ तेरे घर में पलूँगी माँ।
थोड़ा कुछ बड़ी होकर पढ़ने मैं जाऊँगी,
खूब मेहनत करके माँ सुख तुम्हें पहुँचाऊगी।
पढ़ाई और घर मैया दोनों ही संवारुगी,
अच्छी बेटी बनकर माँ नाम मैं कमाऊंगी।
थोड़े दिन बाद मैया आफीसर बनूँगी,
देख मैया फिर कितना सुख मैं पहुंचाऊगी।
पापा के सपने को पूरा कर दिखाऊँगी,
भैया से मैं कितना हंस के खिलखिलाऊँगी।
शादी की मेरे चिंता न करना तुम,
प्यार से रखना और अच्छी माँ बनना तुम।
भैया के जितना ही सुख मैं पहुँचाऊंगी,
आने दो बस तुम चिंता मत करना।

–सुरुचि मिश्रा
पंचम सेमेस्टर

मेरी माँ

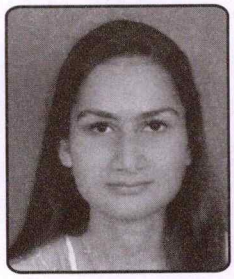

माँ धरती हैं, माँ ही नभ है,
माँ ही रब है, माँ है तो सब है।
कामों की गठरी कांधे पर लादे,
कभी नहीं उफ्फ कहती है।
केवल जन्म नहीं देती है,
वह जीवन भी देती है।
माँ गंगा है, माँ धाय है
माँ गाय है।
माँ बच्चों की चिंताओं का एकमात्र उपाय है।
माँ की ममता में देखो,
कितना दम है।
दुनिया भर की हर उमंग
उसके आगे कम है।
ममता की राहों में उसको
कोई बाधा झुका नहीं सकती है।
संतान ममता की कीमत
चुका नहीं सकती है।
माँ की सेवा कर लोगे
जो तुम सुबह और शाम,
घर बैठे ही मिल जाएंगे,
तुमको चारों धाम।

–आँचल
बी.कॉम, प्रथम सेमेस्टर

सत्य की आवाज

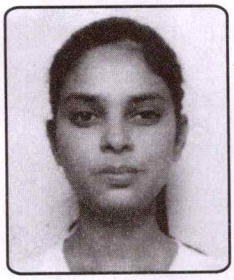

सत्य के लिए उठी आवाज है,
जन–जन आकर गान करो।
इस अभिमान से जुड़कर सब जन,
खुद पर अभिमान करो।
भ्रष्टाचार मिटाने का,
संकल्प है, सबने आज धरा।
जनहित–जनकल्याण का प्रण,
लगता अब तो मन को खरा।
देश का अहित ना होने देंगे,
ये है अब जन–जन का नारा।
भ्रष्टाचारी चाहे जहाँ छिपे,
छानेंगे हम अब कोना–कोना।
एक नहीं चलने देंगे,
चाहे वे जितना जोर लगा लें।
हम मनमानी ना करने देंगे,
हम मनमानी ना करने देंगे।

–साक्षी चौहान
बी. कॉम

ऐसा क्यों हमें बताइए–

माँ चाहिए बहन चाहिए, पर एक बेटी नहीं चाहिए
ऐसा क्यों हमें बताइये।
आजाद देश चाहिए हर घर में आजादी चाहिए
पर एक बेटी की जिंदगी में, आजादी नहीं होनी चाहिए
ऐसा क्यों हमें बताइये।
होंठों पर मुस्कान आने से पहले
मुस्कान उनकी छीन ली जाती है,
देश का नाम रोशन करने से पहले
ये मिटा दी जाती है
ऐसा क्यों हमें बताइये।
सब कुछ चाहिए पर एक बेटी नहीं चाहिये
पर एक बेटी नहीं चाहिये
ऐसा क्यों हमें बताइये।

–किरण
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

शिक्षकों को समर्पित कविता

शिक्षक की गोद में उत्थान पलता है।
जहाँ सारा शिक्षक के पीछे चलता है।
शिक्षक का बोया बीज पेड़ बनता है।
हजारों बीज वहीं पेड़ जनता है।
काल की गति को शिक्षक मोड़ सकता है।
शिक्षक धरा से अम्बर को जोड़ सकता है।
शिक्षक की महिमा महान होती है।
शिक्षक बिन अधूरी वसुन्धरा रहती है।
याद रखो चाणक्य ने इतिहास बना डाला था।
क्रूर मगध राजा को मिट्टी में मिला डाला था।
बालक चन्द्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट बनाया था।
एक शिक्षक ने अपना लोहा मनवाया था।
संदीपनी से गुरु सदियों से होते आते हैं।
कृष्ण जैसे नन्हें–नन्हें बीज बोते आये हैं।
शिक्षक से ही अर्जुन और युधिष्ठिर जैसे नाम हैं।
शिक्षक की निंदा करने से दुर्योधन बदनाम है।
शिक्षक की ही दया दृष्टि से बालक राम बन जाते हैं।
शिक्षक की अनदेखी से वो रावण भी कहलाते हैं।
हम सबने भी शिक्षक बनने की सुअवसर पाया है।
बहुत बड़ी जिम्मेदारी को हमने गले लगाया है।
आओ हम संकल्प करें कि अपना फर्ज निभायेंगे।
अपने शिक्षक होने का हरपल अभिमान करेंगे।
इस समाज में हम भी अपना शिक्षा दान करेंगे।

–स्वाति गिरी
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

बचपन

ऐ दिल जरा बचपन की गलियों से गुजर
ऐ दिल जरा बचपन की गलियों से गुजर आऊँ
गर्मी की छुट्टियों को तगड़े आलस में आऊँ
भानुमति के पिंजरे से निकलूं छोटी सी छोरी बन
बाईस्कोप में मुंह छाप अपना छुटपन देख आऊँ।
आसमान से आंख टांग के कुछ पतंगें लूट लाऊँ
पेड़ों की फुनगी तक जाकर बादल छू के आऊँ
छुपन छुपाई खेल सखा संग रुठे और मनाऊँ
मेरे नाम की बारी आये तो सब पर रौब जमाऊँ
ऐ दिल जरा बचपन की गलियों से गुजर आऊँ।
लट्टू को रस्सी पे लपेट और दुनिया को घुमाऊँ
गिल्ली डंडे से खिड़की के कांच फोड़ के आऊँ
बैलगाड़ी की पटरी से कुछ गुट्टे बीन के लाऊँ
गोल गोल से कंचों में काल्पनिक संसार बसाऊँ
ऐ दिल जरा बचपन की गलियों से गुजर आऊँ।
हाथ गुलेल लूं निशाना साधूं पके आप टपकाऊँ
सुतलियों पर गेंद को मारु जोर–जोर से चिल्लाऊँ
घोड़ा बादाम छाई के पीछे, सोटे से मार लगाऊँ।
राज मन्त्री चोर सिपाही सबको यह खेल खिलाऊँ
ऐ दिल जरा बचपन की गलियों से गुजर जाऊँ।

–रचना
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

सफलता

यदि विश्वास तुम्हें अपने पर,
तो तुम सब कुछ कर सकते हो।
अपने साथ दूसरों के भी,
दुःख दर्द सब हर सकते हो।
जन्म सफलता का होता है,
जिस सुदृढ़ इच्छा शक्ति से
और सफलता भी मिलती है,
मेहनत लगन और भक्ति से।
निश्चित सफल बनोगे तुम यदि,
पहले दृढ़ संकल्प तो बनाओ।
इसके बाद राह तुम खोजों,
और राह पर बढ़ते जाओ।
कभी–कभी आगे बढ़ने पर,
असफलता भी आ सकती है।
आगे बढ़ने वाले पग में,
कंटक सघन बिछा सकती है।

लेकिन ऐसा होने पर तुम,
फिर से दृढ़ संकल्प बनाओ।
और बना मजबूत हृदय को,
तूफानों से जा टकराओ।
जीवन को संघर्ष समझकर,
संघर्षों से मत घबराओ।
जीवन भर संघर्ष करो तुम,
अपना जीवन सफल बनाओ।

–रिंकल गोयल
वाणिज्य विभाग

अभिव्यक्ति

अभिव्यक्ति की आजादी है,
जो चाहो सो बोलो।
पर वाणी की भी मर्यादा है,
जहर न उसमें घोलो।
मीठी भाषा में कह सकते,
अच्छे हो या बुरे विचार।
गंदी भाषा बोलकर,
होता स्वयं का उपहास।
भाषा होती व्यैक्तिक दर्पण,
सोच समझकर बोलो।
पर वाणी की भी मर्यादा है,
जहर न उसमें घोलो।
मीठे बोल बोल भिखारी,
करते गुजर बसेरा।
तीखी भाषा बोलने पर,
दुत्कार मिलती है घेरा।
शालीनता यदि हो वाणी में,
शत्रु भी मित्रवत हो जाता।
जुमलेबाजी भाषा हो अगर,
अपनों से महाभारत हो जाता।
अंधे के अंधे पुत्र कहने पर,
कौरव पांडव में युद्ध हुआ।
जो अच्छी न लगे बात हमें
बोलने के पहले तोलो।
पर वाणी की भी मर्यादा है,
जहर न उसमें घोलो।
मीठी–मीठी वाणी से,
कोयल सभी को भाती।
कर्कश वाणी कौए की,
किसी को नहीं सुहाती।
मृदुभाषी प्रशंसा पाता,
वाणी होती है अनमोल।
प्रभु का वरदान है वाणी,
कुछ का कुछ मत बोल।
फूहड़ता शोभा नहीं पाती,
तौल–तौल कर ही बोलो।
पर वाणी की भी मर्यादा है,
जहर न उसमें घोलो।

–रुपाली
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

तुम चलो तो सही

राह में मुश्किल होगी हजार
तुम दो कदम बढ़ाओ तो सही
हो जाएगा हर सपना साकार
तुम चलो तो सही,
तुम चलो तो सही।
मुश्किल है पर इतनी भी नहीं
कि तू कर ना सके
दूर है मंजिल पर इतनी भी नहीं
कि तू पा ना सके।
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।
एक दिन तुम्हारा भी नाम होगा
तुम्हारा भी सत्कार होगा
तुम कुछ लिखो तो सही
तुम कुछ आगे पढ़ो तो सही
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।
सपनों के सागर में कब तक गोते लगाते रहोगे
तुम एक राह चुनो तो सही
तुम उठो तो सही,
तुम कुछ करो तो सही
तुम चलो तो सही,
तुम चलो तो सही।
कुछ ना मिला तो
कुछ सीख जाओगे
जिंदगी का अनुभव साथ ले जाओगे
गिरते पड़ते संभल जाओगे
फिर एक बार तुम जीत जाओगे
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।

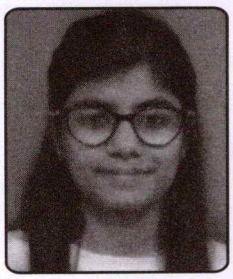

–युक्ता अरोड़ा
बी. कॉम तृतीय सेमेस्टर

कुम्भ मेला और पर्यावरण

सन् 2021 में कुंभ पर्व का आयोजन तीर्थ नगरी हरिद्वार में सम्पन्न हो रहा है। पूरा शहर, प्रशासन इस पर्व को सफल बनाने में अपना योगदान दे रहा है। इस कुंभ मेले में देश के कोने–कोने से श्रद्धालुजन गंगा में स्नान करने हेतु आते हैं। नागा समाज, साधु–समाज, एवं विभिन्न अखाड़ा परिषद् के संत समाज कुंभी पर्व की शोभा को द्विगुणित करते है। कुंभ पर्व हमारी आस्था का प्रतीक है। कुंभ पर्व के विषय में एक पौराणिक कथा प्रसिद्ध है कि समुद्र मंथन में समुद्र में से अमृत कलश (कुंभ) निकला इस अमृत को पीने के लिए देव–दानवों में झगड़ा शुरु हुआ। इन्द्र का पुत्र जयंत इस अमृत कलश को लेकर आकाश में उड़ गया। आकाश मार्ग से जाते समय अमृत की कुछ बूंदें धरती पर गिरी। जहाँ–जहाँ अमृत की बूंदें गिरी, उसी स्थान पर कुंभ पर्व का आयोजन किया जाता है। प्रयाग, नासिक, उज्जैन, हरिद्वार इन चार स्थानों पर अमृत बूंदें गिरने गिरने से कुंभ पर्व मनाया जाता है।

वर्ष 2020 जिसे हम कोरोना काल के नाम से जानते हैं जिसने समय की गति को थाम सा दिया। लोग घरों में कैद हो गये। औद्योगिक विकास रूक गया। सब कुछ ठहर सा गया। सड़कें सुनसान सी हो गयी। देश में नीरवता का माहौल व्याप्त हो गया। किन्तु इस स्थिति में जहाँ लॉकडाउन की स्थिति थी हमारे पर्यावरण का स्वतः शुद्धिकरण हो गया। जल–प्रदूषण, वायु–प्रदूषण, ध्वनि–प्रदूषण सभी समाप्त हो गया। कारखानों से निकलने वाला दूषित पानी, दूषित धुआँ सब बंद हो गया। क्योंकि कारखाने ही बंद हो गये। शोर मचाते वाहनों की ध्वनि बंद हो गयी। निर्माण कार्यों में भी कमी आयी जिससे धूल–मिट्टी से वातावरण दूषित होने से कुछ–कुछ सुरक्षित रहा।

यदि बारीकी से सोचा जाए तो यही निष्कर्ष निकलता है कि अपने पर्यावरण को दूषित करने का सारा श्रेय मानव जाति को ही जाता है। हम जितनी जल्दी इस सत्य को स्वकार कर लेंगे, अच्छा होगा।

यह तो हम सभी जानते ही हैं कि हरिद्वार में कुंभ मेले की शुरुआत हो चुकी है। हरिद्वार नगरी को विभिन्न माध्यमों से सजाया जा रहा है किन्तु एक प्रश्न निरन्तर मेरे मस्तिष्क में आता है कि इस विशाल कुंभ पर्व की समाप्ति पर हमारा पर्यावरण कितना प्रभावित होगा। हरिद्वार नगरी जहाँ कुंभ क्षेत्र है, आने वाले श्रद्धालुओं की अपेक्षा छोटा है। (कोरोना के मध्यनजर आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या कम हो सकती है) ये केवल अनुमान मात्र है। संभवतः अपने मन में माँ गंगा की आस्था को लिए श्रद्धालुओं की संख्या में कमी न हो। पर्यावरण का सीधा सम्बन्ध समस्त जीवधारियों के जीवन तथा प्राकृतिक परिवेश से है। प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ना यानि कि मानव सभ्यता का जीवन खतरे में होना। सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण के संरक्षण पर ध्यान दे रहा है। पृथ्वी पर पाए जाने वाले जल–वायु, पेड़–पौधे, समस्त जीव–जन्तु ये सभी पर्यावरण के प्रमुख घटक है। जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरुप पर्यावरण को हानि पहुँची है। ग्लोबल वार्मिंग में जनसंख्या के प्रत्येक व्यक्ति का प्रत्यक्ष योगदान नहीं है लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से लगभग प्रत्येक का योगदान है।

अब विचारणीय है कि कुंभ मेले में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या अप्रत्यक्ष रूप से ग्लोबल वार्मिंग को प्रभावित करेगी। अधिकांश लोग अपने निजी वाहनों से आते हैं जिसके कारण गाड़ियों से निकलने वाला धुआँ पर्यावरण को प्रभावित करेगा। एक सबसे हानिप्रद समस्या जिसके कारण पर्यावरण बुरी तरह प्रभावित हो रहा है, वह है पॉलीथीन का अत्यधिक मात्रा में प्रयोग। वर्तमान में पॉलीथीन सामान्य रुप से घर, बाजार सभी स्थानों पर प्रयोग में लायी जा रही है। पॉलीथीन जल या जमीन में वर्षों तक एक ही अवस्था में रहकर पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती है। जल में गिरी हुई पॉलीथीन जलीय जीवों के लिए जानलेवा साबित होती है। सरकार ने भी इस पॉलीथीन के प्रयोग को रोकने के लिए कठोर कदम उठाए हैं। लेकिन प्रयोग तो हम लोग ही कर रहे हैं। कुंभ पर्व पर आने वाले लोगों के द्वारा प्रयोग किया गया पॉलीथीन सबके लिए ही हानिकारक है। पहले भी कपड़े के बने हुए थैलों का प्रयोग किया जाता था तो वही थैला हम प्रयोग में क्यों नहीं लाते। सड़कों, नालियों में फेंका गया पॉलीथीन कितनी गंदगी फैलाता है यह हम सभी जानते हैं। हर चीज चाहे वह नमकीन आदि विभिन्न प्रकार की खाद्य–वस्तुऐं प्लास्टिक पॉलीथीन में ही आती हैं। यह तो सब जानते ही हैं कि जब प्लास्टिक को बनाया जाता है तब इसमें बहुत सारे जहरीले

कैमिकल का प्रयोग होता है और जब इसको जलाया जाता है तो वे सारे कैमिकल हवा में फैल कर वायु को प्रदूषित करते हैं। प्लास्टिक को जलाए जाने पर जो धुआँ उत्पन्न होता है उससे मानव एवं पशु दोनों के लिए घातक बीमारी उत्पन्न होती है। अच्छा यही होगा कि हम सभी इस प्लास्टिक का प्रयोग न करें।

आने वाले श्रद्धालु प्रायः गंगा के किनारे खाली पानी की बोतलें, दोने–पत्तल, पुराने वस्त्र आदि छोड़ देते हैं जो शहर में गंदगी फैलाते हैं। कुंभ मेले में आने वाले लोगों को पर्यावरण की शुद्धता बनाए रखने में अपना योगदान देना है। गाड़ी की हॉर्न जोर–जोर से और अनर्गल न बजाएं। अपने साथ कपड़े से बने थैलों को लेकर आएं। दुकानदार भी पॉलीथीन का प्रयोग न करें। सड़कों पर यहाँ–वहाँ न थूकें। गंगा की पवित्रता बनाए रखने के लिए उसमें अनावश्यक पूजा सामग्री न प्रवाहित करें। प्रशासन तथा अन्य कई सेवा–संस्थाएं कुंभ मेले को भव्य बनाने में अपना पूर्ण योगदान दे रही हैं। हम जन सामान्य की भी जिम्मेदारी है कि इस कुंभ पर्व में पर्यावरण को सुरखित एवं स्वच्छ रखने में अपनी सहभागिता प्रदान करें। इसकी शुरुआत प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं से ही करनी है। किसी भी प्रकार का कूड़ा–कचरा सड़क या सार्वजनिक स्थलों पर न फेंकें। सड़कों के किनारे रखे कूड़ेदान में ही अनुपयोगी वस्तुओं को फेंकें। इस हरिद्वार महाकुंभ को हम सबको स्वस्थ एवं हंसता–खेलता पर्व बनाएं। खुद भी स्वस्थ रहें और पर्यावरण को भी स्वस्थ रखें। प्रशासन द्वारा भी कुंभ पर्व को अनूठा बनाने और पर्यावरण की रक्षा हेतु सोलर पावर आधारित एलईडी लाइट्स का प्रयोग किया जा रहा है।

अंत में यही कहना चाहूँगी कि पर्यावरण की शुद्धता पर सबका सहयोग आवश्यक है–

प्रकृति हम को समझा रही है, पर्यावरण बचाओ,
प्रदूषित न उसे करो, उसकी साँस बचाओ।
प्रकृति खतरे में होगी तो मानव भी बच न पायेगा,
आने वाली पीढ़ी को शुद्ध हवा भी न दे पायेगा।

इसलिए पर्यावरण को शुद्ध रखों, तभी समस्त विश्व स्वस्थ रह पायेगा।

–डॉ० लता शर्मा
हिन्दी सम्बद्ध–वाणिज्य संकाय

नारी सशक्तिकरण के चार स्तंभ

कोई भी देश तब तक शिखर पर पर नहीं पहुँच सकता जब तक उस देश की महिलायें कंधे से कंधा मिलाकर न चलें किंतु आज जो महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति है क्या ऐसे वह कंधे से कंधा मिलाकर चल पायेंगी कदाचित नहीं, इसके लिये महिलाओं को सशक्त करने की आवश्यकता है, ताकि देश के विकास और उत्थान में वह भी प्रमुख भागीदार बन सके, इसके लिये जो चार बातें आवश्यक हैं वह हैं–

1. **शिक्षा**–महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये सबसे पहला कार्य जो आवश्यक है वो है उन्हें शिक्षित करने का, क्योंकि इसके अभाव में वो अपने अधिकारों के प्रति जागरुक नहीं होती, जिससे वो समाज में कमजोर दिखती हैं, पुरुषों की तुलना में महिला साक्षरता काफी कम है, इसलिये सबसे पहले यह आवश्यक है।

2. **आत्म–सुरक्षा**–महिला के विरुद्ध जिस तरह से आज अपराध की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ती जा रही है, कभी दुष्कर्म के रुप में, कभी घरेलु हिंसा के रुप में, उसके लिये उन्हें आत्म–सुरक्षा के लिये भी प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।

3. **आर्थिक स्वावलंबन**–महिलाओं को सशक्त करने के लिये हमें उन्हें आत्म–निर्भर बनाना होगा, ताकि वह अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये किसी पर निर्भर न रहें और स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।

4. **राजनैतिक सशक्तिकरण**–यह सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है महिला सशक्तिकरण का, क्योंकि इसमें महिलायें स्वयं नीति–निर्माण में भाग लेकर दूसरी महिलाओं की उन्नति के लिये कार्य कर सकेंगी।

अगर हम इन चार बातों को ठीक ढ़ंग से और देश की उन्नति और विकास में महिलायें भी उतनी ही भागीदार होंगी जितने कि पुरुष और देश निरंतर प्रगति करेगा।

–स्वाति त्यागी
एम.ए., प्रथम सेमेस्टर राजनीति विज्ञान

गाँधी विचारधारा का हिन्दी काव्य पर प्रभाव

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने सिद्धान्त रुप में जिन विचारों को अभिव्यक्ति दी है, उन्हीं को गाँधीवाद अथवा गाँधी विचारधारा की संज्ञा दी गयी। 'पट्टाभिसीता रमैया' ने कहा है–'गाँधी मर सकता है पर गाँधीवाद अमर रहेगा'। इसका अर्थ यह है कि गाँधी के सिद्धान्त शाश्वत और सार्वभौमिक हैं। गाँधी की विचारधारा सत्य और अहिंसा की साधना है। उनका सम्पूर्ण जीवन 'सत्य के प्रयोग' से पूर्ण है। उनके लिए सत्य कल्पना नहीं, आचरण का विषय है। सत्य के साथ अहिंसा गाँधी का दूसरा मूल सिद्धान्त है। उन्होंने कहा है–'सत्यमय होने के लिए अहिंसा ही एक मार्ग है, अथवा सत्य रुपी सूर्य सम्पूर्ण अहिंसा के बिना असम्भव है। अहिंसा सिर्फ व्यक्तिगत गुण नहीं है, बल्कि एक सामाजिक गुण भी है, जिसे दूसरे गुणों की तरह विकसित करना चाहिए।'

गाँधी जी का उद्देश्य भारत को अंग्रेजों के चँगुल से छुड़ाकर सत्य, अहिंसा, प्रेम और धर्म के मार्ग पर ले जाना तथा सुख–शान्ति का देश में प्रसार करना था। उनका मानना है कि शुद्ध अन्तःकरण और उच्च मनोबल से ही सत्य–अहिंसा का पालन सम्भव है। इसके लिए उन्होंने ब्रह्मचर्य, व्रत–उपवास, उपासना, अस्तेय, अपरिग्रह, शरीरश्रम, स्वावलम्बन, सब धर्मों का आदर, सम्भाव तथा साम्प्रदायिक सद्भाव को प्रमुख माना।

गाँधी विचारधारा का व्यापक प्रभाव हिन्दी साहित्य में विद्यमान है। साहित्य की सभी विधाओं काव्य, उपन्यास, कहानी, नाटक और एकांकी आदि में गाँधी की विचारधारा किसी न किसी रुप में प्रस्फुटित हो रही है। गाँधी के सभी सिद्धान्तों को अधिकांश कवियों ने अपने काव्य का विषय बनाया है। सत्य और अहिंसा के गीत गाते हुए कवि 'गया प्रसाद शुक्ल' लिखते हैं–

सत्य सृष्टि का सार, सत्य निर्बल का बल है।
सत्य सत्य है, सत्य नित्य है, अचल है अटल है।
जीवन–सर में सरस मित्रवर यही कमल है।

गाँधी जी का विचार था कि हिंसा से हिंसा और घृणा से घृणा शान्त नहीं होती। 'सियारामशरण गुप्त' इसी विचारधारा को इसी प्रकार अभिव्यक्त करते हैं–

'हिंसा से हिंसा नहीं होता हिंसानल।
जो सबका है वही हमारा भी है मंगल।
मिला हमें चिर सत्य आज यह नूतन होकर
हिंसा का है एक अहिंसा ही है प्रत्युत्तर'।

गाँधी विचारधारा में धर्म की एकता का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी दृष्टि में देश की एकसूत्रता के लिए धर्म भी एक विशेष साधन है। धर्म वही श्रेष्ठ है, जिसमें सब समान स्थान रखते हों। राष्ट्रकवि 'मैथली शरण गुप्त' यही कहते हैं–

'मार्मिक धर्म, समीर धर्म है, सभी साँस ले जिसमें,
मृदुता और प्रबलता दोनों, एक साथ हैं इसमें।
किन्तु स्वयं तुम शुद्ध नहीं तो, कोई धर्म तुम्हारा,
कितना ही प्रबुद्ध हो, कलुषित है सारा का सारा'।

गाँधी जी स्वयं एक कर्मवीर थे। वे निरन्तर कर्म में लगे रहना चाहते थे। कर्म की सार्थकता सेवा, परोपकार तथा मानवता की ओर उन्मुख होने में है। जब तक विश्व बन्धुत्व की भावना न हो, तब तक गाँधी जी की दृष्टि में कर्म निस्सार है। कवि –सोहनलाल द्विवेदी' इसी का समर्थन करते हैं–

'सेवा व्रत में जो दीक्षित हों दीन–दुखी के दुःख से कातर पर संताप दूर करने को ललक रहा हो जिनका अन्तर बने देश के हित वैरागी जो अपना घर द्वार छोड़कर हम को ऐसे युवक चाहिए जो कर सकें देश का संकट हर'।

गाँधी जी को दृढ़ विश्वास था कि देश, समाज और राष्ट्र के उत्थान हेतु मानवता की प्रतिष्ठा एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। मानवता से ही विश्व–बन्धुत्व का भाव पैदा हो सकेगा। इसी भावना को 'कविवर पन्त' स्पष्ट करते हैं–

'आज मनुज को खोज निकालो।
जाति वर्ण संस्कृति समाज से,
देश राष्ट्र के विविध भेद हर,
धर्म नीतियों में समत्व भर,
रुढ़ि रीति, मत विश्वासों की,
अन्ध यवनिका आज उठा लो'।

गाँधी की विचारधारा में सब धर्म तथा जातियाँ एक समान हैं। कोई ऊँचा–नीचा, छोटा–बड़ा नहीं है। भेदभाव की दीवार गाँधी को प्रिय नहीं। कविवर शिवमंगल सिंह 'सुमन' सब मतभेदों को नष्ट करके मानवता का नया 'फार्म' निर्मित करने का आदेश देते हैं–

छोटे–मोटे मतभेदों को गंगा जी में बोरो।

विश्व शान्ति के अभिमानों को हम तो दम भरते हैं।
जाति वर्ग की छोटी–मोटी दीवारों को तोड़ों,
मानवता का फार्म बनेगा, मिट्टी गाड़ो'।

इस प्रकार आधुनिक हिन्दी काव्य में गाँधी विचारधारा को व्यापक फलक पर चित्रित किया गया है। अधिकांश कवियों ने गाँधी के सिद्धान्तों के प्रति अपनी आस्था प्रकट की है। इससे सिद्ध होता है कि गाँधी के महिमाशाली व्यक्तित्व से सभी प्रभावित रहे हैं और युगों–युगों तक रहेंगे। अन्त में 'कवि पन्त' के शब्दों में कह सकते हैं–

'बापू तुमसे सुन आत्मा का तेज राशि आह्वान,
हँस उठते हैं रोम, हर्ष से पुलकित होते प्राण।
नव संस्कृति के दूत, देवताओं का करने कार्य,
आत्मा के उद्धार के लिए, आए तुम अनिवार्य'।

–डॉ० रेनू सिंह
(हिन्दी विभाग)

साहित्य और समाज

साहित्य और समाज का सदैव ही अटूट रिश्ता रहा है। लेखक साहित्य के माध्यम से समाज की वास्तविकता आम जनमानस तक पहुँचाता है। वैदिक काल से आधुनिक काल तक का साहित्य समाज में व्याप्त समस्याओं और उसकी यथास्थितियों से लोगों को अवगत कराता है। साहित्य वही सर्वश्रेष्ठ होता है जिसकी प्रासंगिता समयानुसार सदैव बनी रहती है। वेद–पुराण के प्रसंग आज भी हमारे जीवन को किसी न किसी रुप में प्रभावित करते हैं। रामचरित मानस एक ग्रन्थ ही नहीं अपितु जीवन का पर्याय है। यह हिन्दू धर्म की दिनचर्या का अंग है, तुलसीदास ने मानस की रचना मानव कल्याण हेतु की थी। मनुष्य जीवन की किसी भी समस्या का हल रामचरित मानस के माध्यम से प्राप्त कर सकता है। वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत राजनीति और धर्म का नया अध्याय लिखता है। महाभारत में जिस तरह राजसिंहासन के लिये भाई–भाई में युद्ध छिड़ गया। आज भी सम्पत्ति के लिये ऐसे संघर्ष के उदाहरण देखे जा सकते हैं।

जैन धर्म, बौद्ध धर्म एवं सिद्धनाथ सम्प्रदायों में जो साहित्य रचित हुआ वो भी धर्म की राह दिखलाता है जो मनुष्य को नैतिकता की राह दिखलाता है। प्रेमचन्द के द्वारा लिखित साहित्य अपने काल–खण्ड को पार करके आज भी रोशनी में मशाल लेकर खड़ा है। प्रेमचन्द के पात्र ग्रामीण क्षेत्र से भले ही थे लेकिन समस्याएँ हर दिल को उद्वेलित कर देती हैं। साहित्य की समाज में प्रासंगिता इसी बात से सिद्ध हो जाती है कि साहित्य समाज की उन बुराईयों या समस्याओं को भी दर्शाता है जो दिखाई नहीं देती है। भविष्य में उन चुनौतियों की कल्पना करके उनसे संघर्ष के रास्त भी प्रशस्त करता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करते हुये लिखते हैं–'प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य के स्वरुप में भी परिवर्तन होता चला जाता है।'

साहित्य समाज पर कभी सीधे तौर पर तो कभी आंशिक रुप में अपना प्रभाव अवश्य ही छोड़ता है। महाकवि बिहारी के एक दोहे न राजा जयसिंह को अपने कर्तव्य पालन का ज्ञान करा दिया। उसी प्रकार माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर एवं सुभद्रा कुमारी चौहान की ओजस्वी रचनाओं ने स्वतंत्रता आन्दोलन में नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी।

समाज में व्याप्त विचारों, संस्कारों एवं व्यवहार का प्रभाव साहित्य एवं साहित्यकार दोनों पर ही पड़ता है। साहित्य एवं समाज दोनों मिलकर ही सभ्यता एवं संस्कृति को विकास की ओर ले जाते हैं। समाज एवं साहित्य हमेशा से ही एक–दूसरे के पूरक एवं अभिन्न अंग रहे हैं। साहित्य के अभाव में समाज की एवं समाज के अभाव में साहित्य की कल्पना करना असंभव सा प्रतीत होता है। वास्तविकता में साहित्य समाज की सच्ची अभिव्यक्ति है।

–डॉ० मोना शर्मा
हिन्दी विभाग

नशा कहानी शुरुआत से अंत तक

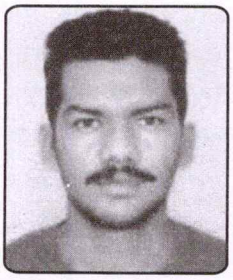

हम अक्सर अपने आस–पास कई ऐसे लोग देखते हैं जो नशे में चूर होते हैं और वो अपनी दुनिया में मस्त नजर आते हैं। पर असल में वो मजबूर होते हैं, उनका खुद में काबू नहीं होता, उनकी सोचने की क्षमता खत्म हो जाती है पर शुरुआत में वो ऐसे नहीं होते। आइये एक कहानी के माध्यम से जानते हैं।

राहुल एक बहुत अच्छा लड़का है। एक दिन वह अपने दोस्तों के साथ घूमने जाता है जहाँ उसे मालूम होता है कि उसके सभी दोस्त शराब, सिगरेट के आदी हो चुके हैं और उनके दोस्त उसे भी शराब पीने को कहते हैं लेकिन राहुल शराब पीने से मना कर देता है। मगर उसके दोस्त उसे दोस्ती की कसम देकर एक घूँट शराब पीने को कहते हैं और राहुल एक घूँट पीने को तैयार हो जाता है। राहुल जैसे ही पीता है उसे जोर का धसका उठता है और वह शराब को फेंक देता है। लेकिन साथ ही उसे थोड़ा अच्छा एहसास भी होता है क्योंकि थोड़ी देर बाद उसका दिमाग एक्टिव हो जाता है और शराब मन में एक जोश भर देता है।

कुछ दिन बाद राहुल के मन में फिर शराब पीने की जिज्ञासा उठती है और वह फिर उन्हीं दोस्तों की महफिल में शामिल हो जाता है।

अभी तक राहुल दोस्तों के द्वारा पिलाई गई शराब पी रहा था लेकिन अब वो खुद शराब पर पैसे खर्च करने लगा था और धीरे–धीरे वह शराब का आदी हो गया है। यह बात उसके घर वाले से भी ना छुपी। घरवालों ने सोचा राहुल बिगड़ गया। क्यों ना हम इसकी शादी कर दें। हो सकता है शादी के बाद वह सुधर जाये। लेकिन राहुल की आदतों में कोई बदलाव नहीं आया। वह शादी के बार भी शराबी ही रहा। साल दर साल बीतते गये और वह दिन आया जब राहुल एक सात साल के बच्चे का पिता बन गया और दूसरी तरफ वह बीमार पड़ने लगा। उसका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन खराब होता जा रहा था। अब उसका शरीर शराब का इतना आदी हो गया कि जिस दिन वह शराब नहीं पीता था उसका पूरा शरीर काँपने लगता था। डाक्टर ने भी जबाब दे दिया था कि अब राहुल बस चन्द दिनों का मेहमान है और कुछ दिनों बाद ही राहुल की मृत्यु हो गई।

राहुल अपने पीछे क्या छोड़ गया, एक बीबी जो अब विधवा हो गई। एक बच्चा जिसके सिर से बाप का साया उठ गया जिसकी उस बच्चे को सख्त जरूरत थी।

यह कहानी सिर्फ एक राहुल की नहीं उन करोड़ों लोगों की है जो कम उम्र में नशे का शिकार हो जाते हैं और उनका अंत बहुत ही भयानक होता है।

हमें जरुरत है अपने साथियों, बच्चों एवं खुद को इस नशे से दूर करने की और एक बेहतर जीवन जीने की।

याद रहे शुरुआत में सिगरेट, शराब मुफ्त में मिलती है लेकिन अंत में आपको इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है जैसा आपने राहुल की कहानी में सुना।

–गौरव वर्मा
एम. कॉम. तृतीय सेमेस्टर

राह न अपनी छोड़ो तुम....

फूल बिछे हों या काटें हों,
राह न अपनी छोड़ों तुम।
चाहे जो विपदायें आयें,
मुख को जरा न मोड़ो तुम।
साथ रहें या न रहें साथी,
हिम्मत मगर न छोड़ो तुम।
नहीं कृपा की भिक्षा मांगों,
कर न दीन बन जोड़ों तुम।
बस ईश्वर पर रखो भरोसा,
पाठ प्रेम का पढ़े चलो।
जब तक जान बनी हो तन में,
तब तक आगे बढ़े चलो।

–कोमल
बी.कॉम तृतीय सेमेस्टर

प्रकृति का प्रदर्शन

जहाँ नीला, सफेद, विस्तृत आकाश
दिखाता अनेकों रंग–बिरंगे नजारे।
वहाँ नदियों की लहरें, पानी की कल–कल,
कितना सुन्दर प्रदर्शन समीप हमारे॥
ऊँचे पर्वतों से लेकर गहराई की खाई तक,
आवाजें गूँजती उतनी ही दूरियों तक।
यूँ ही नहीं बनाया इतना गहरा,
सम्बन्ध ईश्वर ने ऊँचाईयों से गहराइयों तक॥
मिट्टी से बना रेगिस्तान सहारा,
मिट्टी ने विचार दिया कैसे रचा जाए संसार हमारा।
मिट्टी से ही उग पाए सारे पौधे,
जिन्होंने दिया मनुष्य को जीवनदान दोबारा॥
कृत्य जो रचा गया तो ईश्वर द्वारा,
पर जिसका लुप्त उठाया गया मनुष्य द्वारा।
मछलियों का जीवन है पानी,
वहीं उतना ही जरुरी मनुष्य के लिए पानी।
कोई काम नहीं है सम्भव बिना पानी,
उतना ही जरुरी है पानी,
'पानी' व्यर्थ करने वालों को
समझानी हमें यही कहानी॥
प्रकृति उस सुन्दर दुनिया का हिस्सा है,
जहाँ लहलहाती फसलें, मधुर वाणियाँ,
कोयल की कूं–कूं और न जाने कितनी कहानियाँ॥
कहते हैं पेड़ों की हरियाली कितने दिन की,
आखिर पत्ते झड़ ही जायेंगे।
फिक्र न कर, कोशिश कर उँगाने की,
पत्ते तो फिर आ जायेंगे॥
सनसनाती हवा ध्वनि सुन झाड़ियाँ भी
थिरकने लगी मैदानों की।
वहीं दुखद कहानियाँ भी सुननी
पड़ी पेड़ विशालों की॥

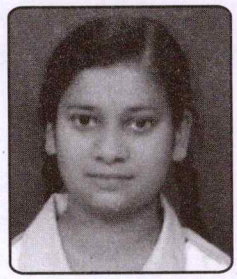

वनों, नदियों, झरनों के
बीच घर हमारा है,
विकराल रुप धारण कर
बाढ़, भूस्खलन,
जैसी अनेकों आपदाएँ दिखा रहा
प्रकृति का रुप हमारा है।
प्रकृति को नुकसान न पहुँचाने का
कर्तव्य ही तो हमारा है।
इतना सुन्दर प्रकृति का नजारा है।

–मोहिनी राठौर
बी.ए. प्रथम वर्ष

शिक्षा है एक शक्ति

गुरुजनों की बात पर
जो नहीं करता कभी अमल
कभी न आती उसको अकल
ठीक नहीं होती उसकी नसल
गुरुजनों की बात पर.....
उसका मस्तिष्क बंजर धरती
कोई फसल नहीं उस पर उगती
गुरुजनों की मेहनत बेकार हो जाती
सरस्वती उसके पास कहाँ आती
गुरुजनों की बात पर.....
जब तक है सूखी पाती
बनता नहीं कोई उनकी साथी
कभी नहीं होता वह सफल
किसी के पास नहीं उसका हल
गुरुजनों की बात पर.....
सब कहते उसे चल आगे चल
उसके पास नहीं शिक्षा का बल
यदि तुम्हें होना है सफल
गुरुजनों से सीखो अकल
गुरुजनों की बात पर.....

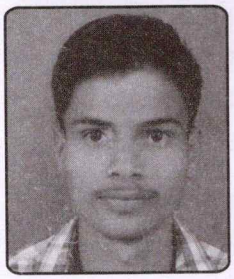

शिक्षा है एक शक्ति
सदा करो तुम उसकी भक्ति
अज्ञान से यह देती मुक्ति
अति सुन्दर है शिक्षा की युक्ति
गुरुजनों की बात पर.....

–नितिन
बी.कॉम. तृतीय सेमेस्टर

महिला घरेलू कामगारों पर कोविड 19 का प्रभाव

एक सामाजिक कार्य अध्ययन
बीएचईएल उपनगरी, हरिद्वार के विशेष संदर्भ में

देश में बढ़ते शहरीकरण के साथ संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। परिवार में पति–पत्नी दोनों के नौकरी करने का चलन बढ़ रहा है। ऐसे में घरेलू काम के लिए कामगारों की मांग लगातार बढ़ी है लेकिन इसके बावजूद उन्हें घर के काम में सहायक के तौर पर नहीं बल्कि नौकर/नौकरानी का दर्जा दिया जाता है। घरेलू कामगार के तौर पर घरों में काम करने वाली ज्यादातर महिलाएं होती हैं, इस तरह से महिलाओं के श्रमशक्ति की एक बड़ी आबादी न्यूनतम आय पर काम करने के लिए मजबूर है।

घरेलू कामगार महिलाओं को अपने कार्यस्थल पर शोषण एवं हिंसा का शिकार होना पड़ता है। साथ ही उन्हें कम मजदूरी, काम का समय तय ना होना, कम पैसे में ज्यादा काम करना, नियोक्ताओं का गलत व्यवहार, शारीरिक व यौन–शोषण जैसी समस्याओं को भी झेलना पड़ता है। आमतौर पर घरेलू कामगारों के प्रति नियोक्ताओं का व्यवहार नकारात्मक होता है, उनके साथ अपमानजनक संबोधन, छुआछूत, चोरी का आरोप, बिना ठोस कारण के वेतन कटौती तो आम हैं, साथ ही घरेलू कामगारों के साथ शारीरिक और मानसिक हिंसा एवं यौन उत्पीड़न की घटनाए आए दिन सुर्खियां बनती हैं। इनकी दिनचर्या बहुत लंबी और थकाउ होती है साथ ही उन्हें छुट्टी भी नहीं मिलती है, काम के अत्यधिक बोझ के कारण अक्सर उन्हें स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। इधर कोरोना वायरस के चलते लॉकडाउन के बाद घरेलू कामगारों के सामने नई चुनौतियां हैं। उन्हें समाज और सरकार दोनों की तरफ से मदद की जरूरत है। कोरोना वायरस के निपटने के बाद हमारे सामजिक और कामकाजी व्यवहार में बड़ा परिवर्तन होने वाला है। घरेलू कामगारों पर इसका भी विपरीत प्रभाव पड़ा है सरकार और समाज को इस दिशा में भी सोचने की जरूरत है।

शोध अध्ययन की उपयुक्तता

कार्लमार्क्स ने कामगार वर्ग को वैसे व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया, जो मजदूरी के लिए अपनी श्रमशक्ति बेचते हैं और उत्पादन के साधनों का स्वामित्व नहीं रखते। उन्होंने कहा कि कामगार वर्ग शारीरिक रूप से पुलों, शिल्प फर्नीचर का निर्माण करता है, खाद्य उगाता हैं, घरेलू काम और बच्चों का लालन–पालन करता है, पर उनके अपने खेत या कारखाने नहीं होते। कामगार वर्ग के उप–खंड भ्रमित कामगार वर्ग का है, जो अत्यंत गरीब और बेरोजगार होता है, जैसे कि दिहाड़ी मजदूर और बेघर लोग। प्रस्तुत अध्ययन इसलिए आवश्यक है कि कोविड–19 महामारी के कारण महिला घरेलू कामगारों की स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इसलिए इस नकारत्मक प्रभाव को कम करने के लिए यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत समाज कार्य अध्ययन के उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं–

1. कोविड–19 के कारण घरेलू कामगारों की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि जानना।
2. कोविड–19 के कारण घरेलू कामगारों के काम और आजीविका को प्रभावित करने वाले कारको को जानना।
3. कोविड–19 के कारण उनके स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. कोविड–19 महामारी के दौरान महिला घरेलू कामगारों पर होने वाली घरेलू हिंसा से उनके बच्चों और परिवार पर नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।
5. कोविड–19 महामारी में हिंसा से सम्बंधित कानूनों एवं सामाजिक प्रावधानों का ज्ञान एवं उनका प्रभाव जानना।
6. महिला घरेलू कामगारों पर कोविड–19 के प्रभाव को रोकने/कम करने के उपाय सुझाना।

साहित्य का पुनरावलोकन

सामाजिक अनुसंधानों/समाज कार्य अध्ययनों में साहित्य का पुरावलोकन तथा पूर्व अध्ययनों की समीक्षा किए बिना अनुसंधान कार्य हेतु दिशा प्राप्त करना यदि असम्भव नहीं तो जटिल अवश्य होता है। अतः आवश्यक है कि प्रारम्भ में ही समाज कार्य अध्ययन से सम्बंधित पूर्व साहित्य का अध्ययन कर लिया जाए। पुस्तकें, प्रतिवेदन, विषय से सम्बंधित शोध ग्रंथ आदि आते हैं। इस प्रकार के अध्ययन से अध्ययनकर्ता का कार्य कुछ सरल हो जाता है,

महत्वपूर्ण अवधारणाओं की जानकारी मिल जाती है। अध्ययनकर्ता यह जान लेता है कि प्रस्तुत अध्ययन कार्य से सम्बंधित किन–किन शोध प्रकरणों पर इससे पूर्व अनुसंधान कार्य सम्पादित किए जा चुके हैं। किए हुए अध्ययन कार्य के पुनः दोहराने की भूल से अध्ययन को छुटकारा मिल जाता है तथा अध्ययन कार्य की सही रूपरेखा तैयार करने में महत्त मिलती है। प्रत्येक सामाजिक समस्या का काल, प्रदेश एवं परिस्थितियों से भी पूर्व अध्ययनों की समीक्षा करना महत्वपूर्ण होता है।

कोरोना वायरस (COVID-19) का संक्रमण दिसम्बर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। चीन और अमेरिका सहित अन्य देशों में व्यक्ति से व्यक्ति में फैलने वाला एक नया वायरस स्ट्रेन है। कुछ मामलों में, चीन के बाहर पाए गए मामले चीन से आए यात्रियों से संबंधित हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञ चिंतित हैं क्योंकि इस नए वायरस के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है और इससे कुछ लोगों में गंभीर बीमारी और निमोनिया होने की संभावना होती है। डब्लू एच ओ के मुताबिक बुखार, खांसी, सांस लेने में तक्लीफ इसके लक्षण हैं। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने के लिए कोई भी टीका नहीं बना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनीसेफ सहित संयुक्त राष्ट्र की सभी एजेंसियां, कोविड–19 से लड़ाई में अग्रिम मोर्चे पर रही हैं और केंद्र एवं राज्य सरकारों के साथ मिलकर काम किया।

मैकिंजी की एक ताजा रिपोर्ट के मुताबिक कोविड–19 महामारी की वजह से वैश्विक स्तर पर महिलाओं की नौकरी गँवाने की दर पुरुषों की नौकरी गँवाने की दर से 1.8 गुना ज्यादा है। महिलाओं का एक बड़ा हिस्सा कोविड–19 महामारी के आर्थिक और सामाजिक असर की पीड़ा से जूझ रहा है। वर्ष 2020 में कोरोना वायरस के कारण लागू तालाबंदी में घरेलू कामगारों के रूप में कार्यरत लोगों की बड़ी संख्या में काम पर रोक लगा दी गई थी, लगभग 70% (बड़ी संख्या में) प्रवासी मजदूर एवं महिला घरेलू कामगार अपने गांवों में वापस चले गए और अधिकांश तबसे वापस नहीं आए हैं यहां तक कि जो महिलाएं रोजगार खोजने में कामयाब रही, उन्हें फिर से स्थापित होने पर उनकी पहले जैसी आय नहीं रही है। लॉकडाउन के बाद देश में अनलॉक के बाद घरेलू कामगार महिलाओं की आर्थिक हालत ख़राब है। काम न होने, मालिकों द्वारा मजदूरी घटाने, सामाजिक के साथ–साथ ये वर्ग सरकार की उदासीनता से भी ग्रसित हैं । फैक्ट्रियों में मजदूर लौट रहे हैं तो दफ्तरों में अफसर, लेकिन वायरस का खौफ लोगों के जहन में ऐसा फैला है कि हमारे घरों में झाड़ू–पोंछा, बर्तन और खाना बनाकर गुजर–बसर करने वाली लाखों महिला कामगारों का उन्हीं घरों में वापस लौटना पूरी तरह संभव नहीं हो पाया है। उपरोक्त से स्पष्ट है कि भारत में महिला घरेलू कामगारों के कामकाज के हालात भी बहुत खराब हैं और जरूरी कानूनों के अभाव में वे बदत्तर हालातों में काम करने को मजबूर हैं। प्रस्तुत लघु शोध के माध्यम से यह कहने का प्रयास किया जाएगा कि महिला घरेलू कामगारों को कोविड–19 ने किस प्रकार प्रभावित किया है? और कोविड–19 अभी खत्म नहीं हुआ है, इस समस्या का प्रभाव महिला घरेलू कामगारों पर कब तक रहेगा?

कोविड–19 महामारी को फैलने से रोकने के लिए लागू तालाबंदी की वजह से निजी क्षेत्रों में काम करने वाले कामगारों, पुनर्वासी मजदूरों, महिला घरेलू कामगारों का काम पर आना अचानक बंद हो गया। उस समय उनके पास घर में बमुश्किल 15 दिन के लिए राशन और न के बराबर पैसा था, जिनको तनख्वा मिली भी तो मार्च माह में एक हफ्ते कम के पैसे मिले। मकान का किराया, घर खर्च, बच्चों की स्कूल फीस, ईलाज खर्च के लिए ये लोग अपने नियोक्ताओं, सरकार या कर्ज देने वालों के आगे मजबूर हो गये।

उत्तरदाताओं का पार्श्व चित्र

प्रत्येक समाज में व्यक्ति के पद, प्रतिष्ठा एवं अधिकार सम्बन्धी मान्यताऐं उस समाज की परम्पराओं तथा सामाजिक सांस्कृतिक अवधारणाओं पर आधारित होती है। इनमें व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति एवं आयु मुख्य कारक होते है। दूसरी ओर परिवार में व्यक्ति की स्थिति उसकी आयु, सम्बन्धों तथा कार्यव्यवहार पर निर्भर करती है। इस सब कारकों में व्यक्ति की आयु का विशेष महत्व होता है। प्रस्तुत समाज कार्य अध्ययन हेतु हरिद्वार से 100 घरेलू कामगारों को दैव निर्देशन के रुप में चुना गया है। अध्ययन का समग्र 500 है। महिला घरेलू कामगारों को मोटे तौर पर तीन भागों में बांटा जा सकता है, पार्टटाइम, फुलटाइम और कार्यस्थल में रहकर काम करने वाले। महिला घरेलू कामगार मुख्य रूप से बागवानी, बच्चों को संभालना, खाना पकाना, घर की साफ–सफाई, कपड़े–बर्तन धोना, बीमार व वृद्धों की देखभाल आदि काम करते हैं। घरेलू कामगार महिलाओं की बात करें तो उनमें से कई महिलाएं परिवार की एकमात्र कमाने वाली सदस्य होती हैं।

उत्तरदाताओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति

घरेलू महिला कामगार श्रमिकों का एक ऐसा वर्ग है, जिसका शोषण आज भी जारी है। कहने को भले ही ये कामगार हों, लेकिन इन्हें नौकरानी ही माना जाता है। इनमें से कुछ अनेक घरों में कार्य करती हैं, तो कुछ एक ही घर में सीमित समय के लिए काम करती हैं, जबकि कुछ एक घर में पूर्णकालिक काम करती घरेलू कामगार महिलाएं आजीविका के लिए सुबह से शाम तक लगातार कार्य करती हैं। सेहत खराब होने की स्थिति में इलाज कराना भी मुश्किल हो जाता है, क्योंकि सरकारी अस्पतालों में काफी समय लगता है और निजी अस्पतालों में ज्यादा पैसे खर्च होते हैं। ज्यादातर घरेलू कामगार महिलाएं आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े और वंचित समुदाय से होती हैं। उनकी यह सामाजिक स्थिति भी उनके लिए विपरीत स्थितियां पैदा करती हैं। इनके साथ यौन उत्पीड़न, चोरी का आरोप, गालियों की बौछार या घर के अंदर शौचालय आदि के उपयोग की मनाही तथा छुआछूत आम बात है। असली लड़ाई तो उस सामंती सोच के साथ है, जिसे खत्म किए बिना और उत्पीड़न को दूर नहीं किया जा सकता। तथ्यों के प्रदर्शन हेतु सांख्यिकीय विधि (चित्र, ग्राफ आदि) का प्रयोग किया गया है। विभिन्न वर्ग के उत्तदाताओं से विभिन्न प्रकार के तथ्य प्राप्त होते हैं अतः इस अध्ययन में भी उत्तरदाताओं को विभिन्न वर्गों में बांटा गया हैं जैसे–कार्यकुशलता, आयु, परिवार की स्थिति, परिवार का प्रकार, घर का प्रकार एवं परिवार की मासिक आय आदि।

उत्तरदाताओं (महिला घरेलू कामगारों) का आयु एवं कार्य–कुशलता के आधार पर वर्गीकरण

ग्राफ–3.1

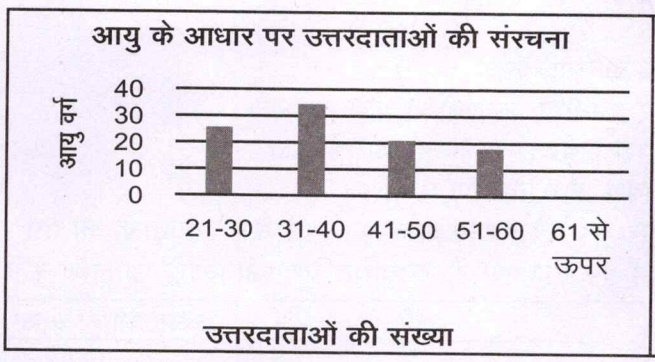

ग्राफ–3.2

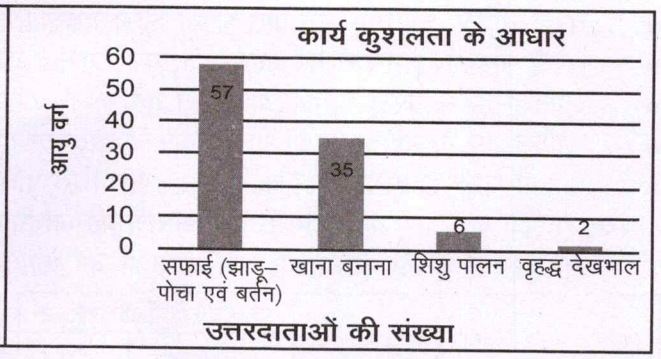

ग्राफ 3.1 से ज्ञात होता है कि महिला घरेल ूकामगारों में 31 से 40 वर्ष आयु वर्ग है, जिसमें महिला घरेलू कामगारों में 35 प्रतिशत उत्तरदाता महिला घरेलू कामगार है उसके बाद 51 से 60 वर्ष की महिला घरेलू कामगारों की प्रतिशतता मात्र 18 प्रतिशत ही है जबकि 61 वर्ष से अधिक महिला कामगारों की प्रतिशतता शून्य है। वहीं ग्राफ 3.2 से स्पष्ट है कि महिला घरेलू कामगारों में 57 प्रतिशत महिला घरेलू कामगार नियोक्ता के घर में साफ–सफाई (झाड़ू–पोछा एवं बर्तन) आदि का काम करती हैं, वही 35 प्रतिशत महिला घरेलू कामगार खाना बनाने का काम करती हैं। शिशु पालन एवं वृद्ध देखभाल के लिए महिला घरेलू कामगारों की संख्या क्रमशः 6 एवं 2 है।

ग्राफ–3.3 उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति का वर्गीकरण

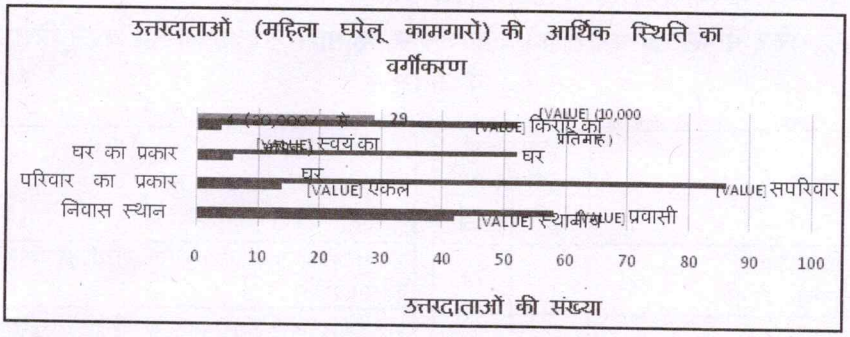

यह ग्राफ 3.3 से भी स्पष्ट है कि महिला घरेलू कामगारों की आर्थिक स्थिति स्पष्ट है

उत्तरदाताओं की समस्यायें एवं उनके सुझाव

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार भारत में करीब 47 लाख लोग घरेलू कामगार हैं, जिसमें करीब 30 लाख महिलाएं हैं। इनमें से अधिकतर घरेलू कामगार शहरी क्षेत्रों में काम करते हैं। इनमें से अधिकतर ऐसे हैं जो रोजगार की तलाश में पलायन करके शहर आते हैं। भारत के शहरी मध्यवर्गीय जीवन में घरेलू कामगार महिलाओं की बुनियादी भूमिका है। आज कोरोना वायरस के चलते असंख्य परिवार यह महसूस कर रहे होंगें कि "कामवाली बाइयों" के बिना उनका घरेलू जीवन कितना मुश्किल हो गया है लेकिन उनकी यह मुश्किल घरेलू कामगारों से बड़ी नहीं हैं। लॉकडाउन ने घरेलू कामगारों को बुरी तरह से प्रभावित किया है उनके लिए यह एक बुरा सपना साबित हो रहा है जिसके चलते वे अपने वर्तमान और भविष्य दोनों को लेकर चिंतित हैं।

उत्तरदाताओं की समस्यायें–कोविड–19 के कारण

- उनके स्वास्थ्य पर होने वाले।
- नौकरी की असुरक्षा में वृद्धि।
- लॉकडाउन के दौरान इनका घरों में काम करना बंद हुआ था।
- घरेलू महिला कामगारों को कोविड–19 महामारी की पूर्ण जानकारी नहीं होना।
- घरेलू महिला कामगारों ने कोविड–19 तालाबंदी में निर्देशों एवं नियमों का पालन करना।
- घरेलू महिला कामगारों को तालाबंदी में धन की मनाई (तनख्वा) या उनकी आय नहीं दी गई।
- कोविड–19 अनलॉक के उपरांत उनका घरेलू काम–काज उन्हें पूर्व की भाँति मिला है।
- घरेलू महिला कामगारों पर कर्ज बढ़ गया है।
- घरेलू महिला कामगारों के प्रति घरेलू हिंसा बढ़ना।
- घरेलू महिला कामगारो को कार्यस्थल पर भेदभाव का सामना करना।
- कोविड–19 में घरेलू महिला कामगारों को भोजन और बुनयादी जरूरतों से वंचित रहना।
- कोविड–19 में करीबी साथी या परिवार के सदस्यों द्वारा जबरदस्ती कमाई को छीनना।
- महिला घरेलू कामगारों पर कोविड–19 सम्बंधित प्रतिबंध और नियंत्रण में वृद्धि।

घरेलू महिला कामगारों को कोविड–19 महामारी की जानकारी एवं घरेलू काम काज के संदर्भ में उत्तरदाताओं का मत

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं को कोविड–19 महामारी से सम्बंधित पूर्ण जानकारी उपलब्ध नहीं

मत	उत्तरदाताओं की संख्या		
	हाँ	नहीं	कोई जवाब नहीं
क्या घरेलू महिला कामगारों को कोविड–19 महामारी की पूर्ण जानकारी है?	15	85	–
क्या घरेलू महिला कामगारों ने तालाबंदी में दिशा–निर्देशों एव नियमों का पालन किया है?	100	0	–

मत	उत्तरदाताओं की संख्या		
	हाँ	नहीं	कोई जवाब नहीं
क्या घरेलू महिला कामगारों का रोजगार छूट गया है?	95	5	–
क्या अनलॉक के उपरांत उनका घरेलू कामकाज उन्हें पूर्व की भाँति मिला है?	49	61	–

थी। दूरसंचार के माध्यम से, एनजीओ द्वारा समय–सम्य पर जो जानकारी मिली तब उन्होंने कोविड–19 तालाबंदी में दिशा–निर्देशों एवं नियमों का पालन किया। तालिका 4.2 से प्राप्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट है कि अधिकतर उत्तरदाताओं का कोविड–19 महामारी में रोजगार खत्म हो गया।

तालिका–4.3 एवं 4.2 घरेलू महिला कामगारों को कोविड–19 महामारी में स्वास्थ्य एवं घरेलू हिंसा पर होने वाले प्रभाव के संदर्भ में

मत	उत्तरदाताओं की संख्या	
	हाँ	नहीं
क्या घरेलू महिला कामगारों को कोविड–19 तालाबंदी में धन की मनाई (तनख्वा) की गई?	26	74
क्या घरेलू महिला कामगार पर कर्ज बढ़ा है?	82	18

मत	उत्तरदाताओं की संख्या	
	हाँ	नहीं
क्या घरेलू महिला कामगारों को घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ा है?	38	62
क्या कोविड–19 में करीबी साथी या परिवार के सदस्यों द्वारा जबरदस्ती संचित धन या कमाई को छीनना?	16	84

उपरोक्त तालिका से प्राप्त तथ्यों के आधार पर 74 प्रतिशत घरेलू महिला कामगारों ने बताया कि उन्हें कोविड–19 तालाबंदी में धन की मनाई (तनख्वा) की गई वहीं 82 प्रतिशत घरेलू महिला कामगारों को कर्ज की गहरी खाई में डूबना पड़ा। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर उत्तरदाताओं का कोविड–19 महामारी में नियोक्ता द्वारा पूरे महीने की तनख्वा की मनाई की गई, उनका मार्च माह में एक हफ्ता कम करके तनख्वा दी गई। अतः स्पष्ट है कि कुछ उत्तरदाताओं को कोविड–19 महामारी में हिंसा और उनकी कमाई को छीनने जैसी घटनाओं का सामना करना पड़ा।

क्र.सं.	कोविड–19 के संदर्भ में सावधानियां	उत्तरदाताओं की संख्या		
		हाँ	नहीं	कोई जवाब नहीं
1	मास्क पहनना	98	0	2
2	बार–बार हाथ धोना	95	0	5
3	श्वसन शिष्टाचार का पालन करना	100	0	0
4	सामाजिक दूरी बनाए रखन	97	0	3
5	कार्यस्थल को बार–बार स्वच्छ और साफ–सुथरा बनाएं रखें	100	0	0

कोविड–19 के संदर्भ में सावधानियां जिनका अनुसरण करना जरुरी था।

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि कोविड–19 तालाबंदी में लगभग सभी महिला घरेलू कामगारों द्वारा सावधानियों जिनका अनुसरण करना जरुरी था उनका पालन किया।

कोविड–19 के संदर्भ में उत्तरदाताओं के सुझाव

1. नियामक संरचनाओं में कमी, कमजोर निवारण तंत्र और घरेलू कामगारों के लिए सुरक्षा नीति में कमी।
2. महिला घरेलू कामगारों को कोविड–19 के संभावित वाहक के रूप में सामाजिक तौर पर कलंकित और नहीं किया जाए।
3. कोविड–19 महामारी का घरेलू कामगारों के काम और आजीविका हेतु यदि उन्हें सरकार या उनके नियोक्ता द्वारा आर्थिक मदद मिले तो उनकी आजीविका सुचारू रुप से चल सकती है।
4.. कोविड–19 महामारी के कारण उनके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव को कम किया जा सकता है यदि समय रहते उन्हें स्वास्थ सम्बंधी गाइडलाईन मिल जाए साथ ही वे स्वयं भी कोविड–19 महामारी बच सकती हैं।
5. कोविड–19 महामारी के दौरान महिला घरेलू कामगारों पर होने वाली घरेलू हिंसा से उनके बच्चों और परिवार पर नकारात्मक प्रभाव को कम किया जा सकता है यदि उन्हें उनके अधिकारों से अवगत कराकर उन्हें आत्मरक्षा और मानसिक रुप से सबल हो सकती है।
6. महिला घरेलू कामगार घरेलू कार्य करने में दक्ष होंगी परंतु महिला घरेलू कामगारों पर कोविड–19 सम्बंधित प्रतिबंध और नियंत्रण में वृद्धि हुई होगी उसका अध्ययन करना जिससे कि महिला घरेलू कामगार उनका पालन कर सकें।
7. इन्हें निजी क्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारियों की तरह न्यूनतम मजदूरी, काम के घंटों का निर्धारण, साप्ताहिक अवकाश आदि की सुविधाए मिलनी चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के प्रथम अध्याय "महिला घरेलू कामगारों पर कोविड–19 का प्रभावः एक सामाजिक कार्य अध्ययन" के अंतर्गत कोविड–19 से महिला घरेलू कामगारों को रोजगार, जीवन रक्षा के अधिकार पर सीधा असर पड़ा है। कोरोना वायरस (COVID-19) का संक्रमण दिसम्बर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। चीन और अमेरिका सहित अन्य देशों में व्यक्ति से व्यक्ति में फैलने वाला एक नया वायरस स्ट्रेन है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ चिंतित हैं क्योंकि इस नए वायरस के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है और इससे कुछ लोगों में गंभीर बीमारी और निमोनिया होने की संभावना होती है। मंगलवार, 24 मार्च, 2020 को देश भर में 21 दिनों के लिए पूर्ण तालाबंदी की घोषणा की थी। यह तालाबंदी देश के हर जिले, हर गली, हर गाँव में लागू हुई। कोविड–19 महामारी को फैलने से रोकने के लिए लागू तालाबंदी की वजह से निजी क्षेत्रों में काम करने वाले कामगारों, पुनर्वासी मजदूरों, महिला घरेलू कामगारों

का काम पर आना अचानक बंद हो गया।

ज्यादातर महिला घरेलू कामगारों में वह एकमात्र आर्थिक सहारा हैं। तालाबंदी से पहले जो तथ्य धुंधले थे या ऐसे कहें कि परदे के पीछे थे वो कोविड तालाबंदी में एकदम उजागर हो–होकर बाहर आए। उनके घरों में राशन नहीं, पीने के लिए पानी नहीं, बीमार होने पर दवाईयां उपलब्ध नहीं, बिना इलाज–दवाईयों के मृत्यु हुई होना आदि। कोविड से पहले बस्तियों में दो से तीन दिन के अंतराल पर पानी के टैंकर उपलब्ध हो जाते थे, परंतु कोविड–19 महामारी में बस्तियों में पानी के टैंकर आने भी बंद हो गये। सर्वे में आया है कि "पीने के लिए पानी नहीं हाथ धोने के लिए पानी कहाँ से लाए? महिलाओं पर घर के काम का बोझ, खाना पकाने, बच्चों की देखभाल करने और जलाऊ लकड़ी और पानी लाने से भी काफी बढ़ गई। स्थिति बढ़ती तालाबंदी की समयावधि के साथ और गम्भीर एवं दयनीय होती गई।

अध्ययन में पाया गया कि कोविड–19 में मृत्यु के बाद यदि कोई दूसरा दुश्प्रभाव है तो वह कर्ज है, मृत्यु के बाद इंसान मर जाता है कोई जिम्मेदारी नहीं, परंतु कर्ज इंसान के लिए मृत्यु से भी बदत्तर स्थिति है, कोविड–19 में कमाई का जरिया नही। कर्ज कैसे उतारा जाए। इससे होने वाले मानसिक तनाव के कारण, एकल आत्महत्या या सपरिवार आत्महत्या की खबरों से भी अखबार भरे रहें है। जो जिंदा है न जाने कब तक इस कर्ज के बोझ में दबे रहेंगें। कोविड–19 की रोकथाम के लिए सरकार द्वारा प्रतिबंध एवं नियंत्रण कानून तो सभी वर्ग पर लागू किए गए परंतु इसका दुष्प्रभाव गरीब महिला घरेलू कामगारों वर्ग पर ज्यादा हुआ। सबसे पहले इन सबका काम पर जाना अचानक बंद हुआ, रोजगार खत्म होने से कमाई बंद, भूख से तड़प रहे थे, एनजीओ द्वारा, सरकारी सहायता द्वारा एवं सहायक दल द्वारा जो भी मदद, राशन वितरण की सूचना मिलने पर बाहर निकले पर लाठीचार्ज का सामना करना पडा, घंटों लाईन में लगे रहने के उपरांत भी कोई भी मदद एवं सामग्री न मिलना। बेरोजगार होने पर अपने गृहराज्य जाने के लिए यातायात के साधन उपलब्ध न होने से सडकों पर मीलों पैदल चलना, लाठी की मार झेलना, घर पहुँचने से पहले ही कई कामगारों की मृत्यु हो गई। कुछ महिला घरेलू कामगारों की प्रसूति भी बीच रास्ते मेंहुई है, इससे दु:खद और क्या होगा?

बेरोजगारी में जिस प्रतिशतता से महिला घरेलू कामगारों का शहर से पलायन हुआ उस प्रतिशतता से शहर में वापसी नहीं हुई। इसके कारण सामाने आए हैं–धन की कमी, यातायात के साधन के प्रति अंतरराज्य प्रतिबंध, साथ ही कोविड–19 के नए वैरिएंट के आने की खबर से भयभीत हैं एवं अभी तक इसकी कोई दवाई उपलब्ध नहीं है यह भी एक बड़ी समस्या है। जो महिला घरेलू कामगार वापस आए उनकोपूर्व की भांति रोजगार उपलब्ध नहीं हुए है। "भय एक भाव है" इस भय से बहुत प्रयास करने पर ही मुक्त हो सकते हैं, यह कोविड–19 के संदर्भ में भी सत्य है, जैसे–जैसे समय बीत रहा है वैक्सीन भी उपलब्ध हो रही है लगभग सभी महिला घरेलू कामगार वैक्सीन लगवा चुके है इसके उपरांत भी नियोक्ता उनके साथ का व्यवहार करता है कि वो ही कोरोना वायरस वाहक या कैरियर है। इस कदर है कि उन्हें दोयम दर्जे का केमिकल युक्त सैनेटाइजर देना, जिस कारण उनकी त्वचा जल जाती है, उनके कपड़ें खराब हो जाते है, आदि। सभी को इस भय से उबरने के लिए शिक्षित एवं जागरुक करना होगा, अपना दृष्टिकोण सकारत्मक करना होगा।

अध्ययन में पाया गया कि महिला घरेलू कामगारों में कुछ महिला घरेलू कामगार स्वयं की इच्छा से तो ज्यादातर मजबुरी में घरेलू काम कर रही हैं। जो मजबुरी में काम कर रही है उनके पतियों, परिवार के सदस्य दुर्व्यसनों में लिप्त हैं कोविड–19 में कमाई का जरिया बंद हो जाने से उनके घरवाले सारा दोष उन पर ही डालते, धन की छीना–झपटी के लिए मार–पिटाई, हिंसा करते। अध्ययन से हम जान पाते है कि कोविड–19 में महिला घरेलू का मगारों के साथ घरेलू हिंसा की घटनाएं बढ़ी हैं। इस हिंसा का प्रभाव कहीं न कहीं परिवार के सदस्यों एवं बच्चों पर भी पड़ा है, घर पर बच्चों ने अपनी माँ को साथ रहकर सबल बनाया है जहाँ महिला घरेलू कामगारों अपने बच्चों के लिए समय नहीं निकाल पाती थी, उनको बच्चों के साथ रहने का समय मिला उनकी देखभाल का समय निकाल पाई, महिला घरेलू कामगारों के लिए यह एक अच्छा अनुभव रहा।

महिला घरेलू कामगारों के पास रोजगार न होने की वजह से वे लोग अपने बच्चों के स्कूल को सुचारू रूप से न हीं चला पाई, उनके पास फीस के लिए पैसे भी नहीं थे, इनके बच्चों की शिक्षा छूट गई। स्कूल फीस न होना, आनलाईन क्लास क्या है? इसका पता न होना। इससे Digital Divide का व्यापक असर देखने को मिला है। सर्वे में पाया गया है कि कोविड–19 के सकारत्मक प्रभाव/पहलू भी देखने को मिले हैं। कुछ न से कुछ बेहतर की तर्ज पर कई महिला घरेलू कामगारों ने अपना स्वयं का रोजगार शुरू किया तो किसी ने अपने गाँव में खेतों की ओर रूख किया और जो संसाधन उपलब्ध थे उनका उपयोग किया। यह सकारात्मक प्रभाव नकारत्मक पहलू के अनुपात में एकदम नगण्य है।

शोधार्थी–
रंजना के. लाल

शोध निर्देशक–
डॉ. जे.सी.आर्य
एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, समाज शास्त्र विभाग

एस.एम.जे.एन. (पी.जी.) कॉलेज, हरिद्वार

कॉलेज में छात्रों को प्रवेश बिना किसी भेदभाव के केवल मैरिट सूची के आधार पर ही किया जाता है।

15–07–2019 को कॉलेज एवं रॉकमैन फाउण्डेशन द्वारा संयुक्त तत्वाधान में 'जल संचय–जल संरक्षण एवं संवर्धन' विषय पर विचारगोष्ठी का आयोजन कर कॉलेज प्रांगण में पौधारोपण कार्यक्रम चलाया गया। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण एवं पतित पावनी माँ गंगा को स्वच्छ व निर्मल बनाने के लिए सामूहिक प्रयासों पर बल देते हुए वक्ताओं ने इसके लिए योगदान देने का संकल्प लिया। 20–07–2019 को हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर द्वारा बी.कॉम. तृतीय वर्ष का परीक्षाफल घोषित किया गया है, जिसमें हमारे महाविद्यालय का परीक्षाफल लगभग 99.62 प्रतिशत रहा।

11 अगस्त, 2019 को उत्तराखण्ड राज्य की महामहिम राज्यपाल श्रीमती बेबी रानी मौर्य द्वारा कालेज के प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा को उत्तराखण्ड गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम कदम फाउंडेशन द्वारा आयोजित किया गया। 10 अक्टूबर, 2019 को बाल भिक्षावृत्ति के खिलाफ चलायी जा रही मुहिम ऑपरेशन मुक्ति की टीम तथा व कॉलेज के संयुक्त तत्वाधान में 'आपरेशन मुक्ति–भिक्षा नहीं शिक्षा' का अभियान चलाया गया। सत्र 2019–20 में विद्यार्थियों के पठन–पाठन हेतु 12000 sqft में निर्मित 08 स्मार्ट क्लास रुम का भी निर्माण कराया गया।

29–08–2019 को कॉलेज में 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 'फिट इंडिया मूवमेंट' की लॉचिंग का लाईव टेलीकास्ट महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं को दिखाया गया।

14 सितम्बर, 2019 को कॉलेज में राष्ट्र भाषा हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी विभाग द्वारा एक साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कॉलेज के विभिन्न छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग कर हिन्दी के सम्मान व गौरव की बात करते हुए अपनी कविताओं, दोहों और विचारों को प्रस्तुत किया। 20 सितम्बर, 2019 को कॉलेज में जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा चलाये जा रहे 'मतदाता सत्यापन अभियान' के अन्तर्गत कॉलेज के छात्र–छात्राओं को अभियान की विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी।

01 अक्टूबर, 2019 को कॉलेज में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की 150वीं जयन्ती व श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयन्ती के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर 'गांधी जी से युवा क्या सीखें' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय में छात्राओं हेतु सैनेटरी वैडिंग मशीन छात्रा विश्राम कक्ष में तथा तथा नवीन छात्र प्रसाधन कक्ष का लोकार्पण भी किया गया। 02 अक्टूबर, 2019 को राष्ट्रपिता श्री महात्मा गाँधी व पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की जयन्ती के अवसर पर महाविद्यालय परिसर में छात्र–छात्रा, शिक्षक व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के साथ मिलकर अस्वच्छता पर स्वच्छता अभियान 'क्लीन कैम्पस ग्रीन कैम्पस' चलाया गया 11 अक्टूबर, 2019 । बाल भिक्षावृत्ति के खिलाफ चलायी जा रही मुहिम ऑपरेशन मुक्ति की टीम ने कॉलेज में 'आपरेशन मुक्ति–भिक्षा नहीं शिक्षा' का आयोजन किया गया।

12 अक्टूबर, 2019 कॉलेज में जीवन विकास कौशल विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। 24 अक्टूबर, 2019। कॉलेज के छात्र–छात्राओं द्वारा माँ गंगा की सफाई अभियान का प्रारम्भ गोविन्द घाट, प्रेमनगर आश्रम के पास किया गया। 31 अक्टूबर, 2019 को कॉलेज में लौहपुरूष सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयन्ती के अवसर पर उनका भावपूर्ण स्मरण किया गया। 06 दिसम्बर, 2019 को हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केन्दीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल की अन्तर्महाविद्यालीय एथेलेक्टिस प्रतियोगिता में कॉलेज के 07 छात्र व 05 छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।

28 दिसम्बर, 2019 कॉलेज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्रीमहन्त लाखन गिरि जी महाराज की अध्यक्षता में उत्तराखण्ड विज्ञान शिक्षा एवं शोध केन्द्र, देहरादून एवं हरिद्वार नागरिक मंच के संयुक्त तत्वाधान में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें उत्तराखण्ड राज्य के विशेष सन्दर्भ में जल संरक्षण हेतु किये जा रहे प्रयासों व तकनीकों से जागरुक किया गया।

25 जनवरी, 2020 राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर 'सशक्त लोकतंत्र, मजबूत गणतंत्र' कार्यक्रम में स्वीप के अन्तर्गत युवा मतदाताओं की जागरूकता सम्बन्धी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर 'सशक्त गणतंत्र–सांस्कृतिक संध्या' सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

26 जनवरी, 2020 कॉलेज में गणतंत्र दिवस बड़ी ही धूमधाम से मनाया गया।

10 फरवरी, 2020 कॉलेज में बच्चों को कृमि से मुक्त कर खून की कमी में सुधार और पोषण स्तर को बेहतर बनाने के लिए राष्ट्रीय कृमि दिवस पर कृमिनाशक दवा खिलायी गयी।

14 फरवरी, 2020 14 फरवरी, 2019 को जम्मू–कश्मीर के पुलवामा में आतंकी हमले में शहीद हुए माँ भारती के वीर सपूत, सी.आर.पी.एफ. के शहीद जवानों की बरसी पर कॉलेज की शौर्य दीवार पर शहीदों को भावुकक्षणों में अश्रुपूरित श्रद्धाजंलि अर्पित कर नमन किया गया।

28 फरवरी, 2020 कॉलेज में उत्तराखण्ड विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान केन्द्र (यू.सर्क) देहरादून के संयुक्त तत्वाधान में 'राष्ट्रीय विज्ञान' दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

03 मार्च, 2020 कॉलेज से एम.कॉम. की उत्तीर्ण छात्रा सुश्री नितिज्ञा वर्मा का राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला, देहरादून में असिस्टैंट प्रोफेसर वाणिज्य संकाय, सुश्री सृष्टि का राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उत्तरकाशी तथा तथा कु. साक्षी शर्मा संविदा शिक्षक/पूर्व छात्रा का सहायक विकास अधिकारी, सहकारिता विभाग, पौड़ी, उत्तराखण्ड नियुक्त होने पर तीनों छात्राओं को समस्त कॉलेज परिवार ने अपनी शुभकामनायें प्रेषित की।

04 मार्च, 2020 कोरोना वायरस से बचाव हेतु चिकित्सक डॉ. ज्योति चौहान द्वारा प्राध्यापकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों और छात्र–छात्राओं को बचाव हेतु सुझाव दिये। 05 मार्च, 2020 । कॉलेज में 'महिला एवं समाज' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया।

06 मार्च, 2020 'महिलायें कानून एवं रोजगार' विषय पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कार्यक्रम की मुख्य वक्ता व मुख्य अतिथि सुश्री कमलेश उपाध्याय, एस.पी. सिटी महोदया ने छात्र–छात्राओं को महिला एवं अधिकार के बारे में जागरूक कर अपने विचार रखे।

15–07–2020 वैदिक मन्त्रोउच्चारण के साथ हरेला के शुभ पावन अवसर पर अपर महाकुम्भ मेला अधिकारी, सरदार हरबीर सिंह, कॉलेज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री महन्त लखन गिरि जी महाराज, सचिव श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज व कॉलेज प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार द्वारा पौधारोपण कार्यक्रम चलाया गया।

08–08–2020 गांधी जी द्वारा शुरू किये गये 'भारत छोड़ो आन्दोलन' विषय पर सोशल डिस्टेंसिंग नॉमर्स के अनुसार परिचर्चा की गयी।

11–08–2020 अयोध्या में श्रीराम मन्दिर की आधारशिला और भूमि पूजन कार्यक्रम में शामिल हुए कॉलेज प्रबन्ध समिति के सचिव श्रीमहन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज का कॉलेज पहुंचने पर कॉलेज परिवार ने फूल माला पहनाकर भव्य स्वागत किया।

15 अगस्त, 2020 कॉलेज में स्वतंत्रता दिवस बड़ी ही धूमधाम से मनाया गया।

08 सितम्बर, 2020 प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा ने हिमालय बचाओ अभियान का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर कॉलेज के शिक्षकों व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को हिमालय रक्षा की शपथ दिलायी गयी।

15 सितम्बर, 2020 हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर की स्नातक व स्नातकोत्तर अन्तिम सेमेस्टर की मुख्य परीक्षा/बैक पेपर परीक्षा में कोविड–19 के नियमों का परीक्षार्थियों से पालन करवाया गया।

28 सितम्बर 2020 शिक्षक, शिक्षार्थी व कॉरपॉरेट जगत के मध्य सामंजस्य विकसित करने के उद्देश्य से इन्नोरेनोवेट सोल्युशन्स प्राइवेट लिमिटेट के 'सहयोग' कार्यक्रम के अंतर्गत कंपनी के संस्थापक व सीईओ नितिन पाण्डेय ने मुख्य वक्ता के रूप में बोलते जीवन में केवल एक कैरियर का विकल्प चुनने के बजाए अनेक कैरियर चुनने पर बल दिया।

28 सितम्बर 2020 शहीद भगत की जयन्ती पर महाविद्यालय में सोशल डिस्टेंसिंग के साथ एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें अपने परिवर्तनकारी विचारों व अद्वितीय त्याग से स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा देने वाले, देश के युवाओं में स्वाधीनता के संकल्प को जागृत करने वाले शहीद भगत सिंह के चरणों में कोटि–कोटि नमन किया।

02 अक्टूबर, 2020 राष्ट्रपिता श्री महात्मा गाँधी व पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की जयन्ती के अवसर पर दोनों महापुरूषों की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित कर को नमन किया गया।

05 अक्टूबर, 2020 महाविद्यालय में वीर सैनिकों की याद में बनी 'शौर्य दीवार' का अपर कुम्भ मेला अधिकारी हरबीर सिंह ने सोशल डिस्टेंसिंग नॉमर्स के अनुसार उद्घाटन किया।

09 अक्टूबर, 2020 माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा चलाये जा रहे कोविड–19 के विरूद्ध जन जागरूकता अभियान को व्यापक रूप से सफल बनाये जाने के उद्देश्य से माननीया उच्च शिक्षा निदेशक उत्तराखण्ड डॉ. कुमकुम रौतेला द्वारा महाविद्यालय में समस्त शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों व उपस्थित समस्त छात्र–छात्राओं को कोविड–19 से बचाव हेतु शपथ–पत्र भरवाकर हस्ताक्षर भी करवाये गये।

03 नवम्बर, 2020 करवाचौथ की पूर्व संध्या पर 'महिलाओं के घरेलू कार्यों का मौद्रिक मूल्याकंन' विषय पर एक

परिचर्चा का आयोजन किया गया।

09 नवम्बर, 2020 उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस के अवसर दिवस पर मुख्य अतिथि सरदार हरबीर सिंह, अपर कुम्भ मेला अधिकारी की की अध्यक्षता में कार्यक्रम आयोजित किया गया।

18–11–2020 हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर द्वारा बी.ए. षष्टम् सेमेस्टर के परीक्षाफल में कॉलेज की छात्रा कु. आरती गोस्वामी पुत्री श्री सुरेन्द्र गोस्वामी ने विश्वविद्यालय में श्रेष्ठ अंक (95.6 प्रतिशत) प्राप्त कर जनपद हरिद्वार नाम भी गौरावान्वित किया। 26 नवम्बर, 2020 । संविधान दिवस के विसर पर भारतीय संविधान की शपथ दिलायी गयी। 02 दिसम्बर, 2020। कॉलेज के पंकज यादव (संविदा प्रवक्ता) ने समाजशास्त्र, कॉलेज की छात्रा कु. आस्था आनन्द ने वाणिज्य तथा टेशूराज गौड़, पूर्व छात्र बी.कॉम. ने योगा में यू.जी.सी. द्वारा संचालित नेट की परीक्षा उत्तीर्ण की।

12 दिसम्बर, 2020 उत्तराखण्ड राज्य शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों को पुनः 15 दिसम्बर से पठन–पाठन हेतु खोले जाने के सन्दर्भ में दिये गये दिशा–निर्देश के अनुरूप बी.एससी. की कक्षाओं में 15 दिसम्बर से पुनः ऑफलाईन शिक्षण कार्य प्रारम्भ।

16 दिसम्बर, 2020 विजय दिवस के अवसर दिवस पर कॉलेज में निर्मित शौर्य दीवार पर शहीदों को नमन किया।

18 दिसम्बर, 2020 मुख्य अतिथि संजय गुलाटी, कार्यपालक निदेशक, भेल, हरिद्वार द्वारा महाविद्यालय परिसर में भेल के सौजन्य से निर्मित छात्राओं हेतु प्रसाधन कक्ष का लोकार्पण किया गया।

22 दिसम्बर 2020 राष्ट्रीय गणित दिवस पर कॉलेज में क्वीज कम्पीटिशन का आयोजन किया गया।

05 जनवरी, 2021 । कॉलेज की छात्रा कु. साक्षी शर्मा की जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी के पद पर नियुक्ति होने पर समस्त कॉलेज परिवार द्वारा उनका कॉलेज पहुंचने पर स्वागत किया गया।

06 जनवरी, 2021 कॉलेज की बी.ए. पंचम सेमेस्टर की छात्रा कु. शुभी कुर्ल पुत्री श्री भानू प्रताप कुर्ल को राष्ट्रीय कैडेट कोर की विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित होकर उत्कर्ष कार्य हेतु 31. यू.के. बी.एन. एन.सी.सी. हरिद्वार के कमान अधिकारी कर्नल यू.एस. त्रिवेदी द्वारा सम्मानित किया गया।

12 जनवरी, 2021 स्वामी विवेकानन्द जी के जन्मदिवस के अवसर पर (राष्ट्रीय युवा दिवस) ''स्वामी विवेकानन्द जी के विचारों की उत्तराखण्ड राज्य के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता'' विषय पर राज्य स्तरीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।**12 जनवरी, 2021** अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत द्वारा महाविद्यालय में किया गया विचार–गोष्ठी का आयोजन

15 जनवरी, 2021 'सेना दिवस' के अवसर पर कॉलेज परिसर में निर्मित शौर्य दीवार पर वीर सैनिकों को नमन किया गया।

19–01–2021 युवा चेतना पखवाड़े के अन्तर्गत अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश व माँ गंगे ब्लड सैंटर, हरिद्वार द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का शुभारम्भ कॉलेज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्रीमहन्त लखन गिरि जी महाराज की अध्यक्षता में माननीय मदन कौशिक, कैबिनेट मंत्री द्वारा किया गया।

22 जनवरी, 2021 'युवा चेतना पखवाड़े' के अन्तर्गत रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

23 जरवरी, 2021 युवा पखवाड़े के अन्तर्गत 'नेताजी सुभाष चन्द्र बोस' की 125वीं जयन्ती को 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाया गया।

25 जनवरी, 2021 राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा द्वारा उपस्थित समस्त शिक्षक, कर्मचारी व छात्र–छात्राओं को मतदाता द्वारा ली जाने वाली शपथ दिलवायी गयी।

26 जनवरी, 2021 गणतंत्र दिवस बड़ी ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर कॉलेज प्रबन्ध समिति के सदस्य श्रीमहन्त राधे गिरि जी महाराज व अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. नरेश कुमार गर्ग द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

30 जनवरी, 2021 शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों व कॉलेज के छात्र–छात्राओं द्वारा राष्ट्रपिता श्री महात्मा गाँधी जी की पुण्य तिथि पर दो मिनट का मौन रखकर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर किये।

19 फरवरी, 2021 कॉलेज में सत्र 2020–21 हेतु 'एंटी ड्रग्स क्लब' गठन किया गया।

22 फरवरी, 2021 राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा आयोजन कोविड–19 जागरूकता के अन्तर्गत एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की 50 छात्राओं ने प्रतिभाग कर मास्क निर्मित किये, जिनका वितरण कॉलेज के छात्र–छात्राओं, कर्मचारियों एवं श्रमदान में रत को निशुल्क किया जायेगा।

08 मार्च, 2021 अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्राओं द्वारा स्लोगन प्रतियोगिता का

आयोजन किया गया।

12 मार्च, 2021 'आजादी का अमृत महोत्सव' पखवाड़े के अन्तर्गत विचार गोष्ठी का आयोजन।

15 मार्च, 2021 हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर–गढ़वाल द्वारा आयोजित अन्तर्महाविश्वविद्यालीय नॉर्थ जॉन महिला हॉकी प्रतियोगिता, पटियाला, हेतु एस.एम.जे.एन. पी.जी. कॉलेज की तीन छात्राओं कु. दुर्गा कौरंगा बी.ए. पचंम सेमेस्टर, कु. विमलेश कौरंगा बी.ए. तृतीय सेमेस्टर तथा कु. हिमानी कौरंगा बी.ए. तृतीय सेमेस्टर का चयन हुआ।

18 मार्च, 2021 'आजादी का अमृत महोत्सव' पखवाड़े के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं द्वारा पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 20 मार्च, 2021 । 'आजादी का अमृत महोत्सव' पखवाड़े के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं द्वारा 'आजादी के मतवाले' संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

22 मार्च, 2021 'आजादी का अमृत महोत्सव' पखवाड़े के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन विषय पर 'ऑन द स्पॉट क्वीज प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

23 मार्च, 2021 एस.एम.जे.एन. पी.जी. कॉलेज में आज 'आजादी का अमृत महोत्सव' पखवाड़े के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं द्वारा मेहन्दी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा कॉलेज में निर्मित शौर्य दीवार पर शहीदों को पुष्पाजंलि अर्पित कर वीर शहीदों की शहादत को नमन किया गया।

06 अप्रैल, 2021 दिनांक 12 मार्च से प्रारम्भ हुए 'आजादी का अमृत महोत्सव' का आज समापन अवसर पर कॉलेज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री महन्त लखन गिरि जी महाराज, सचिव श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिजनों को शॉल व पुष्प गुच्छ भेंट कर उनका अभिनन्दन किया गया।

09 अप्रैल, 2021 कॉलेज में स्मार्ट क्लास हेतु नवनिर्मित भवन एच–ब्लॉक का प्रदेश के मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत द्वारा अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष श्री महन्त नरेन्द्र गिरि जी महाराज की अध्यक्षता में व कॉलेज प्रबन्ध समिति के सचिव श्रीमहन्त रविन्द्र पुरी जी की गरिमामयी उपस्थिति में लोकार्पण किया गया।

वार्षिक आख्या सत्र (2020–21)

प्रवेश समिति

विद्यार्थियों की संख्या की दृष्टि से तथा अन्य गुणात्मक दृष्टिकोण से कॉलेज सतत् विकासोन्मुख है। छात्र–छात्रायें यहाँ के शान्त वातावरण में तल्लीनता व मनोयोग के साथ अपनी अध्ययन क्षमता को विकसित करके सम्मानजनक अंकों के साथ परीक्षा उत्तीर्ण करते रहे हैं। शिक्षणेत्तर गतिविधियों के माध्यम से अपनी रुचि विकसित करके विद्यार्थी विश्वविद्यालय स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होकर विशिष्टता प्राप्त करने की सफल चेष्टा भी करते हैं। कॉलेज में छात्रों को प्रवेश बिना किसी भेदभाव के केवल मैरिट योग्यता सूची के आधार ही किया जाता है। बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., एम.कॉम. व एम.ए. में दोनों सत्रों में सभी प्रवेश विशुद्ध रुप से योग्यता सूची के आधार पर किये गये।

(डॉ. संजय कुमार माहेश्वरी)
मुख्य प्रवेश संयोजक

अनुशासन समिति

इस सत्र में निश्चित ही कॉलेज उत्कृष्ट ऊंचाईयों को प्राप्त करने में सफल रहा है। वहीं कॉलेज परिवार के सभी शिक्षक साथी, संविदा शिक्षक साथी, शिक्षणेत्तर कर्मचारी भी बधाई के पात्र हैं जिनके सहयोग से अनुशासन समिति ने कॉलेज में ये उच्चतम मापदण्ड स्थापित किये हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि विगत सत्रों में किसी भी छात्र–छात्रा के विरुद्ध कोई भी अनुशासनात्मक/दण्डात्मक कार्यवाही नहीं की गयी। महाविद्यालय के समस्त छात्र–छात्रायें पूरे शैक्षणिक सत्र में अनुशासित रहकर कॉलेज की वेशभूषा में उपस्थित रहे। मैं कॉलेज प्रबन्ध समिति के सचिव परमपूज्य महन्त श्री रविन्द्र पुरी जी महाराज, कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा की आभारी हूँ जिन्होंने समय–समय पर हमारा मागदर्शन किया। मैं अपनी अनुशासन समिति के सदस्य डॉ. मन मोहन गुप्ता, डॉ. तेजवीर सिंह तोमर एवं छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ. संजय कुमार माहेश्वरी की भी आभारी हूँ जिन्होंने हमेशा मेरा पूर्ण सहयोग किया।

(डॉ. सरस्वती पाठक)
मुख्य अनुशासन अधिकारी

एंटी ड्रग्स क्लब का गठन के सदस्यों की सूची (सत्र 2019–20)

संरक्षक मण्डल :

श्रीमहन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज, अध्यक्ष, कॉलेज प्रबन्ध समिति
प्रो. पी.एस. चौहान, शिक्षाविद्
डॉ. सुनील कुमार बत्रा, प्राचार्य

क्र.स.	छात्र–छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा
1	मानव वर्मा	श्री रविन्द्र वर्मा	बी.कॉम. प्रथम सेम
2	सुनैना सैनी	श्री सुभाष चन्द्र सैनी	बी.कॉम. प्रथम सेम
3	महिमा	श्री संजय अरोड़ा	बी.ए. प्रथम सेम
4	स्पर्श लखेड़ा	श्री हरीश चन्द्र लखेड़ा	बी.ए. प्रथम सेम
5	गणेश गौड़	श्री सियाराम गौड़	बी.एससी. प्रथम सेम
6	विभोर गर्ग	श्री सुनील गर्ग	बी.कॉम. तृतीय सेम
7	कोमल बवेजा	श्री जे.एल. बवेजा	बी.कॉम. तृतीय सेम
8	जूही पालीवाल	श्री अशोक कुमार	बी.ए. तृतीय सेम
9	दुर्गा कोरंगा	श्री रणजीत सिंह कोरंगा	बी.ए. तृतीय सेम
10	अफरोज जहाँ	श्री हयात अली	बी.एससी. तृतीय सेम
11	अनन्या मुद्गल	श्री योगेन्द्र शर्मा	बी.कॉम. पंचम सेम
12	ईशिका भाटी	श्री प्रकाश भाटी	बी.ए. पंचम सेम
13	आरती गोस्वामी	श्री सुरेन्द्र गोस्वामी	बी.ए. पंचम सेम
14	शुभांगी कंधेला	श्री राजीव कुमार	बी.ए. पंचम सेम
15	अनन्या भटनागर	श्री आलोक भूषण	बी.ए. पंचम सेम
16	हिमानी पाण्डेय	श्री मोहन चन्द्र पाण्डेय	एम.कॉम. प्रथम सेम
17	गौरव वर्मा	श्री मनोहर राम	एम.कॉम. प्रथम सेम
18	दीक्षा शर्मा	श्री श्यामलाल शर्मा	एम.ए. प्रथम अंग्रेजी

समाजसेवी संस्था : उत्तरांचल पंजाबी महासभा, हरिद्वार नागरिक मंच, आध्यात्म चेतना संघ, श्री गुरु चरणानुरागी समिति आदि

बुद्धिजीवी वर्ग : श्री ललित मिगलानी (अधिवक्ता), श्री जगदीश लाल पाहवा, श्री सतीश कुमार जैन, डॉ. विशाल गर्ग आदि

अभिभावकगण : श्री श्यामलाल शर्मा, श्री सुभाष चन्द्र सैनी, श्री मनोहरराम, श्री योगेन्द्र शर्मा, श्री सुनील गर्ग आदि

प्राध्यापकगण : डॉ. सरस्वती पाठक (मुख्य अनुशासन अधिकारी), डॉ. संजय कुमार माहेश्वरी (अधिष्ठाता छात्र कल्याण), डॉ. अमिता श्रीवास्तव, डॉ. पूर्णिमा सुन्दरियाल, डॉ. निविन्धया शर्मा, डॉ. आशा शर्मा, डॉ. कुसुम नेगी, वैभव बत्रा, डॉ. विजय शर्मा, श्रीमती रिंकल गोयल, कार्यालय अधीक्षक श्री मोहन चन्द्र पाण्डेय आदि

एंटी ड्रग्स क्लब का गठन के सदस्यों की सूची (सत्र 2020–21)

महाविद्यालय में सत्र 2020–21 हेतु एंटी ड्रग्स क्लब का गठन किया गया जिसमें कॉलेज के छात्र–छात्राओं, अभिभावकों, समाजसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों को सम्मिलित किया गया जिसका विवरण नीचे तालिका में वर्णित है–

क्र.स.	छात्र–छात्रा का नाम	पिता का नाम	कक्षा
1	विभोर ध्यानी	श्री सुरेश ध्यानी	बी.कॉम. प्रथम सेम
2.	आरती रावत	श्री राम मनोहर रावत	बी.कॉम. प्रथम सेम
3.	वैभव अरोड़ा	श्री मुकेश कुमार	बी.कॉम. तृतीय सेम

4.	उत्कर्ष कुमार	श्री राजकुमार	बी.कॉम. तृतीय सेम
5.	आंचल नेगी	श्री बुद्धि सिंह नेगी	बी.कॉम. पंचम सेम
6.	कोमल बवेजा	श्री जे.एल. बवेजा	बी.कॉम. पंचम सेम
7.	अक्षिता गोयल	श्री अनुज गोयल	एम.कॉम. प्रथम सेम
8.	कु. हिमानी पाण्डेय	श्री मोहन चन्द्र पाण्डेय	एम.कॉम. तृतीय सेम
9.	प्राची तिवारी	श्री नवीन कुमार तिवारी	एम.कॉम. तृतीय सेम
10.	गौरव वर्मा	श्री मनोहर राम	एम.कॉम. तृतीय सेम
11.	आकाश शर्मा	श्री मोहन शर्मा	बी.ए. पंचम सेम
12.	जूही पालीवाल	श्री अशोक कुमार	बी.ए. पंचम सेम
13.	कनक वर्मा	श्री अजय कुमार वर्मा	बी.ए. पंचम सेम
14.	राजा भट्ट	श्री प्रेम बल्लभ भट्ट	बी.ए. पंचम सेम
15.	दुर्गा कोरंगा	श्री रणजीत सिंह कोरंगा	बी.ए. पंचम सेम
16.	निक्की शर्मा	श्री गौरी शंकर	बी.ए. तृतीय सेम
17.	स्पर्श लखेड़ा	श्री हरीश चन्द्र लखेड़ा	बी.ए. तृतीय सेम
18.	कीर्ति पाण्डेय	श्री भीमदत्त पाण्डेय	बी.ए. तृतीय सेम
19.	अफरोज जहाँ	श्री हयात अली	बी.एससी. पंचम सेम
20.	गणेश गौड़	श्री सियाराम गौड़	बी.एससी. तृतीय सेम

संरक्षक मण्डल : श्रीमहन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज, अध्यक्ष, कॉलेज प्रबन्ध समिति
प्रो. पी.एस. चौहान, शिक्षाविद्
डॉ. सुनील कुमार बत्रा, प्राचार्य

समाजसेवी/संस्था : श्री ललित मिगलानी (अधिवक्ता), श्री जगदीश लाल पाहवा, श्री प्रपुफल्ल ध्यानी, श्री अरविन्द चंचल, श्री सुधाकर (अधिवक्ता), श्री सतीश कुमार जैन, डॉ. विशाल गर्ग

अभिभावकगण : श्री सुरेश ध्यानी, श्री मुकेश कुमार, श्री सियाराम गौड़ व श्री राममनोहर रावत आदि

प्राध्यापकगण : डॉ. सरस्वती पाठक (मुख्य अनुशासन अधिकारी)
डॉ. संजय कुमार माहेश्वरी (अधिष्ठाता छात्र कल्याण)
डॉ. प्रज्ञा जोशी, डॉ. विजय शर्मा, पंकज यादव, अंकित अग्रवाल, वैभव बत्रा, दिव्यांश शर्मा, श्रीमती रिंकल गोयल, श्रीमती रिचा मिनोचा, मोहन चन्द्र पाण्डेय

वैश्विक आपदा – नोवल कोरोना वायरस (कोविड–19) में सराहनीय सेवा

''आम जन मानस ने यह बात मानी,
सेवाभाव में नहीं कोई श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी का सानी''।

श्री मंशा देवी मन्दिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज द्वारा लॉकडाउन के दौरान की गयी मानवता की सच्ची सेवा, प्रदेश के मुख्यमंत्री, नगर विकास मंत्री, केन्द्रीय मंत्री, अनेकों सामाजिक संगठनों, यहाँ तक की आम जन–मानस ने की भूरि–भूरि सराहना।

- कोविड–19 में हुए सम्पूर्ण लॉकडाउन के दौरान श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज द्वारा प्रधनमंत्री कैयर्स फण्ड, मुख्यमंत्री राहत कोष तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लोगों की आर्थिक मद्द प्रदान की गयी।
- रोगियों हेतु एक एम्बुलैंस श्री रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम, कनखल, हरिद्वार को दी गयी।

श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज द्वारा लगभग रुपये तीन करोड़ से अधिक की आर्थिक मदद की जा चुकी है। साथ ही 24 मार्च, 2020 से अद्यतन प्रतिदिन लगभग रुपये पचास हजार का भोजन श्री महन्त जी की ओर से निराश्रित, प्रशासन के कर्मचारी, पुलिस, चिकित्सक, सफाई कर्मचारी जो सेवा में रत हैं, लगातार उनके भोजन की व्यवस्था अविरल चलायी गयी। कोई भी व्यक्ति भूखा न सोए ऐसे विचारों को श्री महन्त जी द्वारा सत्य किया गया, जो निःसन्देह एक सराहनीय कार्य है, इस सामाजिक सेवा हेतु श्री महन्त जी का कोई सानी नहीं है, जिसके लिए श्री महन्त

जी को सादर वंदन एवं अभिनन्दन।

प्रदेश सरकार ने कोरोना संकट से व्यवस्थित रुप से निपटने के लिए अपर कुम्भ मेला अधिकारी को नोडल अधिकारी व कॉलेज प्रबन्ध समिति के सचिव व श्री मंशा देवी मन्दिर ट्रस्ट के अध्यक्ष पूज्य श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज को **मदर सी.एस.ओ.** नामित किया गया।

परम पूजनीय श्रीमहन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज के विचार एवं पावन सोच

''नर सेवा ही नारायण सेवा है, ऐसी सेवा, जिसमें ना कोई अपेक्षा हो और न ही कोई स्वार्थ, जिसको करने से आत्मा को सन्तुष्टि मिले। समस्त देशवासियों को निर्धन, पीड़ित और दीन–दुखियों की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए क्योंकि सेवा और परोपकार ही मानव का वास्तविक रूप है। आइये! हम सब संकल्प लें कि मानव मात्र की रक्षा के लिए कोरोना जैसी महामारी से संयम, समर्पण, सेवा, शांति, संवेदनशीलता के गुणों के साथ लड़कर निजात मिल सके। हम यह भी शपथ लें कि अपने आस–पास किसी भी मानव को भूखा न सोने दें। देशहित में यह संकल्प प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। ताकि आने वाली पीढ़ी इस सेवाभाव पर गर्व कर सके और परोपकार की इस पवित्र परम्परा को निर्बाध, अनवरत जारी रखे।'' यह शपथ श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज द्वारा प्रत्येक व्यक्ति, समाजसेवी, कोरोना योद्धाओं को अनवरत् दिलायी गयी। वास्तव में पालन हार श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज के श्री चरणों में शत–शत नमन एवं वंदन।

(डॉ. सुनील कुमार बत्रा)
प्राचार्य

अयोध्या में श्री राम मन्दिर निर्माण

- कॉलेज प्रबन्ध समिति के सचिव व श्री माँ मंशा देवी मन्दिर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी ने अविस्मरणीय दिवस पर समस्त भारतवासियों को अपनी शुभकामना दी।
- अयोध्या में श्रीराम मन्दिर की आधारशिला और भूमि पूजन कार्यक्रम में शामिल होने के पश्चात् हरिद्वार लौटे श्रीमहन्त का कॉलेज परिवार ने किया भव्य स्वागत।

श्रीमहन्त के श्री मुख से –

- श्रीमहन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज ने श्रीराम मन्दिर निर्माण पर गर्व महसूस करते हुए श्रीराम जन्म भूमि दिवस (05 अगस्त, 2020) का यह दिन सत्य, अहिंसा और न्यायप्रिय भारत की अनुपम भेंट है। श्रीराम मन्दिर तप, त्याग और संकल्प के प्रतीक होने के साथ–साथ शाश्वत आस्था और राष्ट्रीय भावना की भी अनुपम मिशाल बनेगा।
- श्रीराम मन्दिर निर्माण हेतु श्री राम जन्मभूमि तीर्थ ट्रस्ट को निर्माण हेतु 21 लाख रुपये की मदद्।
- 05 लाख रुपये का चैक एस.एम.जे.एन.(पी.जी.) कॉलेज के विकास हेतु।
- श्री गंगोत्री धाम के कपाट खुलने से कपाट बंद होने तक प्रसाद, भोजन, अन्नक्षेत्र आदि का पूरा खर्च वहन श्री महन्त रविन्द्र पुरी जी महाराज द्वारा किया जा रहा है।

प्रतिवेदन क्रीडा विभाग सत्र 2019–20 व 2020–21

सत्र 2019–20 हेतु कॉलेज में क्रीड़ा विभाग का उत्तरदायित्व वाणिज्य विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. तेजवीर सिंह तोमर, समाजशास्त्र विभाग की असिस्टैंट प्रोफेसर डॉ. सुषमा नयाल, राजनीति विज्ञान विभाग के असिस्टैंट प्रोफेसर विनय थपलियाल को सौंपा गया। कॉलेज में क्रीड़ा विभाग को तत्परता एवं गतिशीलता प्रदान करते हुए कॉलेज स्तर पर क्रीड़ा समिति का गठन किया जाता है। अतः सत्र 2019–20 हेतु दिनांक 21.9.2019 को कॉलेज क्रीड़ा समिति का गठन किया गया तथा कॉलेज की ओर से अन्तर्महाविद्यालीय स्तर पर क्रॉस कंट्री (पुरुष वर्ग), चैस (पुरूष वर्ग), बॉक्सिंग (पुरुष व महिला वर्ग), बालीवॉल (पुरुष वर्ग), कबड्डी (पुरूष वर्ग), क्रिकेट (पुरूष वर्ग), फुटबाल (पुरूष वर्ग), बास्केट बॉल (पुरूष वर्ग), खो–खो (पुरूष वर्ग), बैडमिंटन (पुरूष वर्ग), हॉकी (महिला वर्ग), टेबिल टेनिस (पुरुष व महिला वर्ग) एवं एथलेक्टिस प्रतियोगिताओं (पुरुष व महिला वर्ग) में टीम भेजने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया। खेलकूद सामान के क्रय एवं बजट पर चर्चा करते हुए दिनांक 12.10.2019 को क्रीड़ा समिति की उप–समिति के रुप में कार्य करने हेतु क्रीड़ा क्रय समिति का गठन किया गया। दिनांक 01.02.2020 को क्रीड़ा समिति की बैठक आयोजित की गयी तथा सत्र 2019–20 के लिए खेलकूद से सम्बन्धित विभिन्न कार्यकलापों के विषय में महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये गये।

कॉलेज एवं विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रा–छात्राओं को क्रीड़ा प्रतियोगिताओं हेतु प्रोत्साहित करने हेतु दिनांक 19.02.2020, दिनांक 27.02.2020 के अतिरिक्त दिनांक 05.03.2020 को क्रीड़ा समिति की वृहद बैठक कॉलेज में आयोजित की गयी तथा विद्यार्थियों की खेलकूद में अभिरुचि उत्पन्न करने हेतु आवश्यक उपायों पर विस्तृत चर्चा की गयी। दिनांक 11 अक्टूबर, 2019 डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज देहरादून में आयोजित अन्तर्महाविद्यालय कुश्ती (पुरूष वर्ग) भार वर्ग 65 किलो फ्री स्टाईल में कॉलेज के एक छात्र **अमन बर्थवाल बी.कॉम. पंचम सेम ने प्रतिभाग कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया।** दिनांक 18 अक्टूबर, 2019 को बी.जी.आर. परिसर द्वारा अन्तर्महाविद्यालय पावर लिफ्टिंग (पुरूष वर्ग) का आयोजन कराया गया जिसमें कॉलेज के चार छात्रों ने प्रतिभाग किया जिनमें से दो छात्रों अनितेश धीमान बी.ए. पंचम सेम (भार वर्ग 56 किलोग्राम), नितिश वर्मा बी.ए. तृतीय सेम (भार वर्ग 66 किलोग्राम) ने क्रमशः रजत व कांस्य पदक प्राप्त किया। एस.आर.टी. टिहरी में आयोजित अन्तर्मविद्यालय खो–खो (पुरूष व महिला वर्ग) कॉलेज की टीम ने प्रतिभाग किया। दिनांक 24 अक्टूबर, 2020 को डॉल्फिन इंस्टीटयूट द्वारा आयोजित अन्तर्महाविद्यालय कबड्डी (पुरूष व महिला वर्ग) में कॉलेज की टीम ने प्रतिभाग किया। दिनांक 01–02 नवम्बर, को आई.आई.एम.टी. ऋषिकेश ने अन्तर्महाविद्यालय वालीबॉल (पुरूष वर्ग) का आयोजन किया गया जिसमें कॉलेज की टीम ने प्रतिभाग किया, जिसमें देवांश पंवार बी.कॉम. तृतीय सेम ने अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन कर विश्वविद्यालय की टीम में अपना स्थान पक्का किया। जिस टीम ने दिनांक 07–12 नवम्बर, 2019 को एमिटी विश्वविद्यालय, गुरूग्राम हरियाणा में आयोजित नॉर्थ जॉन वालीबॉल प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया।

दिनांक 04–05 नवम्बर, 2019 को डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज देहरादून द्वारा आयोजित अन्तर्महाविद्यालय हॉकी (महिला वर्ग) प्रतियोगिता में कॉलेज की टीम ने प्रतिभाग किया तथा दुर्गा कोरंगा बी.ए. तृतीय सेम, हिमानी तथा विमलेश बी.ए. प्रथम सेम ने अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन कर विश्वविद्यालय महिला हॉकी टीम में अपना स्थान पक्का किया तथा दिनांक 15–19 नवम्बर, 2019 को पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब में आयोजित नॉर्थ जॉन हॉकी प्रतियोगिता में भाग लिया।

दिनांक 06–07 नवम्बर, 2019 को एस.आर.टी. परिसर टिहरी में आयोजित अन्तर्महाविद्यालय बास्केट बॉल (पुरूष वर्ग) में कॉलेज की टीम ने प्रतिभाग किया, प्रतियोगिता में विकास बिष्ट बी.कॉम. प्रथम सेम ने अपने खेल कौशल द्वारा चयनकर्ताओं को प्रभावित कर विश्वविद्यालय बास्केट बॉल टीम में अपना स्थान बनाया, उस टीम ने दिनांक 13–19 दिसम्बर, 2019 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया दिल्ली में आयोजित नॉर्थ जॉन बास्केट बॉल प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। दिनांक 12–13 नवम्बर, 2019 को बी.जी.ओ. परिसर द्वारा आयोजित अन्तर्महाविद्यालय फुटबाल (पुरूष वर्ग) प्रतियोगिता में कॉलेज की टीम ने प्रतिभाग किया। दिनांक 17 नवम्बर, 2019 को डी.बी.एस. देहरादून में अन्तर्महाविद्यालय बॉक्सिंग (पुरूष वर्ग) प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें कॉलेज के एक छात्र ने प्रतिभाग किया। दिनांक 26 नवम्बर, 2019 को बिरला परिसर, श्रीनगर द्वारा आयोजित अन्तर्महाविद्यालय योगा प्रतियोगिता में कॉलेज के एक छात्र ने प्रतिभाग किया।

सत्र 2019–20 में दिनांक 02–03 दिसम्बर को आई.टी.एम. देहरादून द्वारा अर्न्तमहाविद्यालय एथलेक्टिस मीट का आयोजन किया गया जिसमें कॉलेज के 07 छात्र और 05 छात्राओं ने प्रतिभाग किया तथा सूरज सती बी.एससी. पंचम सेम ने गोला फेंक में द्वितीय, कमल गोस्वामी बी.कॉम. पंचम सेम ने त्रिकूद में तृतीय स्थान, शुभांगी कंधेला बी.ए. पचम सेम ने लम्बी कूद में तृतीय स्थान, निशा बी.कॉम. पंचम सेम ने त्रिकूद में तृतीय स्थान तथा सूरज सती बी.एससी. पंचम सेम, गौरव रावत बी.ए. तृतीय सेम, अश्वनी बिष्ट बी.ए. पंचम सेम तथा कमल गोस्वामी ने 4×100, 4×400 मी. रिले दौड़ में क्रमशः तृतीय, द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

फरवरी, 2020 में कॉलेज स्तर की कबड्डी, खो–खो, शतरंज, कैरम, टेबल–टेनिस (पुरूष एवं महिला) और वालीबॉल (पुरूष) इत्यादि विभिन्न प्रतियोगितायें आयोजित की गयी। सत्र 2019–20 की वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजन कोविड–19 महामारी के चलते घोषित लॉकडाउन के कारण नहीं कराया जा सका।

(डॉ. तेजवीर सिंह तोमर)	(विनय थपलियाल)	(डॉ. सुषमा नयाल)	(योगेश कुमार रवि)
अधीक्षक	सह–अधीक्षक	सह–अधीक्षक	प्रशिक्षक

चित्रों के झरोखे से

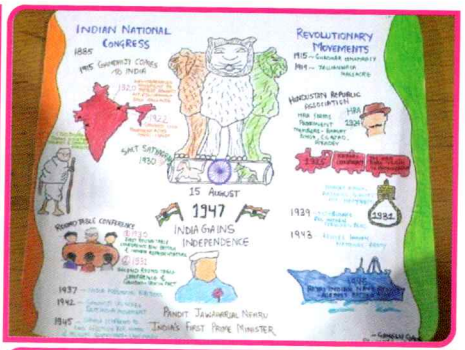
INDIAN NATIONAL CONGRESS
1885
REVOLUTIONARY MOVEMENTS
15 AUGUST
1947
INDIA GAINS INDEPENDENCE
PANDIT JAWAHARLAL NEHRU
INDIA'S FIRST PRIME MINISTER

परमवीर चक्र

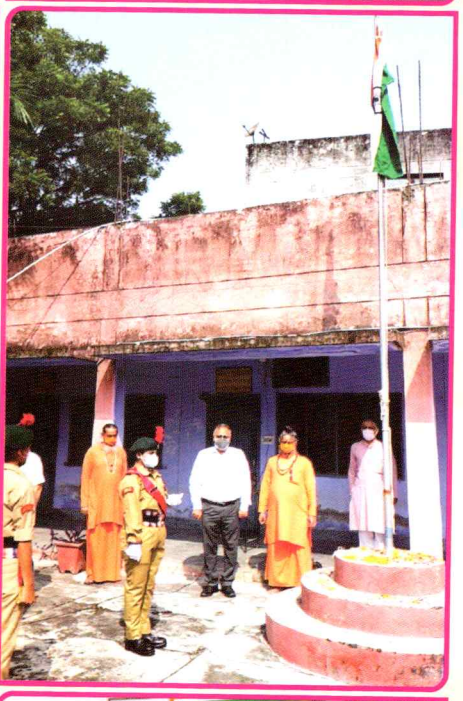

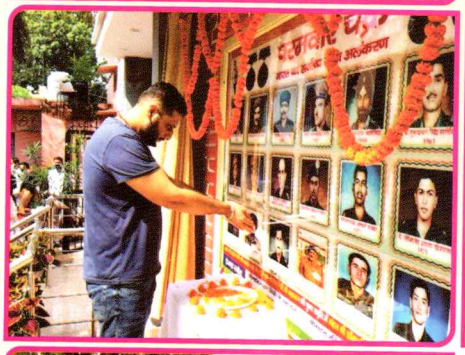

कॉलेज
आजादी का अमृत महोत्सव

चित्रों के झरोखे से

SHRI NARENDRA MODI'S
MANN KI BAAT
28th February | 11 AM
S.M.J.N. (PG) Collage Haridwar
पूजनीय संतों एवं व्यापारियों के साथ

पूजनीय संतों एवं व्यापारियों

हार्दिक स्वागत

राष्ट्रीय सेवा योजना

एस. एम. जे. एन. (पी. जी.) कॉलेज
हरिद्वार
आपका हार्दिक अभिनंदन करता है।

एस. एम. जे. एन. (पी. जी.) कॉलेज
हरिद्वार
आपका हार्दिक अभिनंदन करता है।

चित्रों के झरोखे से

एस.एम.जे.एन. पी.जी. कॉलेज,
हरिद्वार

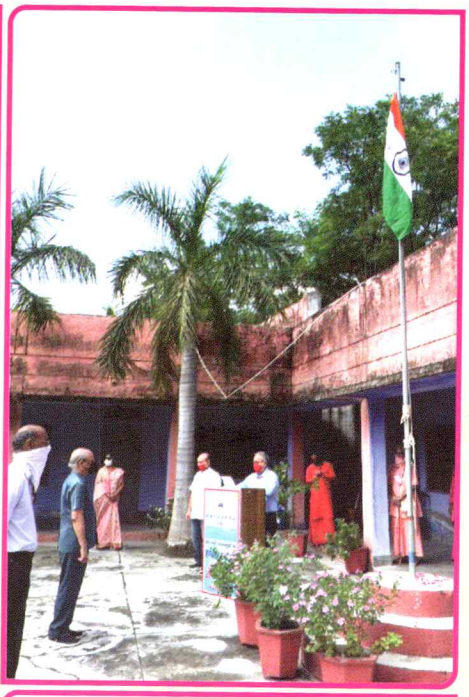

एस.एम.जे.एन. पी.जी. कॉलेज,
हरिद्वार
आप सभी आगन्तुको का
हार्दिक स्वागत
एवं

रमवीर चक्र

एस. एम. जे. एन. (पी. जी.) कॉलेज
आपका हार्दिक अभिनंदन
करता है।
हार्दिक स्वागत

चित्रों के झरोखे से

चित्रों के झरोखे से

एस.एम.ज.एन.(पी.जी.) कॉलेज, हरिद्वार (उत्तराख

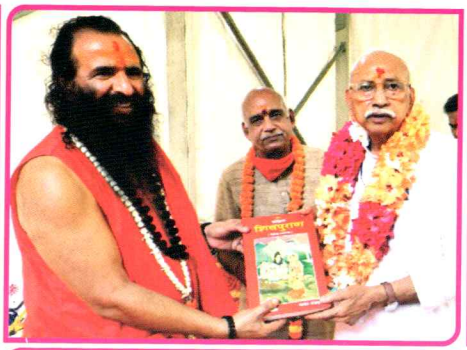

माननीय श्री
राष्ट्रीय अ

के नवनिर्मित भवन 'एच-ब्लॉ
'माननीय श्री ती

एस.एम.ज.एन.(पी.जी.) कॉलेज, हरिद्वार (उत्तराख

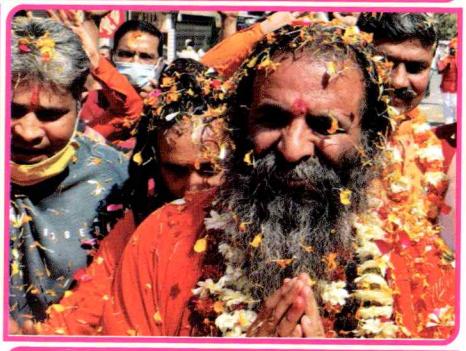

माननी
राष्ट्रीय अ

POLICE

परमवीर

चित्रों के झरोखे से

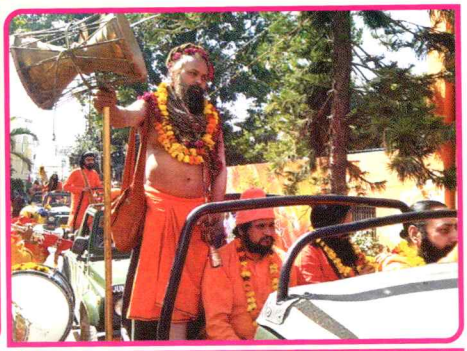

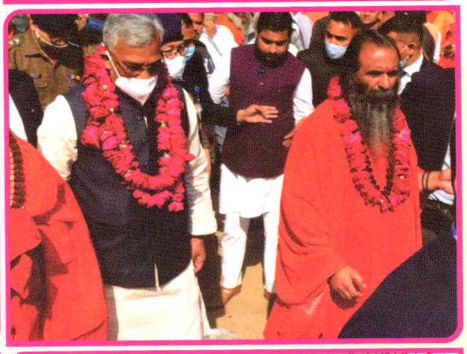

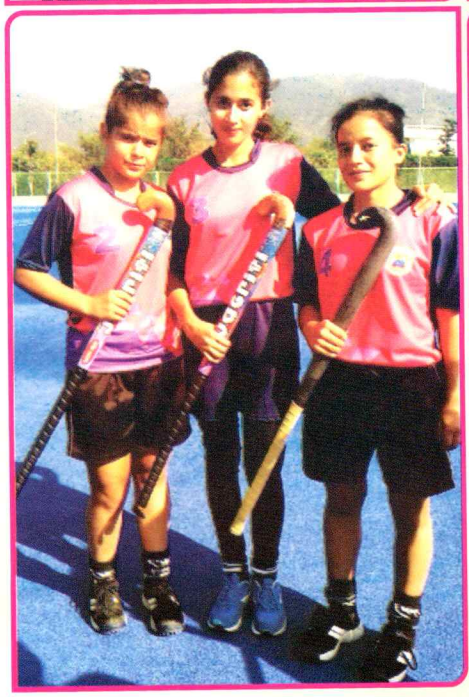

चित्रों के झरोखे से

UCO Bank

परमवार

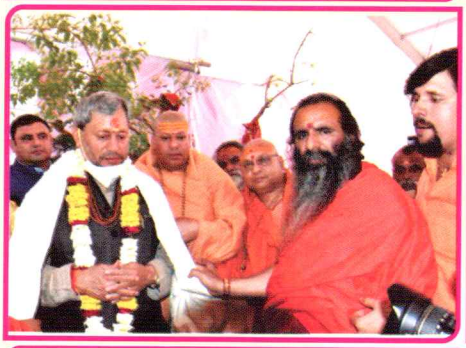

SCIENCE DAY
NDS IN SCIENCE
CHNOLOGY
HARIDWAR

देज
दन

NATIONAL SCIENCE DAY

देज
दन

चित्रों के झरोखे से

एस. एम. जे. एन. (पी. जी.) कॉ
हरिद्वार

एस. एम. जे. एन. (पी. जी.)
हरिद्वार

एस. एम. जे. एन

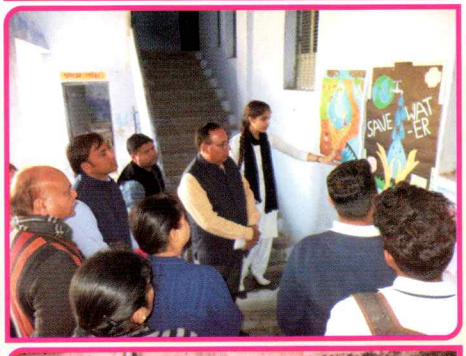
SAVE WAT ER

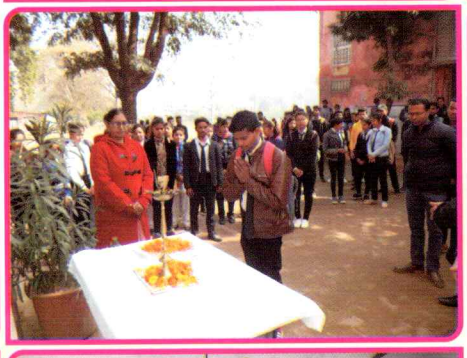

NATIONAL SCIENCE DAY
आपक

एस. एम. जे. एन. (पी. जी.) कॉलेज
हरिद्वार

एस. एम. जे. एन. (पी. जी.) कॉलेज
हरिद्वार

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
द्वारा आयोजित
हिमालय के इनवेसिव (आक्रमणकारी)
पौधो पर जागरूकता अभियान

ENGLISH SECTION

Lichens : The Bio-Indicators of Himalayan Ecosystem

Indian HImalayas is an abode of a variety of plants and animals. It is one of the mega-diversity hot-spots of Biodiversity in the World. Out of the diverse form of flora and fauna-the **Lichens** occupy an important position in nature. Lichens are a group of slow growing plants rather say organisms which are formed by the symbiotic (mutualistic) association of **Algae** and **Fungi** called the Phycobiont and the Mycobiont components respectively. The algae component helps in photosynthesis and manufacture of food while the fungal component absorbs atmospheric moisture and produces reproductive spores for the proliferation of the lichen both the components are complimentary. We can simply observe these lichens growing over big boulders, over the stems, branches and tree trunks and on soil amidst pebbles and rocks. A variety of lichens is easily observed from 1200m to 4500m altitudes on Himalayas.

On the basis of diverse kind of substratum they inhabit, the lichens are categorised as-Saxicolous (growing on rocks), Corticolous (growing on bark), Lignicolous (growing on wooden logs), Musicolous (growing over Mosses), epiphytic (growing over a variety of plants like Oak, *Rhododendron, Alnus,* Populus, Pines, Deodar, Albizia, Toona, Wallnut, Ficus, Amla, Prunus, Citrus, Orchids), Foliicolous (growing on fallen leaves), Terricolous (growing on soil), Crustose (growing adpressed to the rocks and can't be pulled out)

According to the biologists lichens contribute 8-10% of total world's flora. In India 2000-2500 lichen species are found which is about 10-12% of total world's lichen diversity. Western Himalayas harbor 1200 (appropx.) lichen species, Uttarakhand Himalayas inhabit more than 600 species followed by Himachal Pradesh and Jammu & Kashmir. The microlimate factors highly influence the distribution of the lichens as compared to other cryptogams (Algae, Bryophytes, Pteridophytes). The topography, altitude, temperature, Sunlight, humidity and varied habitats ranging from foothills (1200m) to temperate regions (4500m) through tropical and sub tropical zones in Uttarakhand HImalayas offer a great degree of colonisation of a variety of lichen flora.

Commonly the lichens are called 'moss'-like 'Reindeer moss', 'Needle moss', 'Iceland moss', due to the superficial resemblance with mosses. They can be seen hanging on trees or look like warts and pimples over rocks. They form yellow, grey, green. orange, pale patches over the substratum. Some species appear powdery-dust like on rocks e.g. gold dust lichen, sulphur dust lichen etc

Contribution of Lichens to our Himalayan Environment-

1. These are the bio-indicators, the presence of lichens shows that the area has good quality of air water and soil. It shows the percentage of moisture in air and substratum because lichens are desiccation tolerant plants or drought resistant plants and can thrive even in dry-exposed substratum.
2. These are the pollution. The presence of most of the moisture loving lichens indicates that the area is still not badly influenced by Human activities.
3. The rhizoids (root like organs) of lichens produce many organic acids like usinic acid, oxalic acid, lichenic acid which helps in weathering of rocks and formation of soil.
4. Lichens are very important in evolution of plants, they are a subunit or sere community during ecological succession.
5. The blue green algal component of lichen has ability to fix atmospheric nitrogen so they help in ecological balancing.

Causes of depletion of lichens-

1. Anthropogenic activities like urbansation, industrilisation, deforestation, tourism, road construction, trampling, cattle grazing, un

mindful cutting of trees for fuel wood, timber.

2. Mining is another cause of loss of flora in Himalayas.
3. Forest fire is a most drastic cause for extinction of many rare species of plants and animals including the lichens also.
4. Species-dependent-species destruction i.e. the vanishing of certain plants on which the lichens are dependent for shelter like Oaks, Alnus, Buransh trees, e.g. Graphina, Graphis (script lichen), Usnea (bread lichen), Parmotrema (ruffle lichen), Lobaria (lung lichen), Chrysothrix (gold dust lichen) are some species which are removed away along with cutting of trees.
5. Species-specfic-habitat loss i.e. the destruction of habitats due to natural calamities (cloud burst, floods, erosion, landslide etc) or by human activities.
6. Overexploitation of certain lichens due to commercial or ethnobotanical purpose, e.g., Everniastrum species, Ramalina (cartilage or strap lichen), Parmelinella (lead lichen), Usnea etc. are used as spices by the tribes of Uttarakhand Himalayas. Similarly a lichen species Diploeschesters candidissimus (crater lichen) used as a medicine for skin ailments. Studies shows that 700-1000 metric tons of lichens is collected from HImalayas by the local traders for many purposes like medicine, species, perfumeries, dhoop-agarbatties (incenses), dyes etc.
7. Climate change, pollution, excessive use of plastics, polyethens and global warming is another cause of lichen destruction as they are the bio indicators hence their absence depicts the increased amount of pollutants in air water and soil.

Conservation of lichens-Habitat protection is the ultimate method of lichen protection against their extinction. The anthropogenic activities and modern construction at lichen rich sites should be avoided so that the lichens may not vanish from our floral heritage. Some species which are under threat-Cladonia (cup lichen), Lepraria (dust lichen), Leprogonia, Peltigera (felt lichen), Heterodermia, Lecanora (rim lichen), Anthracothecium, Everniastrum Bulbothric etc.

-Dr. Pragya Joshi
Department of Botany

The Easier Way May Actually Be the Tougher Way

Once there was a lark singing in the forest. A former came by with a lark full of worms. The lark stopped him and asked, "What do you have in the box and where are you going?" The farmer replied that he had workes and that he was going to the market to trade them for some feathers. The lark said, "I have many features. I wil plank one and give it to you and that will save me looking for worms." The former gave the worms to the lark and the lark plucked a feather and gave it in return. The next day the same thikg happened and the day after and on and on until a day came that the lark had no more feather. Now it couldn't fly and hunt for worms. It started looking ugly and stopped singing and very soon it died.

The moral of the story is quite dear what the lark thought was an easy way to get food turned out to be the tougher way after all.

Isn't the same thing true in our livers? Many times we look for the easier way, which really ends up being the tougher way.

-Prakhar Dixit

Dr. Naresh Kumar Garg

Professor Dr. Naresh Kumar Garg doesn't need a grand introduction to glorify him. His deeds speak for themselves. He has always been a man of principles. so much as to renounce his Principal seat in favour of guiding talented students in their careers. His ideals have always inspired not only his students but his colleagues too. He magnificently showcased how a person can lead a morally inclined and disciplined life, be it professional or personal. The way he never took his medical leaves and gifted all of it to the government stands as a proof enough. He devoted 45 summers and 45 winters, all to make his students strive for excellence by his teachings and time management tactics. Need an advice? Dr. Garg is the person you'd seek out. He really was a treasure SMJN College had been fortunate to come across.

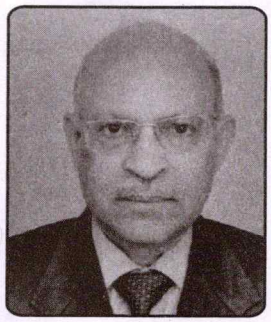

Dr. Naresh Kumar Garg was born on 31 Jan. 1956 in Meerut district of Uttar Pradesh and his elementary education took place in a government school in Shamli. After completing MA from DN College, Meerut, he received MPhil and PhD Degrees from University of Meerut and got selected for SMJN PG College through UGC. He joined office on 25 Oct. 1975 as an Economics Lecturer and since then has worked with a student centered approach which attracted a lot of pupils, even after he became the Head of Economics Department. Even the ones who were lagging behind were brought back on track through many innovative experiments, and even made a departmental library fully financed by himself for UG as well PG courses which further solidifies how much he loved and cared for his students, no matter how apt or talented.

Generation gap is a given when it comes to a student teacher relationship but Professor never made it become a handicap. he was always open to learn form the new high-tech generation of computers and internet. In fact he was the one who brought computerized documentation of files into the college system which earlier used to run on physical paper copies. A man should never stop learning, no matter what age and Dr. Garg very storngly applied this theory. Just like said above, he was a man of many principles, Shrimad Bhagavad Gita being his main source of direction.

In this modern world where greed influences people to snatch higher positions by indulging in dark politics, greed could never sway Dr. Garg. His intentions were clear from the start and never swayed even when he was offered the Principal seat.

He gae up his seat, keeping the interest of his students and the college as paramount,

Dr. Garg retired on 30th Jan. 2021, completing 45 years 3 months and 4 days of service. But his presence will always be felt as his thoughts, his ideals and principles linger on in college hallways and classrooms, and continue to inspire future students.

-Dr. Amita Srivastava
Economics Department
SMJN PG College, Haridwar

Discipline

A=1	B=2	C=3	D=4
E=5	F=6	G=7	H=8
I=9	J=10	K=11	L=12
M=13	N=14	O=15	P=16
Q=17	R=18	S=18	T=20
U=21	V=22	W=23	X=24
	Y=25	Z=26	

so,

D+ I+ S +C + I + P + L + I + N+ E

4 + 9+19+ 3 +9 +16+12+ 9 +14+5=100%

"Discipline and study is a key to Success"

-Pooja Rajpoot
M.Com IIIrd Semester

India is a developed Country

The United States Trade Representative (USTR's) office has classified India as a developed economy, ineligible for benefits given by washington DC to developing countries. This is expected to stop all chances of India reclaiming its benefits under the US' Generalised System of Preferences (GSP) scheme.

The GSP is America's oldest preferential trade scheme, which offered Indian exporters trariff-free access to the US untill June, when all benefits were suspended. The USTR considers a country's per capita gross National income (GNT) and share of world trade to designate its level of economic development.

On the criteria of a developing country having less than 0.5% share of global trade, India crossed the limit way back, according to the government's estimate. As of 2017, India's share in global trade was 2.1% for exports and 2.6% for imports. The USTR has also argyed that since India, along with nations like Argentina, Brazil, Indonesia and South africa is a part of the G20 bloc, they can be classified as being developed despite having a per capita GNT below $ 12,375 according to the World Bank data.

-Mansi Arora
B.com IIIrd Semester

Life of soldier

Wardi meri khaki h
Gun meri pal pal ki sathi h..
Ye mitti meri shan h
Isme barti meri jaan h.
Hum jaan hatheli pr rkhti h
logo k dil m baste h.
Desh ki sewa me beet jati jwani h
goli ki milti nishani h.
Khudki jaan bhi desh pr waar du
Mujhse ban ade to iska thoda
bhi karz utar du...
Ae eesh yahi mera h
karm yahi mera h dhram
Jai Hind vande maatram.

-Prachi Thakur
B.Com IIIrd Semester

Save Girl Child

I am a flower, not a thorn
Don't kill me before I am born
What harm did I do to you?
I have the right to live too.
I can be a sister, daughter and may be a wonder,
But never a blunder.
Why do you like to have a son?
Not a daughter?
Whereas I can fill your life
With joy and laughter.
I ma an angel of the unforgotten grace
As you depend on caste and race
Come on save girl child
Only because she is mild
Who causes you no harm
And always keeps your heart warm.

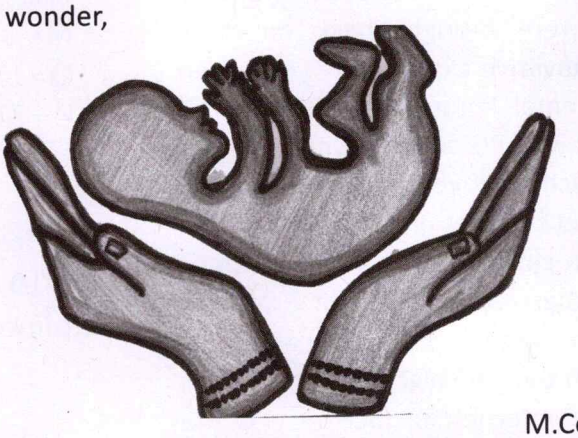

-Pooja Rajpoot
M.Com IIIrd Semester

History of Kumbh Mela

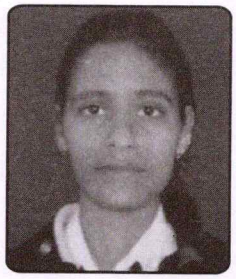

Kumbh Mela has its own religious importance which is held every 12 years. No doubt it is the largest gathering of faith in which from the whole of the world people participate and take bathe in the holy river. But have you ever thought that what is the meaning of "Kumbh", why it is celebrated, who started kumbh mela what is the story of kumbh mela etc.

According to Hindu mythology, "Kumbh Mela" is an important and religious festival which is celebrated four time over the course of 12 yrs. The location of festivals keep rotating among four pilgrimage sites situated on the banks of holy river. These places are Haridwar on the ganges in the Uttarakhand, Ujjain on the Shipra river in Madhya Pradesh, Nashik on the Godavari river in Maharashtra and Prayagraj at the confluence of three rivers Ganga, Yamuna and Saraswati in the Uttar Pradesh. It is correctly said that Kumbh Mela is the world's largest religious and cultural human gathering. Crores of pilgrims over a course of 48 days take bath in the holy rivers. Devotes mainly Sadhus, Sadhvis, ascelics, pilgrims etc. from across the world take part in this Mela.

History of Kumbh Mela-KUmbh Mela is made up of two words Kumbh and Mela. The name Kumbh is derived from the immortal pot of nectar which the devtas and the demons fought over as described in ancient vedic scriptures knows are Puranas. Mela, as we all are families, is a Sanskrit word meaning 'gathering or to meet'.

The history of Kumbh Mela is related to the days when the devtas and the demons co-jointly produced nectar of immortally as depicted by the legends. The devtas and the demons then ageed to complete the task together and decided to share the nectar of immorality in half. The devtas and the memons then assembled on the share of the milk ocean that lies is the celestial region of the cosmos. The churning of the milk ocean produced a deadlly poison which lord shiva drank without being affected.

After crossing through many hurdles years later, dhanwantari appeared with the nectar of immortaling in her hands. The devtas forcibly ceased the pot with its safety entrusted into the four gods-Brahaspati, Surya, Shani and Chadra. Thereafter, the demons chared the devtas for many days. During this time the drops of kumbh dropped at 4 places Prayagraj, Haridwar, Ujjain and Nashik.

These four places are since then believed to have acquired mystical powers. The fight for the kumbh i.e. the sacred pitcher between the Gods and demons continued for 12 divine days, which is considered to be as long as 12 yrs. of human.

Type of Kumbh Melas-1. Maha Kumbh Mela, 2. Purna Kumbh Mela, 3. Ardh Kumbh Mela, 4. Kumbh Mela, 5. Magh Kumbh Mela.

-Juli Tiwari
B.Com V Semester

Life V/s Exam

God is a Great Examiner
We all are student,
This life is an answer book,
On which we have to take Examination,
This world is a hall,
Where we are sitting,
The time allowed is only three hours
The first hour bell rings in childhood,
Second in youth and third in old age
The bell of last hour
Is rung by the mesenger of God
The Examination is our,
The copy is snatched.
Life thus mets with its End.
Don't try to cheat dear Examinee,
The Examination is Everywhere.

-Kashish Dhiman
B.Com IIIrd Semester

Tu Chal?

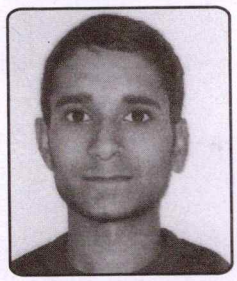

Tu khud ki khoj main nikal
Tu kis liye hataash hai.
To chal tere vadood ki
Smay ko bhi talaash hai
Smay ki bhi talaash hai.
Jo tujh se lipti bediyaan
Samajh na inko vastra tu
Samajh na inko vastra tu
Ye beriyaan pighaal ke
bana le inko shasta tu
Bana le inko shastra tu.
Tu khud ki khoj mein nikal
Tu kis liye hataash tu.
Tu chal tere vajood ki
Smay ko bhi talaash hai.
Charitra jab pavitra hai
Tho kyun hai ye dasha teri
Tho kyun hai ye dasha teri.
Ye paapiyon ki haq hahi
Ke lein pareeksha teri
Ke lein pareeksha teri.
Tu khud ki khoj mein nikal
Tu kis liye hataash hai.
Tu chal tere vajood ki
Smay ko bhi talaash hai.
Jalaa ke bhasm kar use
Jo kroorta ka jaal hai
Jo kroorta ka jaal hai.
Tu aarti ki lau nahi
Tu krodh ki mashaal hai.
Tu khud ki khoj mein nikal
Tu kis liye hataash hai.
Tu chal tere wajood ki
Smay ko bhi talaash hai
Smay ko bhi talaash hai.
Chunar uda ke dhwaj bana
Gagan bhi kap kap aayega
Gagan bhi kap kap aayega.
Agar Teri chunar giri
Tho ek bhukamp aayega
Tho ek bhukamp aayega.
Tu khud ki khoj main nikal
Tu kis liye hataash hai.
Tu chall tere vajood ki
Samay ko bhi talaash hai
Samay ko bhi talaash hai.

-Prajjwal Sharma
B.Com 5th Semester

Mother Nature : In Danger

Mother nature is flooded, loaded with lost of heart touching beauty. She is the only, who nurtures like mother, ranging from trees to rivers to life to everything on this blue planet. Heartiest thanks to her for this. But wait! Will last long as per current scenario. Answer is No. I know like me, you are also a nature lover, right then surely you must be aware of climate change. Issue of climate change is screaming around every corner of world and its effects are visible like raising earth temp., coral bleaching, ocean acidification, ablation and many more--- we all know reasons for this. Countries have come forth and have taken step for this paris climate agreement, Is this enough? No! Just by reducing emissions we can't to nothing. There are so many other things that we can do like afforestation, adopting 3R's strategy etc. Its HIghtime that we should definitely take some measure to save over mother nature. It is time when implore of agreements our actions should spoke for concerving this invaluable beauty.

-Ganesh Gaur
B.Sc. IIIrd Semester

Don't Quit

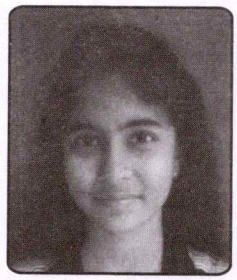

When things go wrong, as they sometimes will,
When the road you're trudging seems all uphill,
When the funds are low and the debts are high,
And you want to smile, but you have to sigh,
When care is pressing you down a bit,
Rest, if you must, but don't you quit.

Life is queen with its twists and turns,
As every one of us sometimes learns,
And many a failure turns about,
When he might have won had he stuck it out,
Don't give up though the pace seems slow-
You may succeed with another blow.

Often the goal is nearer than,
It seems to a faint and faltering man,
Often the struggler has given up,
When he might have captured the victor's cup,
And he learned too late when the night slipped down,
How close he was to the golden crown.

Success is failure turned inside out-
The silver tint of the clouds of doubt,
And you never can tell how close you are,
It may be near when it seems so far,
So stick to the fight when you're hardest hit-
It's when things seem worst that you must not quit.

-Ritpriya Chauhan
B.Com IIIrd Semester

Why Not Girl ?

People Pray for a Boy
Not for a Girl
They desire Boy
Not for a Girl
Blessings of elders are for male
Nor for a female
They Love th have Boy
Not a girl
BUT.....
In Need of worth

They Pray the goddess Lakshmi
In Need for Courage
They go to goddess Durga
In Need of Education
They call upon
goddess Saraswati
Why do they Hesitate
To have devi in their family.

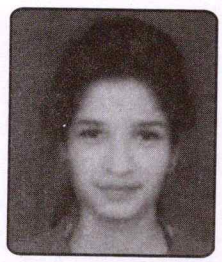

-Kashish Dhiman
B.Com IIIrd Semester

Cyber Crime

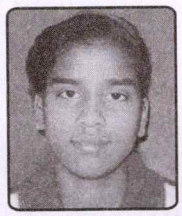

Cyber Crime or Computer Oriented Crime-Is a crime that involves a computer and a network. The Computer may have been used in the Commission of a Crime or it may be the target. Cyber crime can be defined as : offences that are committed against individual with a Criminal Motive to internationally harm. The reputation of the victim of course physical or mantel harm. Or loss to the victim directly or indirectly, using modern telecommunication network such as internet (Network including chat rooms, e-mail Notice board and groups) and Mobile phones (Bluetooth/SMS/MMS) Cyber crime may threaten a person or a nation's security and financial health, issues Surrounding these type of Crimes have become high-profile, particularly those surrounding Hocking Copyright infringement, unwarranted mass surveillance, Extortion, Child pornography and child grooming. There also problems of privacy when confidential information is intercepted or disclosed lawfully or otherwise.

Against women with a motive to internationally harm the victim psychologically and physically, using modern telecommunication Networks such as internet and mobile phones internationally both governmental and non-state actors engage in Cyber crime including espionage, financial theft and other Cross-border crimes.

-Isha Keshri
B.Com Ist Semester

Greatness of Mother

Once a knowledge seeker asked Swami Vivekanand, "Why is mother considered to be great?" Swamiji smiled and asked the person to get a stone of five kilogram. When the person bought the stone, Swamiji said, "Bundle it in a cloth and tie it sround your stomach and come to me after 24 hours."

The man did as he was told. After only a few hours be came back. He was unable to work like this. In tired voice he said, "I cannot carry this anymore. Why have you punished me so gravely for asking a question?"

To this, Swamiji replied, "your could not bear the weight of this stone for even a few hours but a mother carries a wight of a small child for nine months. With this weight she does all the work and is never disturbed. Who can have more patience than a mother? Hence a mother is greatest.

-Kartik Sharma
M.Com I Semester

Poem on Teachers

T Thank you for all the
H Hours you spend
A Attention you give
N Needs that you pass
K knowledge that you pass on.

Y Your special touch
O Offering guidance
U Undaunted by much.

T Time your spend Planning
E Efforts you make
A Angles to learning
C Chances you take
H Here's to our teachers
E Each one of you is gem
R Recognised now
S Salute them.

-Pooja Rajpoot
M.Com IIIrd Semester

College Life

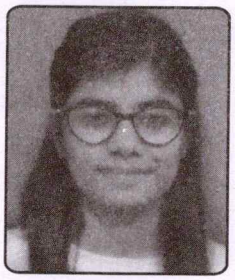

Stepping into a new life where
One faces oneself
Some consider everything a race
And chase after them all.
While others find it difficult
to even tie their shoe race.
Many here care for you,
But you care for a select few
Lots of leisure, lots of pressure
In the midst of which, some search for treasure
The greatest invention being the headset
The greatest invention bring the headset
Without which no one's heads are bit
More sleep, less work, but still
Feeling tired every other minute.
More dance, more wishes,
Momy an exam and test.
Suddenly, when you look back
The poster says 'The End'.
The 35040 hours of these four years
Are just like the three hours of a movie.
Passing by in the snap of your fingers
Leaving behind many a memories that lingers.

-Yukta Arora
B. Com IIIrd semester

Value Yourself

A speaker started off his seminar by showing a ₹2000 to the public. He asked the people "who wants this?" There was no surprise to see that all of them lifted hands. He offered to give the money to one of them but insisted that he will do something to it.

He crumpled the paper money and showed it again to the crowd and repeated the question. Still, everyone raised hands. He then put the money into the ground & stepped on it and them raised it again and offered it to the public.

The people gathered there still showed interest to take that money despite seeing how dirty the note was. He told the public, No matter what I did to this money, you all still wanted this.

You all went in favor of my offer just because the value of the money never decreased despite what all I did it. Similarly, "value yourself despite the painful conditions or failure". Believe in yourself and work hard to achieve success. Values yourself irrespective to the failure or obstacles and don't degrade yourself just because of the temporary setbacks.

-Antim Tyagi
Department of Economics

Mother

I know a face, a lovely face
As full of beauty as of grace
A face of pleasure, ever bright
In utter darkness it gives us light
a face that is itself like joy
But I have a joy that have for others
This lovely woman is my mother.

-Kiran, B.A. Ist Sem.

Remember Woman

Remember, woman, you were born life given, miracle creator, magic maker.

You were born with the heart of a thousand mothers, open and fearless and sweet.

You were born with the fire of Queen Conquerors, warriorers blood you bleed. You were born with the wisdom of sages shamans, no wound can you not heal.

You were born the teller of your own tale, before none should you kneel. You were born with an immeasurable soul, reaching out past infinity. You were born to desire with passion, abandon, and to name your own destiny. Remember, woman, Remember You are more than you can see. Remember, woman, remember You are loved endlessly.

Remember, woman, your power and grace, the depth of your deep sea heart. Never forget you are woman, divine as you have been from the start.

-Aarti Rawat

B. Com I Semester

War

The trumpets are in Position,
Everything done in tradition.
Armies marching on the field,
Their sole aim is to never yield.
On the plain, a great force marched,
wearing uniforms, hardly starched.
All of them with bayonets and guns,
Women's husband and their sons.
In airplanes with missiles big,
All sorts of explosives rigged.
Flying fearlessly on enemy land,
Turning building into sand.
On water with machines grey,
Covering miles, and enemies slay.
Smoke billouring out from a chute,
Sometimes of a men left only a Boot.
The armies met with a mighty clash,
Their desire to do nothing but slash.
Cries ring out, bodies scattered,
Men dead with helmets battered.
The country loud with heavy firing,
Each other's gun all men hiring.
Bombs dropped, buildings shook,
All men dropping with helps of hook.
Day and night, the battle raged,
With all humanity inside; caged.
Men died, their spouses wept,
A feeling of horror slowly crept.
For many years this terror regined,
And corpses lines the field singed.
At last they decided to back down,
A peace treaty was signed in town.
So, after all the war finally ended,
The period over the everyone dreaded.
Let us sing beside our hearth,
May peace prevail on the Earth.

-Kirti Sharma

B. Com IIIrd Semester

Are the Old A Burden on the Society

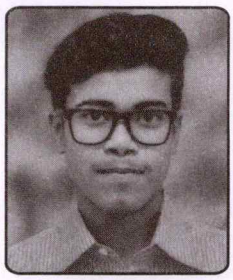

"Matri Devo Bhava
Pitri Devo Bhava
Acharya Devo Bhava"
(Worship mother as God,
worship father as God,
worship teacher as God)

Dr. Radha Krishnan's belief in these words show the great philospher's bent of mind.

In today's materialistic world there is a general feeling that the old people are a burden on society. And this is very sad. In the race for money and comforts, the youth today is neglecting the old.

Instances where old people are ill-treated and in some cases even thrown out of the houses are on the rice. Youngsters nowadays have little tolerance, so they shout at their old parents. In some cases they are tortured both mentally and physically. What moral degradation!

Though it is true that the ways of thinking and living of the younger generation is different from that of the old, it still does not mean that the youngsters should ill-treat or disown their own parents. The first and the foremost duty of the youth is to look after their parents and elders. When the elders are neglected they feel isolated and lonely.

The new generation takes their parents for granted making them suffer immensely. They are made to slog even in their old age. In the process, their need for rest, relaxation, growing out for holidays, etc are overlooked.

Often, the elders take all the sufferings and humiliation in their stupidity. A father tries to educated his son well when the son performs well and the father becomes old, the son chooses to neglect his father. Sons, have at times been known to treat their old mother like servants specially after they get married. They expect their mothers to wait for them, do all their works and put up with their redeness too.

They don't realize that she is human being just like them and as a woman she deserves their respect and concerns. Sons, when they grow up, find it hard to obey their mother. They become greedy and consider the old as a burden on society.

Old parents must be given due respect and their dignity must be maintained at all cost.

-Kartik Sharma
M. Com I Semester

Dowry System

- Dowry is the Indian practice of giving valuable presents in the form of Materialistic items to the girl at the time of her marriage.
- The practice of the dowry system has inflicted mental and physical torture, harassment, insults, & has even resulted in deaths of young women & their family.
- The practice of the system has led to "Marriage Loans" that are often strggled to repay.

-Khushi
B.Com.

Utilization of Temple Flower waste

Worship is an integral part of human life and floral offerings are an integral part of worship. Every day many devotees offer flowers in the temples which are left unused and therefore become waste. There is no segregation of this waste at the source of generation. It is well known that many of us avoid throwing the flowers and other item which are used in prayers in the garbage because of our religious beliefs and instead put them in the plastic bags and throw them directly into the water bodies. A portion of waste is thrown near sacred trees with no suitable mode of disposal. Such disposal of waste creates problems like worm development, water pollution, foul odour, land pollution.

Actually we are not throwing wastes, but losing one of our easily and freely available resources. However, these waste flowers have an enormous, and largely unexploited, potential of being turned into wealth using existing, simple and inexpensive technologies such as by preparing boi-fertilizer with the help microbial consortium for degradation of flower waste. Microbial consortium helped in reducing the time required for degrading large of flower waste. With this approach we can prepare good quality bio manure without causing any harm to the environment & other method for preparing biofertilizer is vermi-composting.

Bio ethanol is another product obtained from flower waste. The world has been confronted with an energy crisis due to depletion of finite resources of fossil fuel, difficulties in their extraction and processing, leading to an increase of its cost. Also fossil fuels contribute an important role in accumulation of greenhouse gases whu\ich can ultimately pollute the environment. As alternative production of ethanol by fermentation from renewable carbohydrate materials for use as an alternative liquid fuel has been attracting worldwide interest interests. Flower wastes have many distinct advantage over traditional crops, such as its high fermentable sugars, zero investment and available everywhere on earth.

-Pankaj Yadav
Dept. of Sociology

I am Sweet and Cute

I am sweet and cute
I wonder about mars.
I touch rainbows,
I worry about getting old.
I want to be a wizard.
I am sweet and cute.
I pretend do have magic.
I feel the air around me.
I hear bells.
I see dancing unicorns.
I cry during sad movies.
I am sweet and cute.
I understand the vastness of the universe.
I dream of becoming a millionaire.
I say things that I shouldn't.
I hope to be a good person.
I am sweet and cute.

-Shruti Dubey
B. Com 3rd Semester

Cashless Payments

A cashless economy means the liquidity in the system is exchanged between two parties through either plastic currency (ATM debit and credit cards) or through digital currency/online payments. With the advent of block chain technology, bit coins have given a whole new meaning for a cashless economy.

The traditional form of monetary transactions with hard physical cash exchanged between people will almost become almost redundant. And this theory has been given an enormous amount of push by the Covid-19 pandemic, given the health concerns in exchanging physical cash. There are plenty of benefits to going cashless.

The dream of digital India's first step is a cashless India. With this dream, on the evening of 8th November 2016 at sharp 8 pm, the prime minister of India, Narendra Damodardas Modi announced the demonetisation of Rs. 500 and 1000 notes in the country. This historic decision was based on various reasons, one of which was a dream of cashless India.

Advantage of Going Cashless

There are various advantages to going cashless. Black money that you have earned but not accounted for which means this is that money which is hidden from paying taxes.

And this blackmoney is illegal and has the potential of reducing a government to bankruptcy. But the cashless economy will keep a check on black money because, unlike hiding physical cash, you can't hide digital money, at least not yet. If the technology behind the digital economy is robust and well updated, then govt. can track all transactions in the economy which helps in maintaining transparency and authenticity of income. With so much technological revolutions happening around, it will be impossible to find someone without a smartphone in ths 21st century.

The ease of transaction fintech platforms such as paytm, google pay or phonepe are easier than ever before. The cassles of carrying hard cash is eliminated.

Disadvantages of going cashless

As technology is improving every day, so is online fraud and cheating incidents. Unless and until governments have robust and hackproof digital systems, it would be impossible for them to make the economy, especially a country like India with large population, completely cashless. Incidents of online thefts reported one news channels have made people think twice before making large transactions online. Before aiming for the dream of cashless India to come true, governments should take care of these problems.

-Shikha
B. Com I Semester

Inner Beauty and Outer Beauty are Complimentary

I know very well that I am not at all an attractive person when it comes to physical beauty. Most of my friends are quite good looking and during my school days, I often heard them boast of their good looks. Some of them even made fun of me for being high in stature and chubby body.

Time passed and today after few months, I am proud to say that I am better placed then almost all of those friends of mine. They must have realized their mistake by now.

You will also agree that judging a person's character on the basis of his appearance is not at all right. Right goes the saying that appearances are often deceptive. A person must be evaluated on the basis of what he speaks and what hr does. Someone who devotes all his time and energy in the service of humanity is gifted with a beautiful heart and it goes without saying that a beautiful heart houses beautiful soul and virtuous spirit.

The inner beauty expresses itself through one's humble behaviour, modest actions and noble thoughts. A man possessing sublime thoughts, virtuous character and elevated ideas deserves to be called beautiful from both within and without.

Is the beauty of the body complete in itself?

A tricky and debatable question is **'Who deserve to be called beautiful?'** thinkers and scholars since times immemorial have tried their level best to answer this question but even today this question is one of the most discussed and debated one. A slim and good looking model participating in a beauty contest is called beautiful by people only because she flaunts her body and shows her mental alertness. Does she really deserve to be called beautiful?

Without any second thought, we can affirm that beauty of the body is incomplete without the beauty of the mind and heart.

Are catchy words enough to make a person beautiful

Let us take up an example of another influential person who occupies a respectful place in society due to his rank and status. when

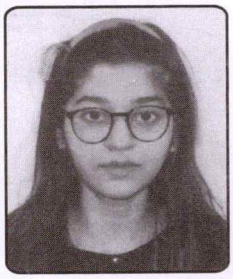

he addressed a gathering of thousands of people on the occasion of an important ceremony, people praise him for his impressive speech and art of speaking. He receives a standing ovation because he has kept everyone spellbound by his captivating words. Long after he has gone, his effect is alive in the mind and heart of people. Can he be called beautiful?

The answer is simple and clear. You can be a great speaker but I you are not kind-hearted, you don't deserve to be called beautiful from within and without.

Do beautiful heart and pure soul make one look?

Let us take an another example of an ordinary women who remains busy in households task all the day long in her day-to-day life. She looks after her children, takes care of their needs and does everything to keep her family happy. When a begger knocks at her door and ask for food, even he does not go empty-handed. Does this lady deserve to be called beautiful?

Yes, without thinking twice, we can say with confidence that a simple lad doing her day-to-day task with devotion has every right to be called beautiful, whereas all other who get the appreciation of people either for being physically attractive or for being great speakers stand nowhere when compared with this honest, sincere and hardworking lady. She is the one who is blessed with a beautiful soul and a benign spirit.

Be blessed with a beautiful heart to look beautiful from outside.

By now, you must have become thoroughly acquainted with the importance of inner beauty which makes a person beautiful body inside and outside.

-Prachi Rajput
B.Com, Ist Semester

Nature and Human Life

Nature is full of beauty. Only we should have eyes to perceive, as it is wisely said that beauty lies in the eyes of the beholder. We are surrounded by beauties of nature. If we look at the sky at night, we can see the sight of countless stone stars and the silver moon. If the sky is cloudy, we can copy the beauty of clouds which look like woolen fabric in the meaning, we can see the fascinating dewdrops ranging on the blades of grass.

When we speak of nature, we have distinct but must poetical sense in the mind. The lovers of nature is he whose inward and outward sense one still truly adjusted to each other. Nature is a setting that fits equally in well a sonic or a morning piece. Nature never became a toy to a wise spirit. The flowers, the animal, the mountain neglected the wisdom.

Nature is the wisdom around us, except for human made phenomena. As human are the only animal species that powerfully give effect on the environment. Although human being are the creations of nature. They got everything needed for their survival from nature. The air they breathe, the water they drink, the food they eat and thousands of acts they perform daily-all some from nature. Our earth is an unique planet. It is the only planet known to have conditions suitable for life. It is one of the eight planets in solar system in the "Milky way Galaxy". The no other planet such sight of life exist. Nature has created this unique planet for the survival of human being. The conditions are the suitable for life. But the regular increase in human population is causing shortage of Land. The human have not been able to centre their number. Increase in population push up demand for food grain and other to use. The result is that forest get clear. This deforestation also leading to soil erosion. Nature has provided in the vast mineral and other resources, but & we are using there resources with such a speed that the day is not for when many of them will be totaly enhausted. Nature has provided in us with "Great River" which give us, pure and fresh water to drink and for ploughing our field. But we are treating our resources very badly. Today, Men's attitude towards river or other resources are indifference. Man does not know that by keeping a hostile attitude towards nature, he is digging his own grave.

Nature is so powerful that if has its ways of taking right action. Nature have been thus for friendly with us despite our indifference. Human life existence on the earth will change if we do not changed our attitude towards nature.

-Mahima Rana
(Economics Department)

Face your fear with Courage

The greatest achievement of a human is to face his or her fear. If you can face your fear with courage, you can do anything in the world there is a very interesting story about this topic.

Once upon a time, there was a man. His home Narendra. One day he was coming back from his shop and he saw a troop of monkeys on one side of the forest. He was very afraid because in his young age his father had told him never to go near a monkey otherwise it would harm you. He started running and monkeys started chasing him. When he was about to faint, he saw a saint who was sitting under a tree. The saint said to him, "Stop". He stopped. The saint advised him to face the monkeys and look into their eyes. The monkeys flew away. Narendra was amazed by this event. He asked the saint how it could be possible. The saint replied that if we face our fear with courage, we can do anything in this universe.

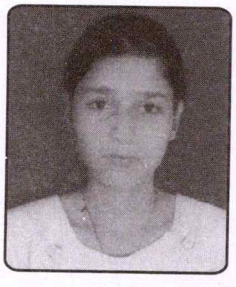

-Shivani Kashyap
B.Com. I Sem.

Time management

Time is priceless asset your ability to manage your time, as much as other practice in your life/career as an executive, will determine your sucess or failure. Time can't be saved nor can it be recovered once it lost. It is rightly said, "Time once lost is lost forever". We can not reclaimed and reused ever.

Time management is a method to work smarter rather than harder to get more out of your work as well as your time. We know is very well we all have equal time 24 hours in a day, it is up to one should make a promise to have effective time management strategies, if you feel anxious about incomplete tasks, no matter how much work you have to do, effective time management can lead you towards your destination. Time management is essential for maximum health and personal effectiveness. The degree to which you feel in control of your time and your life is a major determinant of your level of inner peace, harmony, and mental well being a feeling of being 'out of control' of your time is the major source of stress, anxiety and depression. The better you can organize and control the critical events of your life. The better you will feel moment to moment. The more energy you will have, the better you will sleep, and the more will get done. Good time management requires that you bring your control over a sequence of events into harmony with what is most important to you. You can become more efficient with time management techniques having made a schedule and prioritizing everything as per the need, the next important thing is to stick to that schedule at any cost. Persistence and discipline is the key to achieve succes through time management. Everyone has the same time in a day 24 hours, yet some succeed while some don't. Set your priorities. The better you use your time, the more you will accomplish, and the greater will be your rewards. It helps you achieve what you want & help you get more in less time you will need to stop wasting your time and start using them wisely.

"Time and waves of sea never wait for anyone".

-Astha
B.A. V Semester

Motivational Thought

1. Nothing is Difficult in the World.
   You Just Dare.
   Dream will change in reality
   If you try.
2. Know it or let it go
   Because the time you are sleeping
   At that time someone else is
   Making you dreams a reality.
3. Life doesn't find itself
   is in creating itself.
4. Trusting in your ability and stepped forward.
   The sky will also bow, you life your head.
5. If you have the courage to do.
   Anything ever after losing.
   Everything then understand.
   That you have not lost anything.
6. Keep the courage that the place will also come.
   Thirsty will come t the sea.
   Do not sit tired and enjoy the life of your destination.

-Simran Sharma
M.A. Ist Sem. (Sociology)

Change your mind

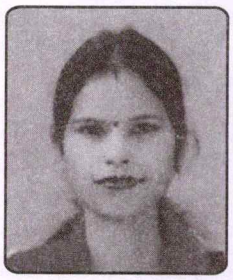

May it be a girl or a boy
A man or woman
For equal right do what you can
Open the gates of freedom
An it is just felt by some
Change the world
Change the mind
Why a girl is dream and
Hopes are covered by lids
Early marriage break their hopes
Limits their life with kitchen and soaps.
People deny growth to their thoughts
Everyone closes the doors
Trapping them inside four walls
No one hears their daughters
Cried and calls
Why can not we stand up
Educate girls and fulfil their dreams
Make them what they want
Let them stand on their feet.

-Rinkal Goal
Commerce Dept.

Kumbh Mela

Swiftly knocks down on me at down
on the holy ghat,
There, viewing the wonderful Triveni,
I sat:
Of Mata Ganges, Yamuna and Saraswati:
The breeze dished their Melody
in my soul, pretty.
Gently touches my eyes and subsistence
Again and Again cooling and blessing my existence.
Lost and closed my eyes to enjoys divine event,
Felt my love quietly glides his hands under my doubt,
I flushed and Rosy, mortified, blazed but flat
Sensed the blood pulsating in my
sanctuary secret.
My fleeing brain with no nation who gave me a hand,
Moving closer, faster and tenderly, cuddled
When I opened my eyes, I dreamy whispered
It was celestial breeze at
Kumbh Mela Ghat, cold.

-Karishma Sharma
B.A. Ist Sem.

Let No One Steal Your Dreams

Let no one steal your dreams
Let no one tear apart
The burning of ambition
That Fires the drive inside your heart.

Let no one steal your dreams
Let no one tell you that you can't
Let no one hold you back
Let no one tell you that you wan't.

Set your sights and keep the fixed
Set your sights on high
Let no one steal your dreams
Your only limit is the sky.

Let no one steal your dreams
follow your heart
Follow your soul
For only when you follow them.

Will you feel truly whole.
Set your sights and keep them fixed
Set your sights on high
Let no one steal your dreams.

-Ritpriya Chauhan
B.Com. IIIrd Sem.

God for strength

When I asked God for strength.
He gave me difficult situation to fight.
When I asked God for Brain and brown,
He gave me puzzles in life to solve.
When I asked Got for happiness,
He whowed me some unhappy people.
When I asked God for favor,
He Showed me opportunity to work hand.
When I asked God for peace,
He showed me how to help others.
God gave me nothing I wanted,
He gave me everything I needed.

-Garima
B.Com. 3rd Sem.

Char Dham Yatra

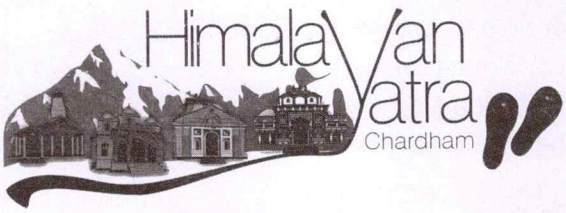

whenever we think about chardham yatra, A beautiful word **DEVBHOOMI UTTRAKHAND** partly stucks in our mind. An amazing destination full of natural beauties like mountains, snowfalls, green valleys' Deep lakes, rivers, religious spots, flaura and fauna'

Basically **chardham tour** involves four spiritual destinations comes under Garhwal region of Devbhoomi uttrakhand which are named as **yamunotri, Gangotri, Kedarnath, Badrinath,** feature many traditional sights like Ancient Temples,Heritage building, old caves, sculptural art. so many people's from all over the countries came every year in the search of peace and these pilgrimage sights fulfils all spiritual desires of devotees.

So, The chardham yatra basically begins from yamunotri situated in uttarkashi, famous for its beginning source of river yamuna and yamunotri temple according to Hindu tradition Yamuna is the sister of yama [the god of death] and it is believed that taking a bath in this holy river saves you from a painful death. Further you may also experience surya kund, similarly you collect sweet memories of Gangotri dham including Harsil valley, Bhagirathi river and wonderful Himalayan views,now the next step in your way takes you to the most worshipped and popular holy place counted as third in your **char dham yatra** 2021 list is Kedarnath: a place where you get Darshan of lord **BABA KEDAR** in Kedarnath temple after taking holy dip of warm Gaurikund. Finally the fourth dham, listed Badrinath dham shows you many ancient and religious art developed by our ancestors like Vyas Gufa, mata murti temple, mana village, Bhim pull (Bridge), tapt kund and Mukh of Saraswati river' (Beginning of river Saraswati)

Except **four Dham,** we will also enjoy some wonderful cities of uttrakhand like **Rishikesh, Haridwar** where the evening **AARTI OF MAA GAMGA** at Ganga Ghats energies your soul and connect us to the other world.

Chardham Tour is not all about visiting traditional places and learning about its culture, it is also concerned with topic of comfortability of tour so thl selection of a government approved we, skilled and disciplined tour guide is also mandatory, which helps you to make your trip easy. you may also prefer some genuine private tour agents according to your pocket.

You may also experience some luxuries facilities in Chardham tour package 2021 like:-

- Star hotels,
- Well maintained vehicles with experienced chauffeur,
- Chardham chopper facility,
- VIP Darshan facilities.

'ATITHI DEVO BHAVA' there is no doubt that everyone is familiar to this word, a Sanskrit word literally means "The guest is equivalent to god" holds a very important and deep meaning in your Chardham yatra because it defines the beautiful and supportive nature of peoples you meet in your **Chardham Trip**. The peoples of Uttrakhand are having a very simple lifestyle and always ready to serve their best.

Chardham yatra is once in a lifetime tour that gives you a unforgettable moments and memories tightly holds by your heart and every generation mean youngsters, senior citizens or from other nation wants to come once in his/her life . Uttrakhand Chardham yatra gives us a chance to witness the greatness and importance of Hindu culture with your eyes and explore this paradise on earth.

THE PENCH KEDAR: UTTRAKHAND

India is the only nations where you can find peoples belongs to a particular religion and have their own way to symbolise their culture. Basically more than half of population of India belongs to the Hindu religion (Hindu Dharma) Because of which the country is full of Beautifully Designed Historic temples showing the dedication and love of our ancestors they put at the time of formation of these temples. The

word Temple stated as a solid form of purity and Faith, a place from which some word like Prayers, Devotion, Spirituality, Believes take Birth. Inshort a place where your search for god accomplished & Thousands of Devotees from all over the world visit every year with this hope that one day their wishes will comes true when god receive their prayers.

In this writing, we are moving towards an interesting journey of some ancient Temples situated in the wonderful state of India known as **"DEVBHOOMI UTTRAKHAND"** where Devbhoomi stands for land of Lord. According to a survey there is total number of 680 temples found in the land of Uttrakhand state. So without wasting your precious time let's start this paragraphic journey with some of the most popular Temples of Devboomi which is ilso known as **PANCH KEDAR** and marked as a common attraction for Tourists as a Travelling Destinations too.

KHDARNATH TEMPLE

Kedarnath Temple is 1000 years old Hindu Temple belongs to Hindu God **"LORD SHIVA"** was established By pandavas. It is situated in Rudraprayag district of Garhwal region of Uttrakhand having a distance of 223 kms. from Rishikesh, Due to some climatic changes this holy place opens only between the months of April and November. Kedarnath Temple is also one of the major Dham in Char Dham Yatra.

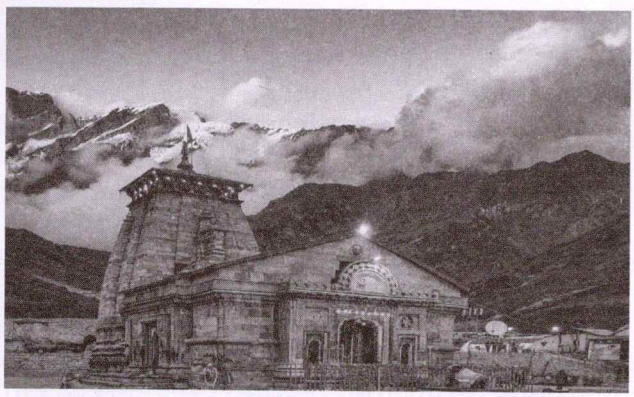

TUNGNATH TEMPLE

A Thousand year old temple dedicated to Lord shiva located on the chandranath parvat in the distt. of Rudraprayag, uttrakhand. Basically it covers a distance of around BB km from kedarnath temple and also believed as one of the highest shiva temple of uttrakhand. The best time for tourist to visit Tungnath is suggested from the month of April to August after that the trek is considered to be risky when Monsoon arrives or snowfall begins.

RUDRANATH TEMPLE

Rudranath Temple is a Rock structured Hindu temple established by the Pandavas in the Garhwal Distt. of uttrakhand known for its rough and tough trek begins from sagar village which is 03 kms from Gopeshwar and similarly the other one starting from Mandal which is 12 km from Gopeshwar 'The month of May to November is considered as a good time for tourist to travel here. The distance between Kedarnath and Rudranath is 33.9 kms.

MADHYAMAHESHWAR TEMPTE

Madhyamaheshwar Temple is also known as Madmaheshwar Temple. It is located in the Goundar Village of Garhwal Himalayan region of Uttrakhand. you can reach Madhmaheswar after covering a trek of 16kms from Ransi village. Temperature is always remains cold here but for the purpose of travelling month of March and october is good for Travellers.

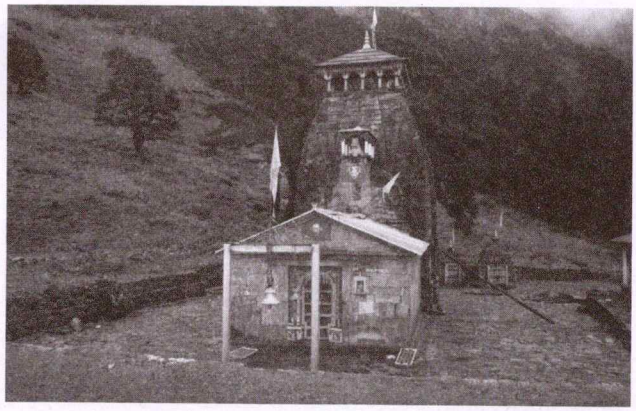

KALPESHWAR TEMPLE

Kalpeshwar Temple is a Shiva temple situated in the urgam valley in Uttrakhand -The temple is open throughout the year for pilgrims to visit, it has an easy trek of 10 kms. from helang to Kalpeshwar but nowdays jeep service isavailable from helang to urgam village ,o tt. trek distance left only 1 kms. Tourists experience so many beautiful sights here like valley views potato farms, meadows, River views between the routes.

Here is an intresting story mentioned in the **EPIC MAHABHARAT** for you about the temples listed above that all of the temples formed by PANDVAS on the way of search for Lord shiva to wash their sins of killing their respected elders and other family member during the war.

VALLEY OF FLOWERS

"UTTRAKHAND "a Small State with full of Amazing Tourist Destination where you can find a lot of unforgetable experiences of Valley views, Mountain Trips, Jungle adventure and holistic heritages to connect your soul with peace . Now days Devbhoomi Uttrakhand is not just a state name it's a desireable place for travellers who wish to explore the nature secrets., With the help of this writing we are going to start a intresting paragraphic journey to one of the most remarkable spot near chamoli district of Uttrakhand named as VALLEY OF FLOWERS.

According to the name "Valley Of Flowers" it hints us a picture imagination of a place which is full of varieties in flowers 'yes' its true among 520 listed flowers species number of 490 species are found in valley like Marigotd, orchids, Daises, Primroses etc are the common flower species pointed there, near the entrance of Musadhar a research nursery was created for the promotion of these rare species & medicinal herbs but here is not an end of this beautiful destination not only for Flowers it is also rich in wild life with holding an area of gTsq km, it is a central area of Nanda Devi Bioshphere Reserve, visitors' capture Musk Deers, Snow Leopardess, Red Fox, Common Langur, Himalyan Black Beers' Himalyan Brown Beers and many more wild species.

The month of august is suggested as a best time to visit valley of flower and its nearby destinations like Hemkund sahib (Holy place of sikh) Hemkund Lake, Ghangaria and Nanda Devi Park' Valley of Flowers is waiting for those who are wishing to visit Uttrakhand this year, so find your best Travel guide' assure your comfort and start your wonderful Trip.

-Sakshi Uniyal
B.Com, VI th Semester
(self Finance)

Mathematics : The Mirror of any Civilisation

Since human race came into existence, it is strongly interconnected with various sciences specially Mathematics. As human civilization progressed, mathematics prospered and this process of development is still continued. In fact mathmatics is the mirror of any cilvilisation. Wide spectrum of mathematics covers all branches of science including physics, astronomy, metallurgy, medical sciences, surgery, fine arts, civil engineering, architecture, ship-building, navigation etc, as a result it occupied highest place among all sciences.

the credit of most important scientific invention i.e. Electro-amgnetic waves which are necessary for the working of modern world gazattes or Radio, T.V., Mobile phones, Internet etc. ultimately goes to mathematics. Moreover essential infrastructure for any nation to be as great power in the world such as Nuclear Industries, space research program, formation of space-ships and air-plane require advance lever of mathematics, Health of mathematics is a direct parameter of any ration's scientific and technological state. Today's world extiredy depends on modern mathematics which in illuminated by the light of Vedic Mathematics. Vedic Mathematics is the ancient Indian mathematics that had been originated and developed in Vedic culture which encompasses the long period of history, Since ancient period, India emerged as a scientific powerhouse in the world due to superior cultural attainment of Vedic seers and pioneering extra-ordinary mathematical inventions of ancient Indian mathematicians. Form the treasures of inventions made by Indians, the best invention is 'Zero and Decimal Place Value System' which set the platform for further research and developments in mathematics. It's a matter of great privilege for us to have such glorious history and rich cultural heritage.

-Dr. Padmavati Taneja
Department of Mathematics

Digital Jewellry

Digital jewelry is the fashion jewelry with embedded intelligence. It can best be defined as wireless, wearable computers that allow you to communicate by ways of email, voicemail and voice communication.

Soon, cell phones will take a totally new form appearing to have no form at all. Instead of one single device, cell phones will be broken up into their basic components and backaged as various pieces of digital jewelry. Each piece of jewelry will contain a fraction of the components found in a conventional mobile phone, Together, the digital jewelry cell phone should work just like a conventional cell phone.

Here are the pieces of computerized jewelry phone and their functions:

- Earrings - speakers embedded into these earrings will be the phone's receiver.
- Neckless - Users will talk into the necklaces embedded microphone.
- Ring - The most interesting piece of the phone, this "magic decoder ring" is equipped with light-emittion doides (LEDs) that flash to indicate an incoming call.
- Bracelet - Equipped with a videon graphics array (VGA) display, this wrist display could also be used as a caller identifier that flashes the name and phone number of the caller.

The basic idea behind the digital jewelry concept is to have the convenience of wireless, wearable computers while remaining fashionably sound. It is hoped to be marketable soon, however, several bugs remain. Charging capabilites and cost are just a sample of the problems that lurk.

-Neha Gupta
(Department of C.S.)

Chemistry Department

Why Chemistry is Important ?

Chemistry is important in everyday life because-

- Everything is made of chemicals. You are made of chemicals. So is your pet. So is your desk. So is the Sun. Drugs are chemicals. Food is made from chemicals.
- Many of the changes you observe in the world around you are caused by chemical reactions. Example include leaves colours changing, cooking food and getting yourself clean.
- Knowing some chemistry can help you make day to day decisions that affect your life. Can I mix these house-hold chemicals? What are safe mosquito repellents? Will my bottle water expire? Can I mix types of motor oils for my vehicle?
- Understanding basic chemistry is essential for under-standing the effects of chemicals on the environment. This information can be used to give plants the best nutrients to help them grow or decide how to dispose of chemicals without poisoning the air are water supply.
- Chemistry concepts are important in other disciplines. It key to cooking, biology, physics and astronomy.
- Chemistry is fun! It can be used to make colours change, alter recipe, colour flames, make things glow in the dark, or even make stuff expode. Many people study chemistry not because it's a requirement for a class but because they are interested in using it to explore the world and to try science projects. As hobbies go, chemistry is inexpensive because home chemicals can be used to perform many interesting experiments.

-Dr. Purnima Sundriyal
Chemistry Deptt.

Purpose of our life?

Most of us are living life as a process, that is, the process of growing from a child to an old man.

What is the reason for this process? Why are we born and die? What is the reason behind this life? What is the purpose of life?

I am sure many of you must have asked these questions at least ones in your life. Now, where to go? Whom to ask?

Who can answer this?

What if I say that we/I/you can answer all these questions, How?

Let me explain, what happens when we are curious about something? We try it. And when we have any doubt in academics or anything then we search it on google/internet or ask our teachers or someone who knows it better and sometimes we get answers not from anywhere but from ourselves.

We'll never stop if we don't get satisfied answers, right? Now, who is actually the season for your answers? You, because you asked it and you find your answers, sure you took help, but you answered the questions yourself. Now where to go to know questions related to life? Surely you can ask for help from an enlightened person or a wise person, but no one can tell exactly about you, but you yourself, lime many yogis do and Lord Buddha did when he asked others. Unsatisfied with the answers he received, he began meditating under a peepal tree and become duply absorbed is medication, and, reflecting on his life experience, determined to perpetrate the trust of it, he eventually attained enlightenment and become Buddha from Siddhartha. What he really did was focus on himself, and introspect with all the questions and get his answers. By reflecting himself not as a body, but as a soul, as a spiritual being, where he realized that we are more than this body. "We were, we are and always will be". We all know that, but we are so busy focusing on the daily chaos of our lives that we forget that we are so much more that that, we are here to know ourselves and our potential. We are here to get answer to our questions, we are here to know the true magic of this universe. to know that we all originated from the same sources, which we call God.

In Buddhism and many other religions, it is said that when a person finds the truth about life, they stop being reborn, becouse they have reached nirvana. Once you have attained Nirvana you are not born again is the samsara/would (which is suffering) and this is the ultimate goal of every soul (ours)

-Harshita Pokhariyal

B.Com, IInd year

Believe In Yourself

Why is it we don't believe in ourselves? That as soon as things get tough in our liver we start doubting ourselves. We start thinking that we may not make it and them stressing, wouying, imagining things that may go wrong in future.

We need to understand, the human mind is the most powerful tool we own, but it can also be the most DESTRUCTIVE..and we need to learn how to take control of the direction of our mind and our challenges in life, It you conquer your mind, you can pretty much conquer anything else around you.

"When your writing the story of your life, make sure you hold the pen, Make sure not only that you hold the pen, but you write the script from your heart.

Be brave when writing your script, its you story and there are No limits to what you can have, what you can do or what you can be.

It is easy to be all positive & consistent when everything is going your way but that's not life, that's not realistic!

Are you going to be one of the very few to stand up when things are tough, when everything is going against you? Will you be able to believe in what's right & what bring results to you life?
THAT's WHEN YOUR CHARACTER WILL SHINE!
THAT's WHEN YOU STORY WILL BE BORN!
Your story is valuable!
Your story of success!

Most people are bloated with ordinary thoughts and mindsets. They're so full of average people that they have no offetire but you have to have an appretite for EXTRAORDINARY, Beyond what people are doing-think beyond them.

There will always be doubters, and people below you & trying to put you down so they can feel hight, but you gotta "stay fuse to yourself". Believe in your mind, Have some high vision, There one day you will have your moment, Because anything is possible if you just BELIEVE!!

"One day this world will tags you on your shoulder & say....This is your time to shine".

-Antim Tyagi
Department of Economics

Be a Nursed

As I looked around me.
And see how life has changed.
All my younger hopes and dreams.
Have all been rearranged.
I used to want to be a hero.
Flying around just doing good.
earning as I got older.
To do the thing I should.
I never want to be famous.
Or own big fancy cars.
Or set foot on the moon.
And study all the stars.
I didn't seek out the power.
To tell others what to do.
But if I could be like anyone.
I did want to be like you.
Helping little children.
And some older people toe.
If I could go back in time.
I know just what I'd do.
I wold not look for diamonds.
Or lots of money in a purse.
I would be the best of Heroes.
I would become a nurse.

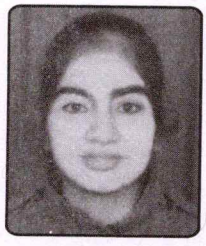

-Anshika Gotra
B.Sc. (C.S.) IV Sem.ster

ROLE OF CUSTOMER RELATIONSHIP MANAGEMENT IN BUSINESS

Dr. Sunil Kumar Batra

Principal, S.M.J.N. P.G. College, Haridwar

Dr. Virendra Kumar Gupta

Associate Professor, Faculty of Commerce, Pt. L.M.S. Campus Rishikesh, Sri Dev Suman Uttarakhand University, Uttarakhand

Neetika Aggarwal

Research Scholar, Department of Commerce, S.M.J.N. P.G. College, Haridwar

Abstract-In the present era of intense globalization, it is very crucial for any business to retain customers in order to survive in this competitive world. Customer relationship management is a process or methodology used to learn more about the needs and behavior of customers so as to develop stronger relations with them. There are many technological terms related to customer relationship management, but it not good to think of it primarily in such terms. In fact, to think about customer relationship management as a process that helps in bringing together lots of information about customers, sales, marketing effectiveness, responsiveness and market trends. This paper attempts to assess the role of customer relationship management in business from the same point of view and to suggest ways accordingly to make it fruitful for the growth of business organizations.

keywords-Customer Relationship Management, Business growth, customer support services, market trends.

INTRODUCTION

The term Customer Relationship Management refers to the practices, strategies, and technologies that companies used to manage and analyze customer interactions and data throughout the 'customer lifecycle', with the goal of improving customer service relationships, and assisting in customer retention and driving sales growth.

Customer Relationship Management is a strategy widely used by companies and organizations (includingrelated integrated information systems and technology, often in the form of software) to record and manage their overall data and interactions with current, past and potential customers. CRM works to ensure that all customer interfacing organizational functions like sales, marketing, technical support are efficient and synchronized, ensuring that former and potential customers are adequately and appropriately served.

"CRM is concerned with the creation, development and enhancement of individualized customer relationships and with carefully targeted customers and customer groups resulting in maximizing their total customer life time values". It is a system of managing a company's interactions with current and future customers. It often involves using technology to organize, automate and synchronize sales, marketing, customer service and technical support.

Features of Customer Relationship Management

There are following characteristics or features which customer relationship management possess. They are described as below:

- A business strategy: Customer Relationship Management is business strategy to select and manage customers to optimize long term value.
- A comprehensive strategy: Customer Relationship Management is a comprehensive strategy and a process of acquiring, retaining, and partnering with selective customers to create superior value for the company and the customer.

- A complete system that provides a means and method to enhance the experience of the individual customers so that they will remain customers for life.
- It provides both technological and functional means of identifying, capturing and retaining customers, and gives a cohesive view of customer across the enterprise.

According to Sir Henry Ford, "A business absolutely devoted to customer service excellence will have only one worry about profits. They will be embarrassingly large".

The term Customer Relationship Management (CRM) started using since early 1990's by business people when the concept of business started to change from 'transactional to related'. Information technology plays a very critical role in identifying, acquiring and retaining customers, and thereby managing a healthy relationship with them. The systems in customer relationship management are designed to compile information on customers across different channels or points of contacts between the customer and the company which could include the company's websites telephone, live chat, direct mail, marketing materials and social media. This system can also give customer-facing staff detailed information on customer's personal information, purchase history, buying preferences and concerns. In other words, customer relationship management (CRM) is an approach to manage a company's interaction with current and potential future customers. The CRM approach tries to analyze data about customer's history with a company in order to improve business relationships with customers, specifically focusing on customer retention and ultimately to drive sales growth. The primary goal of customer relationship management systems is to integrate and automate sales, marketing and customer support. Therefore, these systems typically have a dashboard that gives an overall view of the three functions on a single page for each customer that a company may have. The dashboard may provide client information, post sales, previous marketing efforts and more summarizing all of the relationships between the customer and the firm. Following are the aims of customer relationship management:

- Improving customer satisfaction: CRM helps in improving customer satisfaction as the customers who are satisfied remain loyal to the business and spread good word-of-mouth. This can be accomplished by fostering customer engagement via social networking sites, surveys, interactive blogs, and various mobile platforms.
- Expand customer base: CRM not only manages the existing customers but also creates knowledge for prospective customers who are yet to convert, it helps in creating and managing a huge customer base that fosters profits continuity, even for a seasonal business.
- Enhance business sales: CRM methods can be used to close more deals, increase sales, improve forecast accuracy, and suggestion, selling. CRM helps to create new sales opportunities and thus helps in increasing business revenue.
- Improve workforce productivity: A CRM system can create organized way of working for sales and sales management staff of a business. The sales staff can view customer's contact information, follow up via email or social media, manage tasks, and track the salesperson's performance. The salespersons can address the customer inquiries speedily and resolve their problems.

REVIEW OF THE LITERATURE

A review of the literature provides the summary of the related work done by previous researchers. It is important to review past literature so as to find out gaps and to contribute something new to the existing knowledge. Following studies were taken for review for the present study:

Ozgener & Iraz (2006) in their study concluded that in order to achieve successful follow-up of the Customer Relationship Management, it is important to make use of business dynamics; including company's image, activity qualities, etc., Unsatisfactory communication is the main obstacle in CRM in small and medium tourist enterprises.

Haenlein (2017) studied that the reason behind customs to change company was attitudinal loyalty and not habits or switching costs. It was also concluded that regular improvements in the products leads to attracting large number of customers.

Shetty & Basri (2018) revealed that factors including relationship quality, customer satisfaction and loyalty, customer commitment played positive in relation towards the salesperson attributes. There is also positive impact of contact intensity, contact frequency and knowledge of the client.

Marcos & Coehlo 2018) presented the relationship between factors of communication. They further concluded that there was a direct influence of communication on reputation , trust and commitment. On the other hand, it had an indirect influence on loyalty and word of mouth.

Valmohammadi (2017)in their study conclude that CRM practices have a low but positive effect on the performance of organization and capability of innovation in case of organizations indulge in manufacturing business in Iran.

Sota et.al (2018) presented that in the most searched area in customer relationship management was loyalty and most researches were empirical but there was a lack of studies relating to the dimensions- security and privacy issues in CRM.

Yadav &Singh (2018) elaborated that was a high commitment level of customers towards a firm or a brand when there was unavailability of same features in distinct products of other brand or firms.

Kalairasi & Mugunthan (2020) in their study concluded that for a successful customer management relationship it is necessary to have a proper communication channel and top level management issues must be solved at priority basis.

SIGNIFICANCE OF CUSTOMER RELATIONSHIP MANAGEMENT IN MODERN BUSINESS ENVIRONMENT

Essentially, Customer Relationship Management (CRM) encompasses all activities, strategies and technologies that companies use to manage their interactions with their current and potential customers. A saying that is often heard and said in many companies is "the customer is king". CRM helps companies build a relationship with their customers, which in turn creates customer loyalty and loyalty. Since customer loyalty and sales are characteristics that affect a company's sales, CRM is a management strategy that leads to higher profits for a company. Essentially, a CRM tool creates a simple data collection user interface that helps businesses discover and communicate with customers in a scalable manner. It provides business firms:

- Effective marketing
- Improved profitability
- Long term success
- Decrease customer management cost
- Win new customers
- Retain customer through better customer experience
- Relationship building
- Understanding customer value

❖ **Benefits of Customer Relationship Management for Customer**

Following are the benefits, customer relationship management provides for customers:

- Improve customer service
- Increased personalized service or one to one service
- Responsive to customer's needs
- Customer segmentation
- Improve customization of marketing

- Multi-channel integration
- Time saving approach
- Improve customer knowledge

❖ **Constituents of Customer Relationship Management**

- Analytics: It is the process of studying, handling and representing data in various graphical formats such as charts, tables, trends, etc. in order to observe market trends.
- Workflow Automation: It involves streamlining and scheduling various processes that run in parallel. It reduces costs and time, and prevents assigning the same task to multiple employees.
- Sales Force Automation: Sales force automation includes forecasting, recording of sales, processing, and keeping a track of the potential interactions.
- Marketing: It involves forming and implementing sales strategies by studying existing and potential customers in order to sell the product.
- Lead Management: It involves keeping a track of the sales leads and distribution, managing the campaigns, designing customized forms, finalizing the mailing lists, and studying the purchase patterns of the customers.
- HR Management: Human Resource Management involves employing and replacing the most eligible human resource at a required place in the business.
- Customer Services: It involves collecting and sending the customer related information to the concerned department.
- Business Reports: It involves accurate reports of sales, customer care, and marketing.

EVALUATION OF CUSTOMER RELATIONSHIP MANAGEMENT IN BUSINESS

In order to realize the investment towards any CRM initiatives, it is crucial for businesses to have a CRM Evaluation methods or metrics in place. The prime concern of a customer relationship management system is to improve relationships with customers and generate higher revenue. Therefore, it is necessary if your CRM is intended to track the efficiency of the sales and marketing team, or it is to build a strong relationship with your customers? The answer to questions like this will help to determine the focus of customer relationship management performance. Once the objective of CRM implementation is clearly defined, you can go ahead evaluating the best customer relationship management for your business.

Following points will help you in evaluating the customer relationship management system at its face:

· Customer Relationship Management ROI (Return on Investment): Depending upon the type of implementation and strength of organization, CRM initiative can be a complex and costly venture. Thus, a selected customer relationship management system shouldProvide tangible and measurable ROI. It should be Helpful in calculating the real business benefitsEnable accurate budgeting and reduced resources

- Ease of use: Implementing a CRM system shouldSimplify customer relationship and business processes. It must provide a user-friendly interface. It should allow ease of CRM navigation.
- Simplified Workflow: A CRM system in place shouldPerform various tasks easily. It must Present simplified workflow logics. The system should encourage easy adoption by users.
- Customization: The real efficiency of any CRM implementation lies in flexibility to change the default CRM set-up. There must be a provision P to shape the CRM according to the business processes. It should have the provision to roll back the default CRM set-up.

- Integration: The drive to maximize the value of your customer relationship necessarily demands the CRM system. It must provide well- defined integration architecture. It should enable cross-application business process. The system should reduce implementation time for custom integration.
- Post- sales Support: No CRM system is complete without the end user help files. Besides, the tips and tricks to efficient performance, the CRM implementation should have reference documentation for users. There must be ready online support. There should be notes and tutorials to complement documentation.

As mentioned above, once a customer is aware of the customer relationship management system, it must ask the vendor for the obvious and see if they can explain the functionality in simple terms; for the CRM system is full of jargons and buzzwords. If the vendor, can't provide convincing explanations of the functionality of a product, the customer won't buy it.

Deploying Customer Relationship Management (CRM) solutions: Once the business have all the information, it becomes easy to choose the CRM vendor that meets all the needs. A business must introduce the system slowly so that users get comfortable with the new solution without being forced to complete a job.

❖ **Types of Customer Relationship Management Implementations**

The following are various types of customer relationship management implementations:

- Strategic Customer Relationship Management

  Those systems which are customer centric, based on acquiring and aims at wining and maintain profitable customer.
- Operational Customer Relationship Management

  These are those systems which simplifies the business interactions and are based on customer-oriented processes such as selling, marketing and customer service.
- Analytical Customer Relationship Management

  These systems are based on intelligent mining of the customer data and using tactically for future strategies.
- Collaborative Customer Relationship Management

These systems are based on application of technology across organization boundaries with a view to optimize the organization and customers.

"Good Management consists in showing average people how to do the work of superior people".

❖ **Customer Relationship Management Programmes**

There are four types of Customer Relationship Management programmes that enables the company or business firm to win back customers who have defected or planning to create loyalty among existing customers. They are:

- Win back or save: This is the process of convincing a customer to stay with the organization while they are discontinuing service or convincing them to rejoin once they have left. Of the four categories of campaigns, win back campaign is four times more likely to succeed, if contact is made with in the first week following a defection that if it is made in the fourth week.

Selectivity is another aspect of a successful win back campaign. Leading organizations often filter prospects for contacting to exclude customers who have frequently switched, who have bad credit ratings or whose usage is low.

To preserve the revenue stream and prevent the customer from becoming a traditional win back candidate, a few business enterprises are now including partial disconnects and reduced usage

customers in their win back campaign. Following are the steps to win a customer back:

- Know who left and keep a record.
- Segment the people who left and know which people are high value customers.
- Offer a respectful and responsible apology.
- Providing them special discounts, deal incentives, targeted services etc.

- Prospecting: Prospecting is the effort to win new, first-time customers. Apart from the offer itself, the three most critical elements of prospecting campaign are segmenting, selectivity, and sources. It is essential to develop an effective need-based segmentation model that allows an organization to effectively target the offer without this focused approach, the organization fails to achieve an adequate acceptance on the offer or spends too much on promotions, advertising and concessionary pricing. Selectivity is as important to prospecting as it is to win back. Need-based segmentation defines what the customer wants from the organization and profit-based segmentation defines how valuable the customer is and helps the organization in deciding how much it is willing to spend to get the customer. Pre-scoring a customer credit rating is one of the techniques that organization can use to determine the latter.
- Loyalty: Loyalty is the third category in which it is most difficult to gain accurate measures, the organizations trying to prevent customers from leaving, uses three different elements: value-based segmentation, need-based segmentation and predictive models. Value-based segmentation allows the organization to determine how much it is willing to invest. Once the customer is determined to belong to the value-based segmentation screening, the organization can use need-based segmentation to offer customized loyalty program. Affinity programs such as airlines miles and hotel points are some of the most popular methods. However, the organization focus more on the needs of individual customers, they find that they are able to achieve the same loyalty with less investment.
- Cross sell/ up sell: the cross sell / up sell is also known as increasing the wallet share or the amount the customer spends. The purpose is to identify complementary offerings that a customer would like. For instance, a basic long-distance customer could be a candidate to buy internet access. Up selling is similar but instead of offering a complementary product, the organization offers an enhanced one. For example: if the customer has used his credit card a few times in apparel shop, customer relationship tool will enable the credit card company to send his customized mailers on apparel offers including special incentive schemes. Cross sell and up sell campaigns are important because the customers targeted already have relationship with the organization. In financial terms, when a customer accepts a cross sell or up sell offer, that organization begins to reap more profits.

CONCLUSION AND SUGGESTIONS

Customer relationship management strategy is a directed course of action to achieve intended set of goals of CRM i.e., for managing all business's relationships and interactions with the customers and potential consumers. It helps in the improvement of profitability of the business firms.

Customer relationship management is a broadly recognized and widely implemented strategy for maintain and nurturing a company's interactions with customer's clients and sales prospects. It involves using technologies to organize, automate and synchronize business process not only for sales activities, but also for marketing, customer services and technological support. When an implementation is effective, people, process and technology work in synergy to increase profitability and reduce operational costs.

According to Laurice Leitao, "Our greatest asset is customer! Treat each customer as if they are only one!".

Customer relationship management entails all aspects of interaction of a business firm has with its customer, whether it is sales or service related, it starts with the foundation of relationship marketing. It is a systematic approach towards using information and ongoing dialogue to built long lasting mutually beneficial customer relationship.

Following are the suggestions business firms need to follow for an effective customer relationship management:

- CRM requires a cultural change with organization.
- CRM can be enabled by technology, but it alone will not deliver business benefits- change management is needed, vitally the customer experience needs to be consistently enhanced.
- Its an ongoing business process and will create sustainable competitive advantage. It is said "If you are not listening to your customers, your competitors will!".
- The employees of a firm employing CRM would require rich information about their firm and customer base including -information about the market, information about the firm, the current segment, demographic distribution (age, gender, education, income etc.,), the firm's best customers and the segment they belong to, products they buy, preferences, habits and tastes of each segment.
- They also need to acquire individual level information consisting of customer personal details such as name, address, family details, education etc., the customer group segment to which the individual belongs, history of their past and present behavior, likes, dislikes, habits and preferences of customers, etc.
- The main purpose of CRM is to drive profit by helping companies effectively track the relationship with current and future customers. It can involve any or all customer-oriented process in a company, such as sales, marketing and technical support.

REFERENCES:

de Figueiredo Marcos, A. M. B., & de Matos Coelho, A. F. (2018). Communication relational outcomes in the insurance industry. Asia Pacific Journal of Marketing and Logistics.

Haenlein, M. (2017). How to date your clients in the 21st century: Challenges in managing customer relationships in today's world. Business Horizons, 60(5), 577-586.

Meena, Priyanka & Sahu, Praveen. (2021). Customer Relationship Management Research from 2000 to 2020: An Academic Literature Review and Classification. Vision: The Journal of Business Perspective.10.1177/0972262920984550.

Özgener, S. & İraz, R. (2006). "Customer relationship management in small–medium enterprises: The case of Turkish tourism industry", Tourism Management, Vol. 27, No.6, 356-1363.

Shetty, A., & Basri, S. (2018). Relationship Orientation in banking and insurance services- a review of the evidence. Journal of Indian Business Research, 10(3), 237-255. https://doi.org//10.1108/JIBR-10-2017-0176.

Sota, S., Chaudhry, H., Chamaria, A., & Chauhan, A. (2018). Customer relationship management research from 2007 to 2016: An academic literature review. Journal of Relationship Marketing, 17(4), 277-291.

Valmohammadi, C. (2017). Customer relationship management: Innovation and performance. International Journal of Innovation Science.

Yadav, N. S., Gupta, M., & Singh, P. (2018). Factors affecting buying behavior & CRM in real estate sector: a literature survey. Asian Journal of Research in Business Economics and Management, 8(6), 32-39.

चित्रों के झरोखे से

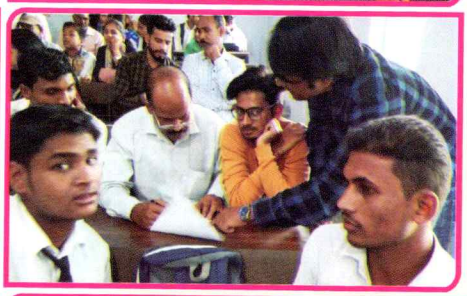

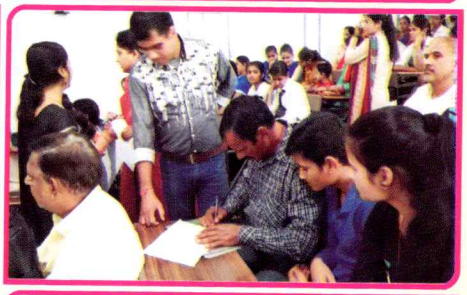

हरिद्वार
"ऑपरेशन मुक्ति"
भिक्षा नहीं, शिक्षा दें

S.M.J.N.(P.G) College, Haridwar
बृहस्पतिवार, दिनांक 10 अक्टूबर, 2019
आपरेशन मुक्ति
'भिक्षा नहीं, शिक्षा'
की ओर एक अभियान

चित्रों के झरोखे से

चित्रों के झरोखे से

हरद्वार
NATIONAL WORKSHOP
ON

एस. एम. जे. एन. (पी. जी.) कॉलेज
हरिद्वार

एस. एम. जे. एन. (पी. जी.)
हरिद्वार

एस. एम. जे. एन. (पी. जी.) कॉलेज
हरिद्वार

चित्रों के झरोखे से

राष्ट्रीय वाद-विवाद प्रतियोगिता
विषय प्रवाह

राष्ट्रीय

राष्ट्रीय वाद-विवाद प्रतियोगिता
विषय प्रवाह

COACH

चित्रों के झरोखे से

चित्रों के झरोखे से

चित्रों के झरोखे से

चित्रों के झरोखे से

हरिद्वार

Internal Quality Assurance Cell (IQAC),
S.M.J.N.(P.G.College), Haridwar
In Collaboration with

एसएमजेएन पीजी कॉलेज परिसर में पौधरोपण करते प्राचार्य, शिक्षक व छात्र छात्राएं

पौधरोपण व जल संरक्षण एक-दूसरे के पर्याय : बत्रा

विचार गोष्ठी

- राकमैन फाउंडेशन के साथ एसएमजेएन कॉलेज में रोपे पौधे
- पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए किया प्रेरित

जागरण संवाददाता, हरिद्वार: एसएमजेएन पीजी कॉलेज ने राकमैन फाउंडेशन के साथ मिलकर सोमवार को कॉलेज में जल संचय, जल संरक्षण और संवर्धन विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया। वहीं परिसर में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया। जल संरक्षण और संवर्धन के लिए प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा ने सभी को हर साल कम से कम दो पौधे अवश्य रोपने की शपथ दिलाई।

कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा ने कहा पृथ्वी पर जल की मात्रा दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। बढ़ती जनसंख्या ने कई समस्याओं को जन्म दिया है इसमें जल संकट भी है। कहा आशंका है कि 2025 तक विश्व की लगभग दो तिहाई जनसंख्या पानी के गंभीर संकट से जूझती दिखेगी। छात्र कल्याण परिषद के अधिष्ठाता डॉ. संजय माहेश्वरी ने कहा अगर जल का सही ... विनाश का कारण बन सकता है। मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ. सरस्वती पाठक ने कहा जल ही जीवन है। बगैर जल के जीवन की कल्पना संभव नहीं है। पौधरोपण कार्यक्रम के संयोजक एजीएम राकमैन फाउंडेशन अखिलेश डिमरी ने कहा वृक्ष रहेंगे तो मानव जीवन रहेगा। वृक्ष हमें ऑक्सीजन देते हैं।

पौधरोपण करने वालों में प्राचार्य डॉ. एसके बत्रा आदि के अलावा डॉ. मनमोहन गुप्ता, डॉ. जगदीश चन्द्र आर्य, डॉ. नलिनी जैन, विनय थपलियाल, डॉ. सुषमा नयाल, मोहन चन्द पांडेय, वेद प्रकाश चौहान, सुशील राठौर, अमित श्रीवास्तव, प्रदीप कुमार, बीइंग भागीरथ के शिखर पालीवाल आदि शामिल रहे।

दीक्षा और आकाश सैनी ने लहराया परचम

हरिद्वार | हमारे संवाददाता

दीक्षा वर्मा।

आकाश सैनी।

एसएमजेएन पीजी कॉलेज के दो छात्रों ने आईआईटी जेम-2021, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-एमएससी में प्रवेश के लिए संयुक्त परीक्षा में सफलता प्राप्त की है।

कॉलेज के प्राचार्य डा. सुनील बत्रा ने बताया कि उक्त परीक्षा हेतु कॉलेज की छात्रा दीक्षा वर्मा ने गणित विषय तथा आकाश सैनी ने रसायन विज्ञान विषय में इस महत्वपूर्ण परीक्षा को उत्तीर्ण किया है। आईआईटी जेम के माध्यम से देश के प्रतिष्ठित प्रौद्योगिकी संस्थान में इन छात्राओं को प्रवेश का अवसर मिलेगा।

कॉलेज प्रबंध समिति के सचिव श्रीमहंत रविन्द्र पुरी ने अपने बधाई संदेश में कहा कि समस्त अभ्यर्थियों ने अपने माता-पिता, परिवार व जनपद का नाम रोशन किया है। प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्रीमहत लखन गिरि ने समस्त अभ्यर्थियों को अपनी शुभकामनायें प्रेषित की। कॉलेज फैकल्टी ने दोनों छात्रों को शुभकामनाएं दी हैं।

एसएमजेएन कालेज में विधिक जागरूकता शिविर आयोजित

हरिद्वार: स्थानीय एस.एम.जे.एन पी.जी. कॉलेज के व्याख्यान कक्ष में आज कालेज एवं भारतीय जागरूकता समिति के संयुक्त तत्वाधान में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बतौर अतिथि सुश्री शिवानी पसबोला सिविल जज, सुश्री अंजली माहेश्वरी, सदस्य स्थायी लोक अदालत, समाज सेवी डॉ विशाल गर्ग, विनायक गौड, मा. उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता ललित मिगलानी ने नशा मुक्ति, सड़क सुरक्षा एवं साईबर क्राईम के विषय में कॉलेज के छात्र-छात्राओं को विशद जानकारी दी व उनके द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भी दिये। सर्वप्रथम पुलवामा में आतंकी हमले में शहीद हुए सी.आर.पी.एफ. के वीर शहीद जवानों को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित कर नमन किया गया व दो मिनट का मौन भी रखा गया।

इस अवसर पर छात्र-छात्राओं उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता ललित मिगलानी ने साईबर क्राईम के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि कि तरह लोग इंटरनेट व फोन के माध्यम से उनके दिमाग को भ्रमित कर उनके जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। कभी पैसे, कभी खाता नम्बर मांगकर, कभी नौकरी का प्रलोभन देकर युवाओं को गलत कार्य करने के लिए उकसाते हैं, इसलिए युवाओं का सचेत रहना आवश्यक है। मिगलानी ने नशे से सम्बन्धित कानून के बारे में बताया कि नशा व्यक्ति को मानसिक व शारीरिक रूप से कमजोर करता है और नशे से मुक्त होने के लिए परिवार एवं सहपाठियों का सहयोग होना जरूरी है। ललित मिगलानी ने जानकारी देते हुए बताया कि अगर किसी व्यक्ति को सड़क दुर्घटना के दौरान कोई घायल व्यक्ति दिखता है तो अपनी जिम्मेदारी समझते हुए उसे तुरन्त नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराकर उसके जीवन को बचाने का सार्थक प्रयास करें। उन्होंने बताया कि माननीय उच्चतम न्यायालय ने यह निर्देश दिया है कि कोई व्यक्ति किसी दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को अस्पताल में भर्ती कराता है तो वह किसी भी कानूनी मामले में नहीं फसेगा।

सुश्री शिवानी पसबोला, सिविल जज व संस्था की सचिव ने जिला विधिक प्राधिकरण के बारे में जानकारी दी और बताया कि प्राधिकरण गरीबों को निःशुल्क अधिवक्ता उपलब्ध कराता है उसके लिए अपनी अर्जी प्राधिकरण के कार्यालय में देनी होती है।

लोक अदालत की सदस्य सुश्री अंजली माहेश्वरी ने लोक अदालत के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि लोक अदालत में पब्लिक यूटीलिटी से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान लोक अदालत में किया जाता है। अगर किसी व्यक्ति की शिकायत शिक्षा, चिकित्सा से सम्बन्धित है तो वो अपनी अर्जी स्वयं आकर दे सकता है।

कॉलेज के प्राचार्य ने डॉ. सुनील कुमार बत्रा ने सभी अतिथियों का धन्यवाद प्रेषित करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से छात्र-छात्राओं में जन-जागरूकता उत्पन्न होती है तथा विधिक जानकारी प्राप्त होने पर वे सही मार्ग पर चलने के लिए अग्रसर होते हैं व दूसरों का भी उचित मार्गदर्शन करते हैं। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. संजय कुमार माहेश्वरी द्वारा किया गया। इस अवसर पर कॉलेज के डॉ. सरस्वती पाठक, डॉ. जे.सी. आर्य, अंकित अग्रवाल, वैभव बत्रा, कार्यालय अधीक्षक मोहन चन्द्र पाण्डेय, श्रीमती रिंकल गोयल, श्रीमती रिचा मिनोचा, डॉ. निविदिता मलिक, डॉ. आशा शर्मा सहित कॉलेज के अनेक छात्र-छात्रा उपस्थित थे।

सशस्त्र झंडा दिवस पर सैनिक कल्याण कोष में दिये 51 हजार

कमांडेंट आमोद चौधरी को चेक भेंट करते महंत रविंद्र पुरी।

हरिद्वार (एसएनबी)। एसएमजेएन कालेज में सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर शौर्य दीवार पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर कालेज प्रबंधन समिति के सचिव महंत रविंद्र पुरी ने कहा कि यह दिन राष्ट्र के सजग प्रहरियों के अविस्मरणीय बलिदानों और सेवाओं को स्मरण करने और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर है। अदम्य साहस, पराक्रम एवं देश की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने वाले तथा विषम परिस्थितियों में आम नागरिकों के जीवन की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहने वाले वीर सैनिकों पर प्रत्येक भारतवासी को गर्व है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि आमोद चौधरी कमांडेंट आफिसर ने सशस्त्र सेना झंडा दिवस के महत्व को बताते हुए कहा कि यह दिवस हमें सैन्य शहीदों एवं भारतीय सेनाओं में कार्यरत सैन्यकर्मियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का अवसर प्रदान करता है।

इस अवसर पर महंत रविंद्र पुरी ने 51 हजार रुपये सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर सैनिक कल्याण कोष में दान किये। कालेज के प्राचार्य डा. सुनील कुमार बत्रा ने बताया कि सशस्त्र सेना झंडा दिवस सात दिसम्बर को भारत में मनाया जाता है। इस अवसर पर कालेज के पूर्व छात्र मेहताब आलम ने भावविभोर करने वाली अपनी प्रस्तुति कर चले हम फिदा जानों तन साथियों प्रस्तुत की। कार्यक्रम में मुख्य अनुशासन अधिकारी डा. सरस्वती पाठक, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डा. संजय माहेश्वरी, सुषमा नयाल, डा. नलिनी जैन, विनय थपलियाल, डा. मनमोहन गुप्ता, दिव्यांश शर्मा, अंकित अग्रवाल, वैभव बत्रा, डा. पंकज यादव, डा. पद्मावती तनेजा, नेहा गुप्ता, विनीत सक्सेना, डा. विनिता चौहान, रिंकल गोयल, डा. कुसुम नेगी, सुगंधा वर्मा, अश्वनी जगता, एमसी पांडे, नेहा सिद्दीकी, दीपिका आनंद आदि मौजूद रहे।

बीकॉम छठे सेमेस्टर का परीक्षाफल शत प्रतिशत

हरिद्वार। हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय ने बीकॉम छठे सेमेस्टर का परीक्षा परिणाम जारी कर दिया है। एसएमजेएन पीजी कॉलेज का परीक्षाफल शत प्रतिशत रहा है।

एसएमजेएन कॉलेज के 145 छात्र छात्राओं ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की

कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा ने बताया कि 145 छात्र-छात्राओं ने बीकॉम-छठे सेमेस्टर में प्रथम श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की है। उन्होंने बताया कि कॉलेज के 29 छात्र-छात्राओं ने 7 सीजीपीए से अधिक का ग्रेड प्राप्त कर इतिहास रचा है। छात्रा अल्का ने सर्वाधिक 8.02 सीजीपीए प्राप्त कर महाविद्यालय में प्रथम स्थान, मानसी ने 7.94 सीजीपीए अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान और अपूर्वा कौशिक ने 7.91 सीजीपीए अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया है। इसके अतिरिक्त हर्षिता पाहवा, सुष्मिता, सिमरन आस्था, तानिया सचदेवा, नेहा वर्मा, श्रेया जैन, राशी चौहान, हेमन्त कुमार, राधिका अग्रवाल, परोमिता शर्मा, अंजली, मानसी उप्रेती, दिव्या अग्रवाल, आस्था गुलाटी, पारूल जैन, अंजली यादव, दीपांशु कुमार आदि 29 छात्र-छात्राओं के नाम 7 सीजीपीए से अधिक अंक प्राप्त कर प्रथम श्रेणी में जगह बनाई है। कॉलेज प्रबंध सचिव श्रीमहंत रविंद्र पुरी ने छात्रों की सफलता पर खुशी जताई है। संवाद

एसएमजेएन में मनाया राज्य स्थापना दिवस

हरिद्वार (एसएनबी)। एसएमजेएन कॉलेज में अपर कुंभ मेलाधिकारी हरवीर सिंह की अध्यक्षता में राज्य स्थापना दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि अपर मेलाधिकारी ने राज्य स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि राज्य आंदोलनकारियों के बलिदान और साहस के बिना उत्तराखंड राज्य के सपने को साकार होना संभव नहीं था। उन्होंने कहा कि इन 20 वर्षों में उत्तराखंड ने बहुत तीव्र गति से विकास किया है। उन्होंने कहा कि प्रगति के पथ पर अग्रसर, प्राकृतिक सम्पदा और नैसर्गिक सौंदर्य से भरपूर यह प्रदेश ऐसे ही विकास की नित नई ऊंचाइयों को छूता रहेगा। प्राचार्य डा. सुनील कुमार बत्रा ने कॉलेज में निर्मित शौर्य दीवार पर शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। इस मौके पर बत्रा ने कहा कि एक युवा की तरह उत्तराखंड अब अपने 21वें स्थापना दिवस पर उत्साह से भरपूर, नये विचारों से ओतप्रोत तथा नई चुनौतियों का सामना करने को तैयार राज्य में तब्दील होने को तैयार में है। मुख्य अधिष्ठाता छात्र कल्याण डा. संजय कुमार माहेश्वरी ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर कॉलेज के छात्रछात्राओं ने विभिन्न प्रस्तुतियां दी, जिसमें कुणाल भगत व आदित्य कपूर द्वारा सरस्वती वंदना व श्रीराम भजन 'मेरे मन में रामलल्ला में राम', पूर्व छात्रा वैष्णवी उपाध्याय नेगला जा मले, अनन्या भटनागर ने 'मानो तो मैं गंगा मां हूं' तथा कॉलेज के पूर्व छात्र मेहताब आलम ने 'पल पल दिल के पास तुम', 'मेरे देश की धरती' आदि गीतों से शहीदों को समर्पित कार्यक्रम प्रस्तुत किया। यह कार्यक्रम महाविद्यालय के छात्रछात्राओं के लिए यूट्यूब, फेसबुक, गूगल मीट जूम पर भी ऑनलाइन दिखाया गया। कार्यक्रम में डा. जगदीश चंद्र आर्य, विनय थपलियाल, डा. सुषमा नयाल, डा. रिचा मिनोचा, रिंकल गोयल, डा. पदमावती तनेजा, डा. लता शर्मा, विनित सक्सेना, अंकित अग्रवाल, नेहा सिद्दकी, नेहा गुप्ता, डा. पूर्णिमा सुंदरियाल, वेदप्रकाश चौहान, मोहन चंद्र पांडेय आदि उपस्थित थे।

आरती ने बीए अंतिम वर्ष में प्राप्त किए 95.6 फीसदी अंक

आरती गोस्वामी।

काजल उपाध्याय।

शुभांगी।

संवाद न्यूज एजेंसी

98 प्रतिशत रहा एसएमजेएन का बीए का परीक्षाफल

महाविद्यालय के प्राचार्य ने सफलता पाने वाले छात्रों को दी बधाई

हरिद्वार। एसएमजेएन महाविद्यालय की छात्रा आरती गोस्वामी ने एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय में बीए फाइनल सेमेस्टर में श्रेष्ठता सूची में 95.6 फीसदी अंक हासिल कर हरिद्वार का नाम रोशन किया है।

एसएमजेएन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा ने बताया कि गढ़वाल विश्वविद्यालय ने बीए फाइनल सेमेस्टर का परीक्षाफल घोषित कर दिया है। उन्होंने कहा कि कोरोना काल के बीच भी महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम 98 फीसदी रहा है। उन्होंने बताया कि हमारे महाविद्यालय के 197 छात्र-छात्राओं ने बीए फाइनल सेमेस्टर की परीक्षा दी थी। जिसमें से आरती गोस्वामी ने 95.6 सीजीपीए प्राप्त कर प्रथम स्थान, शुभांगी कंधेला ने 84.7 सीजीपीए प्राप्त कर दूसरा स्थान और काजल उपाध्याय 82.0 सीजीपीए प्राप्त कर तीसरा स्थान प्राप्त किया है। इसके अलावा मधु चौहान ने 75.9, नीलम ने 74.8, अजय शर्मा ने 74.7, अंजली 74.5 सीजीपीए प्राप्त कर परीक्षा में बेहतरीन प्रदर्शन किया है। कॉलेज प्रबंध सचिव और मनसा देवी मंदिर के अध्यक्ष श्रीमहंत रविंद्र पुरी ने छात्रों की सफलता पर खुशी जताई।

गांधी ने तोड़ा था नमक का काला कानून : बत्रा

हरिद्वार। एसएमजेएन पीजी कॉलेज में 'आजादी का अमृत महोत्सव' पखवाड़े के तहत हुई विचार गोष्ठी में प्राचार्य डॉ. सुनील कुमार बत्रा ने कहा कि महात्मा गांधी सहित 78 लोगों की ओर से अहमदाबाद साबरमती आश्रम से समुद्र तटीय गांव दांडी तक पैदल यात्रा की गई। उन्होंने कहा कि छह अप्रैल 1930 को नमक हाथ में लेकर नमक विरोधी कानून भंग किया गया था। साबरमती आश्रम से गांव दांडी तक की करीब 388 किलोमीटर लंबी दूरी की यात्रा की। इस आंदोलन ने संपूर्ण देश में अंग्रेजों के खिलाफ व्यापक जनसंघर्ष को जन्म दिया था उन्होंने काले नमक कानून को तोड़कर भारत वासियों को आत्मनिर्भर होने के साथ-साथ देश की आजादी का मार्ग प्रशस्त किया था। मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ. सरस्वती पाठक ने कहा कि दांडी मार्च में महिलाओं ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। इस मौके पर विनय थपलियाल, डॉ. संजय कुमार माहेश्वरी, रिंकल गोयल, पंकज यादव, डॉ. मन मोहन गुप्ता, मोहन चंद्र पांडेय, डॉ. विजय शर्मा, डॉ. पद्मावती तनेजा, डॉ. पूर्णिमा सुंदरियाल, विवेक मित्तल, दिव्यांश शर्मा, डॉ. रजनी सिंघल आदि मौजूद रहे।

अमृत महोत्सव कार्यक्रम में देश की आजादी की लड़ाई पर डाला प्रकाश

आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. छाया चतुर्वेदी ने कहा कि देश को आजाद करने में देशवासियों ने कुर्बानी दी है।

इसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। कई ने अपना जीवन ही बलिदान कर दिया। प्राध्यापक डॉ. आशुतोष शरण राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नमक सत्याग्रह के बारे में जानकारी दी। संचालन ... आरके वर्मा ने किया। उन्होंने बताया कि अमृत महोत्सव करीब चार सप्ताह तक चलेगा। इस दौरान छात्रों के बीच कई तरह की प्रतियोगिताएं कराई जाएंगी। चार अप्रैल को महोत्सव का समापन होगा।

...म लोग | अमर उजाला | रविवार • 24.01.2021

'आजादी के महानायक थे नेताजी'

Toppers - Our Pride 2019-2020

Mahima Rana
M.A. (Economics)

Vandana Rana
M.A. (English)

Dharam Devi
M.A. (Pol. Sci.)

Shubham
M.A. (Sociology)

Preeti
M.A. (Hindi)

Manshi Gupta
B.A.

Neha Rajput
B.Com.

Simran Kaur
M.Com.

Nikita Bishnoi
B.Sc. (PCM)

Vishakha Chaudhary
B.Sc. (CBZ)

Arpan Nautiyal
B.Sc. (CS)

Congratulations Selection

Nitigya Verma
Assist. Prof. Commerce

Sakshi Sharma
Assist. Development

Sristi Khanna
Assist. Prof. commerce

Dr. Amita Vihan
Assist. Prof. sociology

Dr. Rachna Tamta
Assist. Prof. Sociology

Dr. Nisha Pal
Assist. Prof. Sociology